॥८२१॥

॥ रामकथा ॥

मोरारिबापू

मानस-किन्नर

ठाणे (महाराष्ट्र)

देव दनुज किंनर नर श्रेनीं। सादर मज्जहिं सकल त्रिबेनीं।।
सुर किंनर नर नाग मुनीसा। जय जय जय कहि देहिं असीसा।।

॥राम॥राम॥राम॥राम॥राम॥राम॥राम॥

।। रामकथा ।।

मानस–किन्नर

मोरारिबापू

ठाणे (महाराष्ट्र)

दिनांक : १७-१२-२०१६ से २५-१२-२०१६

कथा-क्रमांक : ८०४

प्रकाशन :

दिसम्बर, २०१८

प्रकाशक

श्री चित्रकूटधाम ट्रस्ट,

तलगाजरडा (गुजरात)

www.chitrakutdhamtalgajarda.org

कोपीराईट

© श्री चित्रकूटधाम ट्रस्ट

संपादक

नीतिन वडगामा

nitin.vadgama@yahoo.com

रामकथा पुस्तक प्राप्ति सम्पर्क –सूत्र :

ramkathabook@gmail.com

+91 704 534 2969 (only sms)

ग्राफिक्स

स्वर एनिम्स

प्रेम–पियाला

मोरारिबापू को अपनी व्यासपीठ लेकर किन्नरसमाज के पास जाने का मनोरथ था और ये मनोरथ साकार हुआ ‘मानस–किन्नर’ रामकथा के गाने से। हां, बापू ने ठाणे (महाराष्ट्र) में ता. १७–१२–२०१६ से २५–१२–२०१६ दरमियान किन्नरसमाज को केन्द्र में रखते हुए रामकथा का गान किया। कथा के आरंभ में ही बापू ने कहा कि जो समाज की हमने उपेक्षा की, जिनको हमने अपमानित किया इसका प्रायश्चित्त करने के लिए ये नव दिन की कथा है।

बापू ने किन्नर का माहात्म्य इन शब्दों में किया, ‘‘किन्नर है गायक; किन्नर है आशीर्वाददायक। जो राम को आशीर्वाद दे सके इससे बढ़िया कौन? और आज भी आपके घर में कोई भी शुभ समाचार होता है तो ये समाज आ जाता है। ये भीख मांगने नहीं आये हैं। ये तुम्हारे घर में आशीर्वाद देने आए हैं। ये कुंभ जैसे पवित्र पर्व में सबके साथ, आदर के साथ स्नान करने के अधिकारी है। सिद्धों के साथ, तपोधनों के साथ, योगियों के साथ रहकर शिव की आराधना करनेवाले ये कैलास घरानेवाले हैं। ये समय–समय पर, शुभ अवसर पर बिना बुलाए आकर अपनी शुभ दुआयें देकर जीवन को खुशियों से भरनेवाला समाज है।’’

‘किन्नरसमाज गाता समाज है।’ ऐसे सूत्रपात के साथ बापू ने कहा कि स्वर, सूर, ताल, लय और राग का एक पंचांग है किन्नर। और इनके द्वारा वो पंचानन को प्रसन्न करते हैं। ‘किन्नरसमाज भक्तिमार्गी है।’ ऐसे निष्कर्ष के साथ बापू ने इस समाज में श्रवण, कीर्तन, स्मरण, पादसेवन, अर्चन, वंदन, दास्य, आत्मनिवेदन जैसी भागवती भक्ति एवम् ‘मानस’ में भगवान राम द्वारा शबरी समक्ष निर्दिष्ट नव प्रकार की भक्ति दिखती है, ऐसा अपना अवलोकन भी प्रस्तुत किया।

‘बापू, आप किन्नर पर क्यों बोलते हो?’ ऐसे प्रश्न के उत्तर में बापू का कहना हुआ कि मैं इसलिए बोल रहा हूं कि इनके बारे में मेरा बाप बोला है; मेरा दादा बोला है; दादाओं का दादाओं का दादाओं का दादाओं का दादा शंकरदादा बोला है; शिव बोला है। ये किन्नर पर मैं न कहता तो मेरी कथा की यात्रा थोड़ी अधूरी रह जाती। साथ ही बापू ने अपनी छोटी उम्र में तलगाजरडा में आते और राम के सामने नर्तन करते किन्नरों का स्मरण करते हुए कहा कि ये नव दिन में कोई उपकार करने नहीं आया हूं। आपने मेरे राम को रिझाया है; मेरे कृष्ण को रिझाया है तो तलगाजरडा का एक बावा का बच्चा, पूजारी के रूप में मैं इस समाज की दक्षिणा पेश करने आया हूं। बापू ने ऐसा निवेदन भी किया कि किन्नर समाज का पारिवारिक, सामाजिक, राजकीय और धार्मिक क्षेत्र में भी स्वीकार होना चाहिए।

‘रामचरित मानस’, तुलसी के अन्य ग्रंथों, ‘लिंगपुराण’ तथा अन्यत्र व्यक्त हुए किन्नर के संदर्भों के परिप्रेक्ष्य में बापू की व्यासपीठ ने यूं किन्नरसमाज का महिमागान किया।

– नीतिन वडगामा

मानस–किन्नर : १

किन्नर गायक है, किन्नर आशीर्वादक है

देव दनुज किंनर नर श्रेनीं। सादर मज्जहिं सकल त्रिबेनीं।।

सुर किंनर नर नाग मुनीसा। जय जय जय कहि देहिं असीसा।।

बाप! भगवत् कृपा से और अस्तित्व की अहेतु इच्छा से आज से यहां रामकथा का आरंभ हो रहा है। वैसे कहीं भी रामकथा गाने का अवसर मिले, मेरे लिए ये मेरा जीवन है। लेकिन फिर भी इस कथा की कुछ विशेष प्रसन्नता मेरी व्यासपीठ को है। और इससे भी ओर विशेष प्रसन्नता ये है कि हमारी वैदिक सनातन परम पावनी प्रवाही परंपरा को जन-जन तक अपनी करुणा से बहानेवाले हमारे अनंत श्री विभूषित परम परिव्राजकाचार्य जगद्‌गुरु भगवान शंकराचार्य स्वयं पधारे और आपने आचार्यपीठ से प्रसन्नता व्यक्त की। हम सब आपके चरणों में प्रणाम करते हैं। वैसे तो आपका स्नेहादर मुझे कायम मिलता रहा। आपका आशीर्वाद मेरी व्यासपीठ पर सालों से बरसता रहा। बार-बार ये अवसर मुझे मिलता रहा। लेकिन आज मुझे विशेष प्रसन्नता है कि भगवन्, आपने किन्नर समाज के निमंत्रण को कुबूल कर के मेरे देश की परम धर्मसत्ता अथवा तो ‘सत्ता’ शब्द थोड़ा रजोगुणी लगेगा, तो मैं एक ओर शब्द जोड़ना चाहूंगा कि मेरे देश का परम ‘सत्’ जो जगद्‌गुरु शंकर के रूप में हमें प्राप्त हुआ था और उसी परंपरा में आप पधारे।

मेरे मन में ये कैलासी मनोरथ था कि मैं एक बार मेरी व्यासपीठ लेकर मेरे किन्नर समाज के पास जाउं। जिस किन्नरों के बारे में मेरे गोस्वामीजी ने मैदान में डिम-डिम घोष करते हुए सोलह बार ‘रामचरित मानस’ में ‘किन्नर’ शब्द का प्रयोग किया। और गोस्वामीजी के अन्य संदर्भ ग्रंथों का यदि मैं आपको विवरण दूं तो ओर ‘किन्नर’ शब्द आपको मिलेंगे। कुल मिलाकर छब्बीस बार गोस्वामीजी ने किन्नर समाज को साधु हृदय से याद किया है। मैं तो गा लेता भगवत्कथा क्योंकि मैंने वचन दिया और आप जहां भी बैठते वहीं से आशीर्वाद देते लेकिन आप स्वयं पधारे ये बहुत बड़ी आपकी करुणा है। और किन्नर अखाडा के आचार्य महामंडलेश्वर पूजनीया लक्ष्मी नारायण त्रिपाठी, जिसको हम ‘लक्ष्मी’ कहते हैं, जो कुंभ के अवसर पर महामंडलेश्वर पद पर अभिषिक्त की गई और भगवान ने अपनी प्रसन्नता व्यक्त की। मैं आप सबकी ओर से आग्रह करूंगा लक्ष्मीजी को कि कल से आप जरूर कथा सुनने को वहां बैठे लेकिन आप हमारी महामंडलेश्वर हैं, इसलिए आप उपर आइए। और भगवानश्री ने स्वयं अपने वक्तव्य के समय खोजा कि लक्ष्मीजी कहां है? मैं कहूंगा लक्ष्मीजी आपको भी कि आपको निमंत्रण दिया है वहां बैठिए। मेरी व्यासपीठ चाहती है ऐसे नज़ारें। आपका स्वागत, महामंडलेश्वरजी।

जगद्‌गुरु परंपरा की पादुका तो भगवन् के साथ नित्य चलती है लेकिन ये नई पादुका, जिन्होंने लोगों ने ठोकरें लगाई थी, जिन्होंने तोड-चूरचूर करने की कोशिशें की थी! वो एक नई पादुका आज जगद्‌गुरु के चरणों में विराजमान है और नाम है लक्ष्मी। आज यहां बैठकर आपको देखकर मेरा पूरा समाज, मेरा पूरा राष्ट्र प्रसन्न है। आपके सभी साथी जिस-जिस पद पर हो, पद पर न हो ये सभी किन्नर समाज को व्यासपीठ से मेरा प्रणाम। और जगद्‌गुरु भगवान ने जो स्वीकार किया, इतनी प्रसन्नता से आप पधारे और इतने आदर के साथ आपने कहा कि मैंने ऐसी सभा कहीं नहीं देखी। महामंडलेश्वरजी, आपके और आपके समाज के लिए जगद्‌गुरु का प्रमाणपत्र नहीं है, प्रेमपत्र है। और सभी प्रमाणपत्र करीब-करीब दो कौड़ी के होते हैं! एक प्रेमपत्र शाश्वत होता है। ‘मानस’ का मंत्र तो स्वीकार का मंत्र है। और मेरे सद्‌गुरु भगवान की कृपा से, मेरे हनुमानजी की कृपा से, आपके आशीर्वाद से, समग्र जनता की शुभकामना से मुझे ऐसे कार्यों में निमित्त बनने का अवसर मिलता है। तलगाजरडा गदगद है! जो बीज कैलासी विचार से बोया गया था, आज भगवान के आशीर्वादक जल से अंकुरित हुआ है। मेरे तुलसीदासजी ओलरेडी लिख चुके हैं ‘मानस’ में कि जब प्रयाग में पूर्ण कुंभ का कल्पवास होता था तब किन-किन को स्नान का अधिकार है?

मेरी इच्छा थी कि इस समाज के सामने एक बार कथा गाउं। मैं महामंडलेश्वरजी को पहचानता नहीं था। ये बात कहीं से पहुंची। हम तलगाजरडा में गुरुपूर्णिमा मनाते नहीं हैं। मैं तो मेरे गुरु की पादुका की पूजा कर लेता हूं बाकी वहां

कोई उत्सव नहीं क्योंकि लोगों फिर मोरारिबापू को गुरु मानने लगते हैं! और मैं कोई गुरु नहीं, गुरु तो ये हैं। हम कोई गुरु नहीं। मज़बूरसाहब का शे'र सुनिएगा-

ना कोई गुरु, ना कोई चेला।

मेले में अकेला, अकेले में मेला।

और ये भी शांकरी परंपरा से विरुद्ध नहीं है। जगद्गुरु ने कभी कहा था, आदि जगद्गुरु ने, 'एकांते सुखमास्यताम्।' तो बाप! मैंने उसी समय लक्ष्मीजी को थोड़ा विवेक किया कि आप मत आइएगा क्योंकि यहां कोई उत्सव नहीं है, फिर मिलेंगे। लेकिन जो भी ये योग होगा ये होना था। वो आये और फिर वो जिस समाज से हैं, वो किसीकी मानें? पूरे संसार के किन्नर समाज को पता है कि लक्ष्मीजी की अगवानी में नव दिवसीय रामकथा किन्नर समाज को समर्पित होने जा रही है। और सबसे ज्यादा मुझे प्रसन्नता है इस बात की कि मेरी व्यासपीठ, मेरा राम सब जगह गया। विश्वामित्र चाहे तो एक शाप देकर मारीच, सुबाहु का निर्वाण कर देते और यज्ञ पूरा कर सकते थे लेकिन विश्वामित्र ने सोचा कि राघव केवल, केवल, केवल दशरथ के आंगन के अजिर विहारी ही बना रहेगा तो विश्व का मित्र कब बनेगा? उस राम को विश्व का मित्र बनाना चाहिए। इसलिए विश्वामित्र राम को बुलाने गए और राम और लखन को लेकर चल पड़े। अवतार बहाना खोजता है, परमतत्त्व बहाना खोजता है समग्र विश्व के कल्याण का। विश्वामित्र ले चले। आसुरी वृत्तिवाले का निर्वाण किया। राम ने सोचा, अवध से सिद्धाश्रम तक की मेरी पदयात्रा यदि इतना सुंदर परिणाम ला सकती है तो शिव संकल्प मन में हुआ होगा कि कोई ऐसा बहाना बने कि मैं चौदह साल पदयात्रा करूं और रास्ते में आये हुए सबका स्वीकार करूं।

विश्वामित्र से राम कहते हैं, प्रभु, ये किसका आश्रम है? ये पत्थर की तरह अचेतन बनकर कौन पड़ी है? और अहल्याओं का पुनरावतार होता ही गया, होता ही गया, होता ही गया। और आज तक लक्ष्मी तक पहुंचा अहल्याओं का पुनरावतार। राघव ने जिज्ञासा की, ये कौन है प्रभु? यहां अगल-बगल में कोई क्यों नहीं? भोग लोलुप समाज का एक इन्द्र शोषण कर के भाग गया! समाज ने क्या किया साहब! भगवन्, आशीर्वाद दीजिएगा। और आपके आशीर्वाद है। मुझे इस पूरी पृथ्वी प्रसन्नता से भर जाए तब तक जीना है। क्या गुनाह किया परमात्मा की इस परम सृष्टि ने जो मारी-मारी घूम रही है? कई लोग छूते नहीं ये समाज को! ठोकर, ठोकर, ठोकर! उद्धारक तो कई आये; सुधारक भी कई आये लेकिन स्वीकारक बहुत कम आये। उद्धार करना आसान है, सुधार करना भी चलो आसान है लेकिन गिरे हुए को थाम कर स्वीकार करना मुश्किल है। ये मेरे राम ने किया; ये मेरे राघव ने किया। और देखो भारत का ऋषि! क्या पक्ष लिया है मेरे देश के एक साधु ने? राम को कहा कि राघव, ये गौतम की नारी पापवश नहीं है। उसने कोई पाप नहीं किया है। कितना पक्ष लिया विश्वामित्र ने! खड़े हो गए अहल्या के पास। ये गौतम की नारी शापवश है, पापवश नहीं है।

तुलसी क्रांतिकारी है। तुलसी को इस रूप में तो देखो कि तुलसी का विश्वामित्र अहल्या के पास खड़ा हो गया है। मैं उसके पक्ष में हूं। आज मेरी रामकथा आपके पक्ष में है। ये पाठशाला नहीं है। ये धर्मशाला भी नहीं है। ये तलगाजरडी प्रयोगशाला है। इसमें कुछ रिझल्ट आए, कुछ परिणाम आए। समाज के सामने कुछ ठोस वस्तु निर्मित हो, इसमें मेरे आचार्यों का आशीर्वाद है। विश्वामित्र खड़े रह गए अहल्या के पक्ष में, 'आपसे ओर कुछ नहीं चाहती वो महाराज। हां, आपके चरणकमल की रज, रज का मतलब आपकी थोडी-सी कृपादृष्टि, रजमात्र करुणा चाहती है। उसको स्थापित करो समाज में।' इसीलिए तो राम आये हैं समाज में। राम चाहते तो अयोध्या के सुंदर रथ में स्पीड में चले जाते लेकिन पदयात्रा इसीलिए की कि समाज की कई अहल्यायें रास्ते में पड़ी है, उसका स्वीकार कौन करेगा? तपपुंज की तरह खड़ी हुई। जब खड़ी हुई अहल्या तब गोस्वामीजी कहते हैं, 'प्रगट भई तपपुंज सही।' और सब से बड़ा तप है समाज का अपमान सहन करना, समाज का तिरस्कार सहन करना। लक्ष्मी और आपके ये सभी समाज ने बहुत तप किया है समाज का अपमान सहन कर के। आज हमारा एक आचार्य आया है यहां जगद्गुरु, जो तप का फल मिलने का आज योग है। तो राम ने अहल्याओं का स्वीकार किया, स्थापित किया इस जनकपुर तक की छोटी-सी पदयात्रा में। राम को लगा कि चौदह साल पदयात्रा करूं। राघव गये केवटों के पास; सुधारने के लिए नहीं, स्वीकारने के लिए। हम सबको सुधार दे ये मुश्किल है। राम ने जो किया वो करना होगा। राम चौदह साल में केवटों के पास गए; कौल-किरातों के पास गए; बंदरों के पास गए; भालुओं के पास गए; पत्थरों के पास गए; पत्थरों के ज़रिये राम असुरों के पास गए लंका में। रावण ने निमंत्रण दिया था? खुद सेतु बनाकर गये। निमंत्रण नहीं था। स्वयं गये। ये है रामकथा का परम विचार। इस विचार को हम सबको अपने-अपने स्थान से, अपनी-अपनी क्षमता के द्वारा चरितार्थ करने का एक मंगल प्रयास है।

आप सब मेरे साथ जुड़े हैं इसकी मुझे बहुत खुशी है। ये कथा जब मैंने दी तो मैंने लक्ष्मीजी को कहा कि आप जरा भी चिंता मत करियेगा, कोई यजमान मिल जाएगा। मेरे पास तो कई आते हैं कि बापू, हमको कथा कहीं भी दो; हमें निमित्त बनाओ। और यहां के हमारे कुछ युवान भाई-बहन, मैं किन-किनका नाम लूं? प्रवीण और पूरी उसकी टुकड़ी। एक युवान तो इतना शिवसंकल्प लिए बैठा था लेकिन नियति कुछ ओर थी! उसको बीच में से ही जाना पड़ा! और प्रसन्नता से सब जुड़ गए। ये सब निमित्त बन गये और मुझे कहा गया कि किन्नर समाज की ये कथा, लक्ष्मी की ये कथा, बापू, कोई कमी नहीं होगी, बस आदेश करते जाओ। और मैंने कहा कि जहां-जहां से किन्नर समाज आए, उसको सम्मान के साथ बुलाओ। और साहब! आपके पास ठाणे में, घाटकोपर में, चेम्बुर में, जो-जो हो वहां आपके पास कोई खाली मकान हो तो सम्मान के साथ अतिथियों को उतारा दीजिए।

मुझे नौ दिन किन्नर समाज पर बोलना है। 'मानस' में जो किन्नर की गिनती है कि किस-किस रूप में गोस्वामीजी किन्नरों को आदर के साथ ला रहे हैं। किन्नर सबसे बड़े शिव की स्तुति के गायक हैं। आप लक्ष्मी, पृथ्वी पर तो जीनेवाले हैं ही लेकिन असल में आपका घराना कैलास है। 'सिद्ध तपोधन जोगी जन सुर किंनर मुनिबृंद।' कौन कैलास में रहता है? सिद्ध, तपोधन, जोगीजन, किन्नर, सुर, मुनिवृंद वहां कैलास में महादेव के अगल-बगल में हिमालय के निवासी आप लोग साधना करते हैं; गायन करते हैं; महादेव की कृपा प्राप्त करते हैं। आप जरा भी अपने मन को छोटा मत करिएगा। मैं कोई सराहना भी करना नहीं चाहता कि मैं बहुत इस समाज को बहका दूं! नहीं। जो हकीकत है; जो बातें हमने खोली नहीं किसी कारणवश! ग्रंथों में ये किन्नर समाज देवताओं का ही एक भाग है, देवजाति है, जिसको अंग्रेजीवाले सेमी गोड कहते हैं। लक्ष्मी, आप तो विदुषी है। आपके हाथ में आ जाए तो लक्ष्मी की किताब पढ़ लेना, 'मैं लक्ष्मी, मैं हिजडा।' किस भाषा में किन्नरों को क्या क्या कहते हैं वो चुनचुनकर संपादन किया है कि मराठी में क्या कहते हैं, गुजराती में क्या कहते हैं, हिंदी में क्या कहते हैं, उर्दू में क्या, अरबी में क्या? 'हिजर' शब्द है; आपने पकड़ा है; मूल है। हिजर माने एक समूह जो बिलग हो जाए अथवा तो कर दिया जाए। बहुत महिमावंत समाज है। और मेरे सभी भाई-बहन, कान खोलकर सुन लो साहब! शास्त्रकार कहते हैं कि किन्नर देवताओं का एक भाग है। शायद जो बड़े-बड़े देवता है उनसे थोड़े नीचे वो है लेकिन मनुष्य से कायम उंचे हैं। ये मैं नहीं कहता, मेरा धर्मजगत कहता है। जो समाज की हमने उपेक्षा की, अपमानित किया, इसका प्रायश्चित्त करने के लिए नौ दिन की कथा है। और लक्ष्मी, अमृत पीने से लोग दीर्घायु होते हैं, अमर नहीं होते। पुण्य क्षीण होते हैं तो देवता जो रोज अमृत पीते हैं वो भी मृत्युलोक में आते हैं। अमर तो जहर पीनेवाले ही होते हैं। जिसने जहर पीया है; महादेव ने पीया। और साहब! एक बार जहर पीने की आदत हो जाए तो जहर मार नहीं सकता। जैसे एक चाय पीते हैं आप तो चाय आपकी आदत बन जाती है वैसे समाज में जिसने जहर पीया है, जरा-जरा कटके-कटके जिसने पीया है उसको जहर मार नहीं सकता। इसलिए मीरां को जहर ने मारा नहीं। साहब! अमृत ने क्या किया? जिन लोगों ने पीया हैं देवताओं ने एक-दूसरे की ईर्ष्या की! अमृत का ये फल? जो अमृत निकला तब से झगडा शुरू हुआ। इससे तो बेहतर है जहर पी लो लक्ष्मी, जो अमर कर दे साहब!

ताळी पाडी मीरांबाई राणीए रे.

एनां झेर पीधां सारंगपाणिए रे.

ताळी पाडी नरसैया नागरे रे.

एनी हूंडी स्वीकारी कोरी कागळे रे...

किन्नर है गायक; किन्नर है आशीर्वाददायक। जो राम को आशीर्वाद दे सके इससे बढ़िया कौन? और आज भी आपके घर में कोई भी शुभ समाचार होता है तो ये समाज आ जाता है। ये भीख मांगने नहीं आये हैं। ये तुम्हारे घर में आशीर्वाद देने आए हैं। ये गायक है। ये आशीर्वाद दायक है। ये कुंभ जैसे पवित्र पर्व में सबके साथ, आदर के साथ स्नान करने के अधिकारी है। ये कैलास के अगल-बगल में निवास करते हैं। सिद्धों के साथ, तपोधनों के साथ, योगियों के साथ, सबके साथ रहकर शिव की आराधना करनेवाले ये कैलास घरानेवाले हैं। ये समय-समय पर, शुभ अवसर पर बिना बुलाए आकर अपनी शुभ दुआयें देकर जीवन को खुशियों से भरनेवाला समाज है।

तो अपमान, तिरस्कार, उपेक्षा उसका जिसने जहर पीया है! प्रायश्चित्त का ये समय है। किन्नर समाज, मेरे देश के ऋषिमुनि कहते हैं मनुष्य से ऊंचे हैं और लक्ष्मी और मेरे समाज के सभी, आपको मैं कहना चाहूंगा कि राम ब्रह्म है, ये राम की जब शादी हुई और जानकीजी ने मेरे ठाकुर के कंठ में जयमाला पहनाई तब आशीर्वाद किसने दिये? किन्नरों ने आशीर्वाद राम को दिये।

सुर किंनर नर नाग मुनीसा।

जय जय जय कहि देहिं असीसा।।

राम, खूब जीयो। किन्नरों के आशीर्वाद राम पर। ये मैं नहीं कहता, 'मानस' कहता है। मैं स्वीकार करनेवाला बावा हूं। मेरा कोई मिशन सुधारने का नहीं है। सुधारनेवाले कई आये, विफल हुए हैं! कभी-कभी तो सुधारक के परिवारजन ही नहीं सुधरे! सुधारना बंद करो, जैसे हैं वैसे स्वीकारना शुरू करो। आज इक्कीसवीं सदी का यही संदेश होना चाहिए।

मूल में तो किन्नर समाज है। परम गायक समाज। ये अप्सराएं नृत्य करती है। गायन किन्नर करते हैं। वादन गंधर्व करते हैं; गाते भी हैं। जैसे ये बच्चें अपना-अपना वाद्य बजाते हैं फिर साथ में गाते भी हैं, वैसे गंधर्व वादन करते हैं लेकिन गाते भी हैं। किन्नर गायन करते हैं। किन्नर है गायक; किन्नर है आशीर्वाददायक। जो राम को आशीर्वाद दे सके इससे बढ़िया कौन? और आज भी आपके घर में कोई भी शुभ समाचार होता है तो ये समाज आ जाता है। नया फ्लेट लिया? बेटा का जनम हुआ? लाओ! और देना पड़ता है! ये भीख मांगने नहीं आये हैं। सब अपना नसीब लेकर आये हैं। कोई भीख नहीं दे रहे हैं आप। खबरदार ऐसा सोचा तो! ये तुम्हारे घर में आशीर्वाद देने आये हैं। जो राम को आशीर्वाद दे सके वो आम को आशीर्वाद न दे सके क्या? शास्त्र कहता है, आशीर्वाद दायक है। और कुंभ का स्नान का ओलरेडी अधिकार आपको 'मानस' ने दिया है। आदि-अनादि काल से इस समाज को कुंभ के परम पावन पर्व में स्नान करने का अधिकार ओलरेडी 'मानस' में दिया है। और ये बहुत बड़ी बात है, प्रसन्नता की बात है, बधाई देने योग्य बात है कि कई अखाडों में माताएं भी महामंडलेश्वर होती है, लेकिन इस समाज की एक लक्ष्मी नारायण त्रिपाठी को महामंडलेश्वरपद मिला इसमें आपके लिए कोई महत्त्व की बात नहीं। समाज अपना प्रायश्चित्त कर रहा है और समाज को करना चाहिए। भगवान राम परमात्मा है, ब्रह्म है, ईश्वर है, भगवान है, वो मनुष्य बन सकता है तो मनुष्य भगवान क्यों नहीं बन सकता? और मनुष्य जो भगवान बन सकता है तो मनुष्य के दर्जे से जो किन्नर समाज का दर्जा ऊंचा है वो भगवान क्यों ना बने? हमें भगवान बनने की जरूरत नहीं। मेरे भाई-बहन, भगवान जैसा कोई भजनानंदी मिले ना, भगवान बनने की जरूरत नहीं, उनके पास बैठने का चंद लम्हा मिल जाए तो भी बेडा पार है साहब! तो मेरे भाई-बहन, ये गायक है। ये आशीर्वाद दायक है। ये कुंभ जैसे पवित्र पर्व में सबके साथ, आदर के साथ स्नान करने के अधिकारी है। ये कैलास के अगल-बगल में निवास करते हैं। सिद्धों के साथ, तपोधनों के साथ, योगियों के साथ, सबके साथ रहकर शिव की आराधना करनेवाले ये कैलास घरानेवाले हैं। ये समय-समय पर, शुभ अवसर पर बिना बुलाए आकर अपनी शुभ दुआयें देकर जीवन को खुशियों से भरनेवाला समाज है। इतनी उपेक्षा क्यों?

तो ये युवानों ने, ये बच्चों ने, सब ने जो 'मानस' को, व्यासपीठ को समर्पित, उसने ये सब बीड़ा उठा लिया। मैंने कहा था विदेश से भी किन्नर समाज आए। लक्ष्मीजी को कहना, कहीं से भी बुलाओ। स्विट्झरलेन्ड के किन्नरों को तो देखें कि कैसे हैं? अमरिकन को देखें। और जो-जो शायद आएं। लेकिन पूरी कथा आपकी है। आप ज्यादा संख्या होंगे तो मैं इन लोगों को हटा दूंगा कि आप पीछे जाओ, इसको बैठने दो। मेरे सामने वो रहे आज। तो ये आशीर्वाद देनेवाले हैं। ये गायक है। ये स्नान के अधिकारी है। ये मंगल प्रसंग पर आ करके शुभकामना देनेवाले हैं। ये जो मैं सब बातें कर रहा हूं साधार, शास्त्रीय बातें है। मेरे जेब की कोई बात नहीं है। और तुलसी ने सोलह बार 'किन्नर' शब्द का प्रयोग करके इस समाज को स्थापित किया है, उसको आदर दिया है। हम सब भाग्यवान है कि भगवान के आशीर्वचन की छाया में आज हम सब भी इस समाज का सम्मान करने के लिए, उसको आदर देने के लिए, उसको वंदन करने के लिए और गए समय में जो-जो भूल की है उसके प्रायश्चित्त करने के लिए रामकथा की गंगा के तट पर बैठे हैं। अभी इससे भी आगे जो तिरस्कृत समाज में हुआ है ऐसे समाज के लिए एक ओर कथा मुझे गानी है, जिसका जिक्र तुलसी ने किया है-

पाई न केहिं गति पतित पावन राम भजि सुनु सठ मना।

गनिका अजामिल ब्याध गीध गजादि खल तारे घना।।

तो बाप! मुझे बड़ी प्रसन्नता है। आचार्य महामंडलेश्वर लक्ष्मी नारायण त्रिपाठीजी और आपका समाज इस कथा के प्रथम यजमान है। मेरी व्यासपीठ को समर्पित है ये सब युवान जो केवल आपकी सेवा में लगे हुए हैं, वो आपकी सेवा करे। मैंने पहले ही कहा कि कथा गाना ही मेरा जीवन है लेकिन जीवन के कुछ मोड ऐसे हैं, जहां आदमी को विशेष प्रसन्नता होती है। ये एक विशेष प्रसन्नतावाली मेरी कथा है। और पूरे भारतवर्ष के और सभी जगह से किन्नर समाज को मैं भी निमंत्रित करता हूं कि आपकी कथा हैं। आपका सम्मान होगा। इस बहाने हम आपको वंदन करेंगे क्योंकि आप आशीर्वादक समाज है। मनुष्य से ऊंचे हैं आप। ये समाज भी ना भूले और आप भी अपने मन को छोटा ना करे, आप मनुष्य से ऊंचे हैं।

तो इस कथा की ये भूमिका है। 'मानस-किन्नर' इस कथा का नाम है। नौ दिवसीय रामकथा का नाम होगा 'मानस-किन्नर।' उसका दर्शन, उसका अवलोकन, उसके बारे में विचार हम करेंगे 'मानस' के प्रसंगों को गाते-गाते क्योंकि मूल में तो रामकथा है। और इसमें बीच-बीच में ये विषय को ले करके हम नौ दिवस भगवत चरित्र का गायन करेंगे। रामकथा के बारे में तो सब अवगत है। आप जानते हैं, आदि कवि वाल्मीकि उसके मूल रचयिता हैं। वाल्मीकि तो आदि कवि है अवश्य लेकिन भगवान शिव ने 'रामचरित मानस' की रचना की। और मैं पुण्य स्मरण करूं पंडित रामकिंकरजी महाराज का कि आपने कभी कहा था कि वाल्मीकि आदि कवि है लेकिन महादेव अनादि कवि है, जिसने 'मानस' की रचना की। यद्यपि वाल्मीकिजी ने कांड कहा है-'बालकांड', 'अयोध्याकांड।' तुलसी ने सोपान कहा। वाल्मीकिवाली बात इतनी अभ्यस्त हो गई हमको इसलिए हम कहते हैं, प्रथम सोपान 'बालकांड' लेकिन तुलसी ने तो केवल सोपान ही कहा। इसमें सात सोपान है जो रघुबीर की भक्ति की सीढ़ी है। तो बाल, अवध, अरण्य, किष्किंधा, सुंदर, लंका, उत्तर ये सात सोपान में इस महान सद्ग्रंथ को रचा। गोस्वामीजी ने 'रामचरित मानस' के 'बालकांड' में सात मंत्रों में मंगलाचरण किया। संस्कृत के मंत्र है ये सब। हमारी माँ है संस्कृत उसको दिव्य आदर देते हुए तुलसी ने सात मंत्र लिखे मंगलाचरण में! एक-दो मंत्र-

वर्णानामर्थसंघानां रसानां छन्दसामपि।

मङ्गलानां च कर्त्तारौ वन्दे वाणीविनायकौ।।

भवानीशंङ्करौ वन्दे श्रद्धाविश्वासरूपिणौ ।

याभ्यां विना न पश्यंति सिद्धा: स्वान्त:स्थमीश्वरम् ।।

सात मंत्रों में मंगलाचरण है। फिर गोस्वामीजी लोकबोली में उतर आए। आखिरी व्यक्ति तक इस परम सद्ग्रंथ को पहुंचाना चाहते थे। श्लोक को लोक तक पहुंचाना चाहते थे। तुलसी ने कहा, मैं ऐसा ग्रंथ भाषाबद्ध करूं कि जन-जन तक ये बात पहुंचे। इसलिए पांच सोरठें बिलकुल ग्राम्यगिरा में तुलसी ने उतारे। और मैं हर वक्त कहता हूं कि गोस्वामीजी का सेतुबंध देखिए, गोस्वामीजी की जोड़ने की मानसिकता देखिए। वो तो रामानंदी परंपरा में आये हैं। उसका सिद्धांत भी भिन्न है लेकिन पांच सोरठें लिखकर तुलसी ने जगद्गुरु आदि शंकराचार्य भगवान ने पंचदेव की उपासना के जो आदेश हम सनातन धर्मावलंबियों को किया वो पहले स्थापना की। यही था सेतुबंध। पांच सोरठें में शांकर मत को, शांकर विचार को तुलसी ने स्थापित किया। तुलसी ने शांकर मत का स्थापन करके हमें जोड़ने का स्तुत्य उपकारक प्रयास किया। जगद्गुरु आचार्य शंकराचार्य के सिद्धांत गणेशपूजा, गौरीपूजा, शिवपूजा, सूर्यपूजा और विष्णुपूजा ये हमारे सनातन धर्म की परंपरा है। गणेशपूजा हम करते हैं। दुर्गापूजा पूरे देश में नवरात्रि में होती है। सावन मास में भगवान का रुद्राभिषेक हम सब करते हैं, होता है। सूर्य का नमस्कार भी हम करते हैं। पुरुषसूक्त का पाठ कर के विष्णु-नारायण की पूजाएं होती है। लेकिन प्रेक्टिकल होना चाहिए।

आज के युवानों को ये संदेश कैसे दिया जाए? आज का युवान जिसको पढ़ना है, अच्छा काम करना है राष्ट्र के और विश्व के गौरव को बढ़ाने के लिए; उसे बहुत शिक्षा-दीक्षा लेनी है, कमाना है सत्कर्म में लगाने के लिए; उसको मैं ये नहीं कह सकता कि तीन घंटे गणेश की पूजा करो। यदि आप करो तो मैं प्रणाम करूं लेकिन गणेश की पूजा का मतलब है, गणेश विवेक का देवता है; युवान भाई-बहन, रामकथा सुनकर अपने विवेक को बरकरार रखो वो गणेशपूजा है। क्योंकि कथा से विवेक आएगा। मेरे देश के युवानों को, मेरी व्यासपीठ के पास आए युवानों को मैं यहीं कहूं, खूब पढ़ो-लिखो। मैं ये न कहूं कि तुम चार घंटे पूजा करो। ना हो तो कोई चिंता नहीं लेकिन विवेक मत चुको, वो गणेशपूजा है। सूर्यपूजा; सूर्य नमस्कार करो, योगा करो, एक्सरसाईझ के लिए भी अच्छा है लेकिन यदि न कर सको तो सूर्यपूजा का अर्थ ये भी हम कर सकते हैं कि जहां तक संभव हो, उजाले में जीने का संकल्प ये सूर्यपूजा है। गौरीपूजा; गौरी-भवानी माने श्रद्धा। अंधश्रद्धा भी नहीं, अश्रद्धा भी नहीं; मौलिक श्रद्धा, गुणातीत श्रद्धा। हमारी श्रद्धा टीकी रहे, बनी रहे ये गौरीपूजा है। और शिवपूजा, शिवअभिषेक; शिव का अर्थ है कल्याण। दूसरों के कल्याण करने की मंगल भावना ये है रुद्राभिषेक। रुद्राभिषेक तो करना ही है; कर सको तो आप प्रणम्य हो लेकिन यदि समय नहीं तो दूसरों का शुभ हो, कल्याण हो ऐसा सोचना

नित्य रुद्राभिषेक है। और विष्णुपूजा; व्यापक दृष्टिकोण, संकीर्ण दृष्टिकोण नहीं। हम संकीर्ण न बने। हम उदारमना थे, हम रहे, हमें रहना चाहिए। ये है विष्णुपूजा।

गुरुवंदना से रामकथा का आरंभ होता है। पहला प्रकरण 'रामचरित मानस' का गुरुवंदना है। पांचों देव की पूजा करे सूत्र के रूप में, स्थूल रूप में श्रद्धा से लेकिन यदि कोई बुद्धपुरुष, कोई सद्गुरु भगवान की शरण में हम चले जाए तो गुरु गणेश भी है; गुरु गौरी भी है; गुरु सूर्य भी है; गुरु विष्णु भी है; गुरु महादेव भी है। गुरु की महिमा है। युवान भाई-बहन, बुद्ध आदि ने कहा कि गुरु की कोई जरूरत नहीं। ये सबके अपने-अपने विचार है। ठीक है, इनके लिए न जरूरत रही हो। कई विचारक ऐसे आये, हमारे यहां दार्शनिक ऐसे आये जो कहते हैं, गुरु की जरूरत नहीं। इतना ही नहीं, गुरु को कभी-कभी गालियां भी दे दी इन लोगों ने कि ये तो वाया लोग हैं! इसके थ्रू हम क्यों जाए? हम डायरेकट जाए। जो सीधे जाए उसको मेरा प्रणाम। हम विवाद के आदमी नहीं। मेरा शास्त्र संवाद का शास्त्र है। लेकिन युवान भाई-बहन, व्यक्तिगत रूप में मोरारिबापू का अभिप्राय यदि जानना चाहो तो मेरे जैसों को गुरु की नितांत जरूरत है। हम जैसों के लिए कोई चाहिए कि जिसके चरणों में सिर रखकर हम रो सके; जिसके दर पर जाकर हम अपना दिल खोल सके। हमें तो गुरु की जरूरत है। ये गुरुकृपा नहीं तो मेरे पास क्या है साहब! मै बिना रामकथा, बिना गुरुकृपा ठाणे आता तो कोई बुलाते भी नहीं साहब! ये केवल गुरुकृपा है। युवान भाई-बहन, मैं कोई दबाव नहीं डालता। मैं आपको निजता में रखना चाहता हूं। आप स्वतंत्र हैं लेकिन स्वतंत्रता स्वच्छंदता में परिवर्तित न हो जाए इसलिए कोई कवच चाहिए जो हमारी सुरक्षा में रहे। तो गुरुमहिमा तुलसी ने गाई है। कुछ पंक्तियां गुरुमहिमा की हम गा लें और आज की कथा को विराम की ओर ले जाए-

बंदउँ गुरु पद पदुम परागा।
सुरुचि सुबास सरस अनुरागा।।

गुरु चरणकमल पराग की वंदना की। गोस्वामीजी ने गुरुचरणरज से अपनी दृष्टि को पवित्र की। पूरा जगत वंदनीय दिखा। देवताओं की वंदना,किन्नरों की वंदना, यक्षों की वंदना, गंधर्वो की वंदना, सबकी बंदना करते तुलसी की प्रसिद्ध चौपाई-

सीय राममय सब जग जानी।
करउँ प्रनाम जोरि जुग पानी।।

सीताराममय समग्र जगत है; सीताराम समझकर मैं उसको प्रणाम करता हूं। फिर सबकी वंदना करते-करते राजपरिवार की वंदना की। कौशल्यादि माताओं की, फिर अवधपति की, जनकजी की, भरतजी की, लक्ष्मणजी की, शत्रुघ्नजी की वंदना करते हुए, एक नितांत वंदना, एक नितांत आवश्यक वंदना तुलसीजी ने बीच में ली और वो वंदना है हनुमानजी की वंदना। महावीर हनुमानजी की वंदना गोस्वामीजीने की। आप किसी भी संप्रदाय के हो, मुबारक। किसी देव-देवियों के उपासक हो, आपको नमन। लेकिन श्री हनुमानजी का आश्रय करोगे तो अपने-अपने इष्ट के प्रति हमारी गति में पवनपुत्र पीछे से धक्का देगा और हमारी गति द्रुतगति हो जाएगी। हनुमानजी बिनसांप्रदायिक हैं। वो सतजुग में शंकर रूप में था। त्रेता में बंदर रूप में है। द्वापर में अर्जुन की धजा में बैठा है। और कलियुग में जहां भी रामकथा होती है वहां किसी ना किसी रूप में बैठा हैं। इसलिए 'हनुमान चालीसा' में लिखा है, 'चारों जुग परताप तुम्हारा।' चारों वर्ण में, चारों युग में; कहां नही है हनुमानजी? अंत:करण चतुष्टय में हनुमानजी है; धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष में हनुमानजी हैं। प्राणतत्त्व है हनुमानजी। उसका आश्रय करना। कोई भी कर सकते हैं, भाई-बहन हां। हनुमानजी सबके हैं। हनुमान श्वास है, विश्वास है, शंकर है, वानराकार विग्रह है ये। तो हनुमंततत्त्व प्राणतत्त्व है। तो मैं युवान भाई-बहनों को कहूं, जो साधना करते हो, आपके गुरु ने दिखाए वो करिए जरूर, लेकिन हनुमंततत्त्व का खूब आश्रय करो। बहन लोग 'रामचरित मानस' का पाठ कर सकते हैं। बहन लोग 'हनुमानचालीसा' कर सकते हैं। बहन लोग 'सुंदरकांड' का पाठ कर सकते हैं। 'हनुमानचालीसा' सिद्ध भी हैं और शुद्ध भी हैं। मैं तो वहां तक कहता हूं, पूरे 'रामचरित मानस' का भाष्य 'सुंदरकांड' है। 'सुंदरकांड' का भाष्य 'हनुमानचालीसा' है। और हनुमानचालीसा'का भाष्य केवल रामनाम हैं।

तो युवान भाई-बहन, हनुमानजी का आश्रय करना। तो हनुमानजी की वंदना गोस्वामीजी ने की। और ये 'विनय पत्रिका' का एक बहुत प्रसिद्ध पद है, उसकी एक-दो पंक्ति गाकर आज की कथा को विराम दें हनुमानजी की वंदना के साथ। सब गाइयेगा-

मंगल मूरति मारुति नंदन।
सकल अमंगल मूल निकंदन।।
पवन तनय संतन हितकारी।
हृदय बिराजत अवध बिहारी।।

किन्नर समाज गाता समाज है

हम सबका सद्भाग्य है कि फिर एक बार आज भी भगवान जगद्गुरु शंकराचार्य प्रभु का दर्शन भी हुआ, शुभ आशीर्वाद भी प्राप्त हुआ और किन्नर समाज को हृदय का सहयोग भी भगवान ने समर्पित किया। अच्छा सगुन है। आइए, 'मानस-किन्नर', जो इस कथा का केन्द्रबिंदु है उसकी कुछ सात्त्विक-तात्त्विक चर्चा संवाद के रूप में की जाए। क्योंकि 'रामचरित मानस' संवाद का शास्त्र है। और बहुधा हमारे सभी सद्ग्रंथ संवाद के रूप में ही तो हैं। 'भगवद्गीता' में जाएं तो कृष्णार्जुन संवाद। उधर 'श्रीमद्भागवतजी' में जाए तो भी संवाद। 'रामचरित मानस' के तो चार संवाद प्रसिद्ध है; शिव-पार्वती, याज्ञवल्क्य-भरद्वाज, बाबा भुशुंडि-खगपति गरुड, तुलसी-संतगण और तुलसी का अपना स्वयं मन, जिसके साथ ये संवाद के चार घाट निर्मित किए गए हैं। तो संवाद के रूप में हम अपने आंतरिक विकास और विश्राम के लिए कुछ ओर संवाद करें। कल हम 'रामचरित मानस' के वंदना प्रकरण की कुछ संक्षिप्त चर्चा कर रहे थे। गुरुवंदना से लेकर श्री हनुमानजी की वंदना का थोड़ा संवाद रचा गया। तो इसी वंदना प्रकरण में तुलसीदासजी जो वंदना करते हैं सबकी उसमें-

देव दनुज नर नाग खग प्रेत पितर गंधर्ब।
बंदउँ किंनर रजनिचर कृपा करहु अब सर्ब।

लक्ष्मीजी, गोस्वामीजी कहते हैं, मैं इन दसों को वंदन कर रहा हूं। गोस्वामीजी से किसी ने पूछा, आप इतने बड़े संत, आपको राम का साक्षात्कार हो चुका है। आप राममय हैं; श्रद्धाजगत के आप स्वयं राम भी है और आप इन दसों की वंदना करते हैं, तो वंदना करने के बाद आप चाहते क्या है? तो गोस्वामीजी कहते हैं, मुझे 'रामचरित मानस' की रचना करनी है, इनमें मैं इन दसों की कृपा चाहता हूं। आप महामंडलेश्वरजी और पूरा समाज गौरव ले सकते हैं। संसार में किसी भी प्रतिष्ठा, किसी की योग्यता का गर्व लेना ठीक नहीं लेकिन गौरव जरूर लेना चाहिए। आपका समाज गौरव ले सकता है कि चार सौ-पांच सौ साल गोस्वामीजी को हुए। इतने साल पहले गोस्वामीजी इन दसों की जो वंदना करते हैं, उसमें किन्नरों की वंदना करते हैं। और ये वंदना भी इसीलिए कि मैं जो 'रामचरित मानस' की रचना करने जा रहा हूं, संपादन करने जा रहा हूं, आप मुझ पर कृपा करो।

तो देवताओं की वंदना करने से कौन-सी कृपा होती है? देवताओं की वंदना करने से सब से पहली बात तो है ऐश्वर्य की प्राप्ति होती है। कोई बुरी बात नहीं है ऐश्वर्य। ऐश्वर्य की प्राप्ति के बाद यदि अहंकार आया तो बुरी बात है। ऐश्वर्य के कई विभाग हो सकते हैं। किस प्रकार का किसको ऐश्वर्य चाहिए वो सबकी स्वतंत्रता है। आप अपने मन से निर्णय करिएगा। मुझे यदि पूछा जाए कि बापू, आप पूजा करते हैं देव की-महादेव की; और महादेव जैसा कोई देव नहीं, ये पहले आप ध्यान देना। दूसरे देव छोटे हैं ऐसा मेरा कहने का नहीं लेकिन महादेव महादेव है। लक्ष्मीजी को उज्जैन के कुंभ में महामंडलेश्वर पद पर अभिषिक्त किया गया इसीलिए महाकाल की कृपा समझिए। ये महादेव की कृपा है। मुझे यदि कोई ऐश्वर्य चाहिए तो मैं कहूं, हे महादेव, ऐसा ऐश्वर्य दे कि अहर्निश रामनाम जपूं। इससे ज्यादा कोई ऐश्वर्य नहीं चाहिए। प्रभुनाम, भगवत कथा, परमात्मा की कथा श्रवण करने को मिले, हरिनाम लेने का अवसर प्राप्त हो, साधु का संग बार-बार मिले, इससे बढ़िया जगत में कौन-सा ऐश्वर्य हो सकता है? तो देववंदना से ऐश्वर्य की प्राप्ति होती है। दनुज; दनुज माने राक्षस; उनकी आप वंदना करे तो वो कौन-सी कृपा करे? दनुज भी कोई कृपा करेगा क्या? हां, बुरे लोग भी बुरा कर्म करते-करते बुराई का जो फल प्राप्त करते हैं उसको देखकर हमें प्रेरणा मिलती है कि बुरा नहीं करना चाहिए। ये दनुज लोगों की कृपा है कि हमें इससे प्रेरणा मिलती है कि ऐसा किया तो ये फल मिला। दनुजों ने हिंसा की, द्वेष किया तो इसका परिणाम ये हुआ। उसमें से भी सीख लें। वंदन करना मानी उससे भी कुछ सीख लें।

नर; मनुष्य। मनुष्य बहुत बड़ी कृपा कर सकता है साहब! और ये (किन्नर) तो विशेष मनुष्य है। मनुष्य से ऊंचे, ये तो भूलना ही मत। मुंबई, महाराष्ट्र, पूरा देश, पूरा विश्व ये ना भूले कि ये (किन्नर) समाज हमारे से ऊंचा है। ये पक्का है।

ये बिलकुल पक्का है। ये बिलकुल पक्का है। नर किस प्रकार से कृपा कर सकते हैं? उसकी कृपा किस रूप में हमें प्राप्त हो सकती है? नर को वंदन करने से मानव को मानवता की कृपा होती है। एक मानव को वंदन करने से मानवता की भिक्षा प्राप्त होती है। यहां मानव के अगल-बगल में कोई विशेषण नहीं है, अच्छा मानव, बुरा मानव, भला मानुष; ये कोई वस्तु नहीं। मनुष्य की बड़ी महिमा है। परमात्मा को भी अवतार लेना होता है तो कई रूप में आता है लेकिन मनुष्य के रूप में एक विशिष्टता है। मेरी समझ में नर को वंदन करने से आदमी में मानवता के अंकुर विशेष रूप में अंकुरित होते हैं। नाग; नाग भी एक देव है। नाग की वंदना करें। कई लोग नाग की बहुत उपासना करते हैं। नाग की कृपा मणि के रूप में होती है। सर्प के मुख में जहर जहां रहता है उसके उपर मणि रहता है। लेकिन ये मणि जो है, ये नाग का जो विष है उसको ग्रहण नहीं करता। उल्टा जिसको भी विष चढ़ा हो तो ये मणि को छुआने से उसका विष उतर जाता है। नाग की कृपा हो जाए, नागदेवता की कृपा हो जाए तो हमारे जीवन में ऐसी मणि कृपा हो जाए कि हम विषाक्त समाज के बीच रहे तो भी उसका विष या विकार हमको छुए ना। उल्टा हमारे पास जो आ जाए उसके विकार भी मात्रा में कम होने लगे। ये है नागमणि की कृपा। और 'मानस' में तो मणि को भक्तिमणि कह दिया है। भक्ति को मणि कहा। तो मेरे भाई-बहन, नाग देवता की उपासना से भक्तिमणि की प्राप्ति हो जाती है; भक्तिमणि की कृपा हो जाती है।

तो देव, दनुज, नर, नाग, खग; पक्षी अद्भुत है! ये देश अद्भुत है साहब! विचारों और वर्तनों में इतनी ऊंचाई दुनिया में किसी ने नहीं सिद्ध की। यहां पक्षी को भी संतों ने वंदन किया है। खग माने पक्षी। 'ख' का अर्थ होता है आकाश, 'ग' का अर्थ होता है उसमें गमन करनेवाला; जिसको खग कहते हैं, पक्षी। और पक्षी की वंदना यहां की गई और पक्षी से कौन-सी कृपा चाहिए? हम पक्षीपूजक है। नारायण के संग हम गरुड की भी पूजा करते हैं। हर श्राद्ध पक्ष में कौए की पूजा करते हैं। पूजा मीन्स उसको श्राद्ध समर्पित करते हैं कौए को; उसकी पूजा करते हैं। भगवान कृष्ण तो मयूर के पंख को अपने सिर पर धारण करते हैं। विश्वामित्रजी वाल्मीकि को पक्षी की तुलना में ले जाते हैं, 'वंदे वाल्मीकि कोकिलम्।' आप वाल्मीक नहीं, आप तो कोकिल हैं, ऐसा उसे कहते हैं। कागभुशुंडि पक्षी है, बुद्धपुरुष है। पक्षी से कौन-सी कृपा प्राप्त हो? मुझे तो एक ही रूप में पक्षी की कृपा समझ में आती है कि जिसको पंख है, नील गगन में इतना उड़ान भर सकते हैं, फिर भी उसको कोई अहंकार नहीं है। मेरे भाई-बहन, किसी भी क्षेत्र में

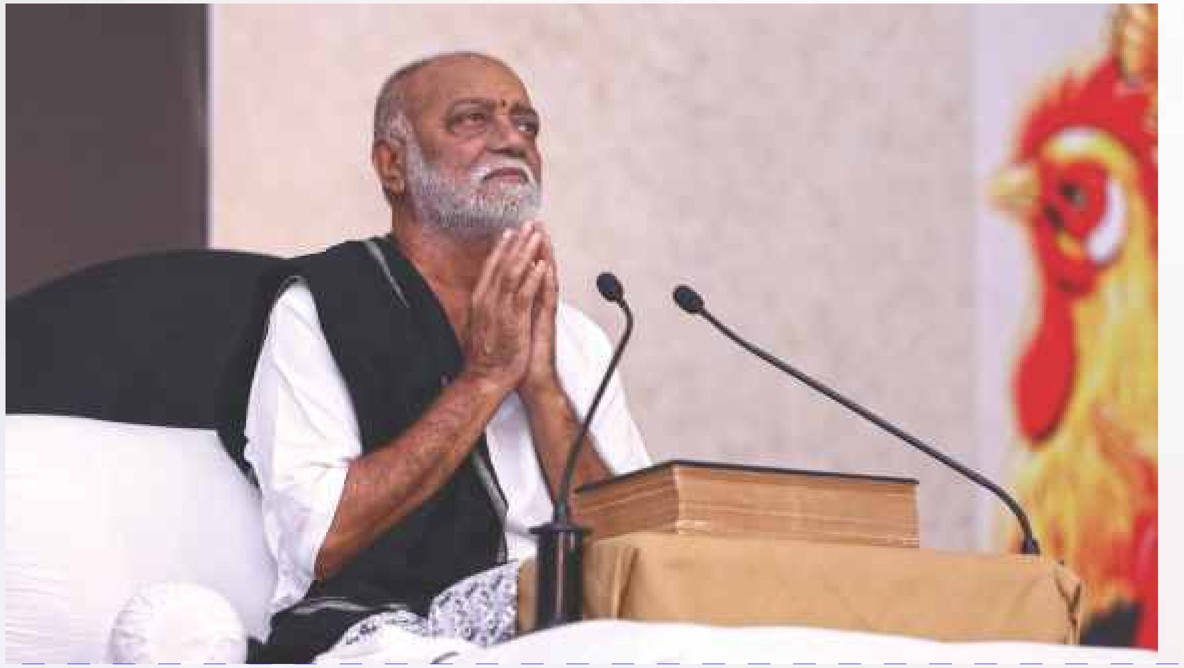

परमात्मा की कृपा से, सद्गुरु की कृपा से, अपने पवित्र पुरुषार्थ से यदि पंख लग जाए तो भी कभी अहंकार न करना, ये पक्षी हमको सीखा रहे हैं। और पक्षी का एक सद्गुण बहुत प्यारा है। पूरा दिन घूमता है, शाम को अपने आशियाने में लौट आता है। शाम हुई ही अपने घर में लौट आता है। और आकाश में पक्षी अब तो दिखते हैं कभी-कभी लडते हैं! ये कलियुग के पक्षी हैं! बाकी पक्षी समझते हैं, इतना आकाश है हम क्यों एक-दूसरे से स्पर्धा करें? क्यों टकराएं? क्यों लड़ें? ये पक्षी हमें यही बोध देता है। तो खग की वंदना कर के गोस्वामीजी इस कृपा की याचना चाह रहे हैं।

प्रेत; प्रेत, भूत, पिशाच ये सब हमनें देखा नहीं है लेकिन शास्त्रों में लिखा है तो प्रेत होगा। भूत हमनें देखा नहीं, आप में से किसी ने देखा है तो खबर नहीं! भूत को मैं भूतकाल कहता हूं। जो अतीत में ही, चिंता में डूबा है, उसको भूत लागू हुआ है! यही भूत है। और प्रेत है भविष्य का विज़न। प्रेत की वंदना इसीलिए गोस्वामीजी करते हैं कि मुझे 'रामचरित मानस' की रचना करनी है। प्रेत भविष्य का संकेत है। बाकी शरीरधारी हो, नहीं हो, पता नहीं! साहब! हनुमानजी का आश्रय करे उसको भूत की चिंता दूर रहती है। भूतकाल सतत हमको परेशान कर रहा है। तो प्रेत का मेरा अर्थ यहां है एक भविष्य का विज़न। प्रेत योनि की यहां वंदना गोस्वामीजी कर के अपने मंगल भविष्य के लिए जो उसको करना है, उसके लिए मानो कृपा की याचना कर रहे हैं। पितृ; पितर। मैं मेरे युवान भाई-बहनों से खास प्रार्थना करूं कि माँ-बाप-पितृओं को आदर देना। माँ को तो आदर देना ही है लेकिन हमारे उपनिषदों ने कहा है, 'पितृदेवो भव।' तुम खूब पढ़ो। दुनिया में ऊंचे से ऊंचे पोस्ट पर आप जाओ लेकिन अपने पितृओं का आदर करो। वृद्धाश्रम ये समाज की मांग है। बच्चे ना रखे तो बूढ़े बेचारे कहां जाए? तो ठीक है; बाकी कोई सराहनीय वस्तु तो नहीं है मेरी दृष्टि में। पितृओं को आदर दो। आयुष्य बढ़ेगी। आयुष्य बढ़ेगी माने मेरा अर्थ तो इतना ही कि जो बाकी है आयुष्य उसमें जीने का आनंद बढ़ेगा। बची हुई आयुष्य आनंद में डूबेगी। समाज को यश मिलेगा।

पितृओं की वंदना करते गोस्वामीजी कृपा की याचना कर रहे हैं। उसके बाद गोस्वामीजी गंधर्वों की वंदना करते हैं। गंधर्वों से कृपा प्राप्त करना चाहते हैं। और गंधर्वो से बड़ी कृपा मिलती है, किसी ना किसी शुभ विद्या का दान मिलता है। शुभ कला का दान मिलता है। 'गंधर्व' बड़ा प्यारा शब्द है। बड़ी प्यारी जाति है गंधर्व। तो इससे अच्छी कला प्राप्त होती है, अच्छी विद्या प्राप्त होती है। फिर किन्नर; किन्नर को प्रणाम करके तुलसी कहते हैं, मुझ पर कृपा करो। किन्नर ने तुलसी से पूछा होगा कि आप मुझे प्रणाम करके कौन-सी कृपा आप चाहते हैं? तो कहते हैं, आप हमें गायन की कृपा करो। मुझे गाने का दान दो, गाने का वरदान दो। मैं गा सकूं, मैं गाउं। बहुत बड़ी उपलब्धि है किन्नरों की गायन की। और उसको वाद्य की भी जरूरत नहीं। सबसे बड़ा वाद्य उसके पास है, जो हम सबको उसने प्रदान किया है, ताली। लोग आलोचना के रूप में, अपमान के रूप में इसकी बात करते हैं, ये इस कथा के बाद बंद हो जानी चाहिए। खबरदार! मुझे कोई दक्षिणा नहीं चाहिए। इन महान भगवानों का आशीर्वाद है। मैं किसीसे कुछ लेता नहीं। पोथी लेकर आता हूं, पोथी लेकर चला जाता हूं। पूरी दुनिया जानती है। लेकिन कथा के बाद यदि आपको कुछ देना है तो इस समाज का अपमान ना हो, इसका तिरस्कार ना हो, ऐसी गलत ताली बजाकर के उसका उपहास न हो, इसका समाज शपथ ले।

ये शुकनवंता समाज है, जिसका तुम्हारे रास्ते में मिल जाना ठीक है। तुम कुछ दे दो और वो तुमसे मांगते हैं वो भी शायद मुझे लगता है देश-काल बदल रहा है, कुछ ना कुछ सब बदलता रहता है। बाकी वो मांगते हैं सामने से इसीलिए कि तू दे। जब मैं कहता हूं, हमारे साधुबाबा लोग जब वो घर-घर आटा मांगने क्यों जाते हैं? यहां चोर-लूटेरे का भी प्रारब्ध होता है तो साधु का अपना कोई प्रारब्ध नहीं होता है? तो इस समाज का कोई प्रारब्ध नहीं है? ये सबसे बड़ा सगुन है, याद रखे मेरा समाज। जैसे गाय सामने आए तो आप खुश हो जाते हैं। कोई कुंआरी कन्या सामने आए तो आप खुश हो जाते हैं। आज से निर्णय करना, कोई किन्नर मिल जाए तो सगुन मानना। हां, फायदा क्या होगा मुझे खबर नहीं, नुकसान नहीं होगा। ये सगुन है; जीता-जागता सगुन हैं। उसके पास अपनी करताली बहुत बड़ा वाद्य है और इसके द्वारा उसने कीर्तन किया। और साहब! तुलसीदासजी ने स्वयं रामकथा को दो हाथ की ताली कहा है-

रामकथा सुंदर कर तारी।
संसय बिहग उड़ावनिहारी।।

मेरे 'मानस'कार ने कहा, हमारे मन में संशय, वहम, भ्रमरूपी पक्षी जो है, उसको उड़ाना है तो रामकथा रूपी ताली लगाओ, पक्षी उड़ जाएंगे। ये करताली की महिमा है

साहब! ये तालवाद्य जो अपने पास है, वो अपना ही करताली जो कभी मीरां के पास मंजीरे के रूप में थी, कभी नरसिंह के हाथ में करताल के रूप में थी। इसलिए ये कीर्तन बहुत पुराना, हमारे देहातों में गाया जाता है, गुजराती में है, बहुत पुराना है। कल से मेरे मगज में अचानक प्रवेश कर गया तो अब ये नौ दिन रहेगा, याद रखना-

तमे अंतरना परदा खोलजो रे,
ताळी पाडीने राम राम बोलजो रे...

तो किन्नरों के पास गोस्वामीजी जो मांगते हैं किन्नर समाज ने किसी व्यक्तियों की स्तुति नहीं की। जब भी गीत गाए तो राधा-कृष्ण के ही गाए, शिव के गाए, माँ बहुचर के गाए। ये इन्सान की खुशामद नहीं करते। कलिप्रभाव थोड़ा प्रवेश कर गया हो तो बात ओर है बाकी वो व्यक्ति की प्रशंसा में नहीं जाते। वो मोरारिबापू का गीत नहीं गाएंगे। वो राधा-कृष्ण के ही गाएंगे; शिव-पार्वती के ही गाएंगे। गाना है तो उसीके गीत गाना चाहिए। और अध्यात्म रामायण में तो किन्नरों का कितना जिक्र आया साहब! जहां-जहां कोई ऐसी विशेष घटना हुई और किन्नरों ने गान किया। तुरंत किन्नर लोग आ जाते हैं और गायन में डूब जाते हैं। ये गाने का शास्त्र है। और तुलसी कहते हैं, किन्नर समाज, मुझे गायन विद्या प्रदान करो, कृपा करो। और साहब! ये दुनिया गाती होनी चाहिए, मुस्कुराती होनी चाहिए। गाओ; हम गाना भूल गए! जिसने भी प्रेम-भक्ति में प्रवेश किया वो सबने गाया। एकनाथ ने गाया; नामदेव ने गाया; तुकाराम ने गाया; चैतन्य महाप्रभु ने गाया है। और साहब! विदेशों में एक थेरापी विकसित होती जा रही है और वो है, गाने से तंदुरस्ती आती है। तुम थोड़ा-थोड़ा गाओ। भले बाथरूम में गाओ लेकिन तुम गाओ। गाना तंदुरस्ती के लिए उपयोगी है।

किन्नरसमाज गाता समाज है। और उसके गायन में पांच वस्तु का पंचांग होता है। इसलिए तुलसी चाहते हैं, किन्नरसमाज मुझ पर कृपा करें। पांच का अंग मिल जाता है किन्नरसमाज के गायकों में। और वो पांच है, एक तो स्वर, अच्छा स्वर। दूसरा स्वर भी सूरमयी। स्वर तो सबके पास है साहब, लेकिन सूर में ना हो तो! ताल; करताली का ताल है। लय; एक प्रकार का विलंबित, द्रूत कब कैसे लय पकड़ना ये उसकी एक विशेष विद्या है। सूर, स्वर, ताल, लय और उसके पास कोई न कोई एक विशेष राग है। और मैंने एक बुजुर्ग से सुना था कि ये शिव के स्तवन बहुत गाते हैं और दुर्गा के स्तवन बहुत करते हैं। इसलिए दो राग पर उसकी बड़ी पकड़ मानी गई। एक बहुत बड़े उस्ताद से मैंने ये सुना था। और किन्नरों के खाते में जो दो राग आया उसमें मालकौश महादेव के लिए और दुर्गा बहुचर के लिए। तो एक विशेष राग, लय, ताल, सूर, स्वर का एक पंचांग है किन्नर। और इनके द्वारा वो पंचानन को प्रसन्न करते हैं। शिव है पंचानन।

तो पहली बात तो मैंने जो आपके सामने बिनती के रूप में रखी कि इस कथा को सुनने के बाद इस समाज का अनादर ना हो। रामकथा ये प्रेमयज्ञ है। इस कथा से हम यही संदेश प्राप्त करे, इस पृथ्वी पर कोई तिरस्कृत न हो, कोई उपेक्षित न हो। ये समाज के लिए हमारे दिल में एक प्रकार का आदर प्रगट हो और इनके प्रति प्रेषित हो ये बहुत आवश्यक है। किन्नरसमाज की गायिकी की विशेषता तो है ही। कुछ और विशेषता भी किन्नरसमाज की है। किन्नर समाज को बहुधा हमने नारी पोशाक में ही देखा है। ये उनकी एक विशेषता है। ध्यान देना, किन्नरसमाज कभी पुरुष लिबास में नहीं आया, सदैव नारी लिबास में है। मैं वस्त्रों की बात कर रहा हूं, आप समझियेगा। ये समाज का जो गणवेश है, बहुधा नारी का वेश है। और तुलसीदासजी ने 'रामचरित मानस' में नारी के दो रूप का दर्शन कराया। एक है माया और दूसरी है भक्ति। मुझे कहने दो कि किन्नरसमाज का जो नारीवेश है वो मायावाला वेश नहीं है, वो भक्तिवाला वेश है। मेरी व्यासपीठ को एक विशेषता ये दिखती है कि वो सदैव नारी लिबास में है। लेकिन ये माया नहीं है, भक्ति है। फिर उसको बहुचरा माँ की भक्ति कहो; उसको महादेव की भक्ति कहो अथवा तो कोई परमतत्त्व की भक्ति कहो।

दूसरी विशेषता, सामने से वो सगुन देने के लिए हमारे पास आते हैं। फिर वो कुछ चाहे, आप दे, कभी वो जिद्द भी करे कि ये दो, ये दो, ये बात और है लेकिन मूल बात तो ये है कि उसकी विशेषता ये है कि ये साक्षात् सगुन है। तीसरी विशेषता, समाज ने कुछ मजाक की और वो कुछ मजाक करे ये कलिप्रभाव है क्योंकि समाज भी तो मजाक करता रहता है उपेक्षा के नाम पर। कितना-कितना सहन करना पड़ता है! लेकिन एक विशेषता जो मैंने उसकी देखी है उसमें वो मजाक स्वभाव नहीं रखते क्योंकि भक्ति मजाक नहीं है। भक्ति का रूप बिलग है। वो मजाक नहीं करे। भक्तिवाले आदमी कभी मजाक नहीं करते। ये उनका एक

विशेष लक्षण मेरी समझ में जो पकड़ा गया वो है। चौथा, ये समाज उदार है। बहुत उदार है ये समाज; औदार्य है।

पांचवां, ये समाज मेरी दृष्टि में तपस्वी है। ये मेरे सब व्यक्तिगत अभिप्राय है और उस पर मैं डटा हूं। और हमारे 'रामचरित मानस' में लिखा है, तपस्या किसी की विफल नहीं होती। तपस्या के तीन लक्षण तुलसीदासजी ने 'मानस' में बताए। तपस्या कुछ न कुछ नया सर्जन करती है। तपस्या कुछ न कुछ पोषित करती है। और तपस्या जो अनावश्यक है उसका विसर्जन करती है। मेरे किन्नर समाज के आप तपस्वी है, आप उदार है। हां, काल की बात और है। कलिप्रभाव के कारण कुछ गड़बड़ होती है। वायु शुद्ध नहीं रहा। जल शुद्ध नहीं रहा। पृथ्वी को हमने क्या से क्या कर दी! कुछ अच्छी वस्तु नहीं दिखती। सब बिगड़ गया है। इसका असर तो हम सब पर है। लेकिन आप उदार है। ये तप है। और तप सर्जन करता है, तप परिपालन करता है, तप विसर्जन करता है। मैंने शायद कल भी कहा कि इस कलियुग में सबसे बड़ा तप है सहन करना। अपमान को पी जाना; दुर्वाद को सह लेना बड़ी तपस्या। सहनशीलता बड़ा तप है, सीधी-सी बात है। आज कलियुग में हमें चारों ओर कंडे की अग्नि जलाने की पंचधुनी तापने की जरूरत नहीं। सबसे बड़ा तप है आदमी सहन करे, ये तपस्या है। और इसी सहनशीलता से कुछ नया सर्जन होगा; कुछ शुभ का परिपालन होगा; जो अनर्थ कार्य है उसका विनाश होगा। तो मेरी व्यासपीठ को ये पांच विशेष लक्षण किन्नर समाज में दिखते हैं। और हम नर है, वो किन्नर है, ये फ़र्क समझे। वो किन्नर है। ये कुछ विशेष है।

तो किन्नरसमाज को केन्द्र में रखते हुए इस कथा का आयोजन हुआ है। किन्नरसमाज की ओर से ही हुआ है। उसके लिए ही हुआ है। वही उसके मूल में है, ये कोई ना भूले। जिन लोगों ने सेवा की है वो तो परमात्मा ने उनको निमित्त बना दिया। बाकी कथा तो किन्नरसमाज की है। इसीलिए इस रामकथा के केन्द्र में किन्नरसमाज है। सोलह बार तुलसीदासजी ने 'किन्नर' शब्द का पवित्र उच्चारण करके किन्नरसमाज का सोलह शृंगार किया है। तुलसी सजा रहे हैं। और जब कोई संत शृंगार करे तब वो शृंगार राम विषयक होता है, काम विषयक नहीं होता। क्योंकि कोई साधु शृंगार करता है।

अब आइए, मैं कथा का थोड़ा क्रम आपके सामने पेश करूं। कल हमने हनुमानजी की वंदना की। उसके बाद सीतारामजी की वंदना की। और उसके बाद रामनाम महाराज की वंदना तुलसीजी ने की; बड़ी आवश्यक वंदना है। गोस्वामीजी नाम की महिमा और नामवंदना करते हुए 'मानस' के क्रमश: प्रकरणों में कहते हैं-

बंदउ नाम राम रघुबर को।

हेतु कृसानु भानु हिम कर को।।

पूज्यपाद गोस्वामीजी कहते हैं, भगवान के कई नाम हैं लेकिन रघुवर के कई नामों में जो उसका नाम है उसकी मैं वंदना करता हूं। राम नाम भी है, महामंत्र भी है। तो रामनाम की महिमा गोस्वामीजी ने की। मेरा कोई आग्रह नहीं कि रामराम ही बोले। कोई भी नाम लो, मुबारक। मां का नाम लो। शिव का नाम लो। कृष्ण का नाम लो। कोई भी नाम लो। नाम तो राम का, ये पक्की बात है यार! रूप कृष्ण का। और धाम मेरे महादेव का कैलास; धाम तो शिव का। नाम राम का; इसका मतलब प्लीज़, मैं बार-बार स्पष्टता करूं कि कोई ये ना करे कि ओर नाम छोटे हैं। मेरे भाई-बहन, आपके दिल तक बात पहुंचे तो याद रखना, नाम तो राम का, रूप कृष्ण का। हां, मैं राम की रोटी खा रहा हूं, बाकी रूप की जो बात कहनी हो तो गोविंद मैदान मार जाएगा साहब! रूप तो उसका 'अधरं मधुरं वदनं मधुरं...' श्रीमन् महाप्रभु वल्लभाचार्यजी कहते हैं। रूप कृष्ण का, गजब! नाम राम का। और लीला सद्गुरु की। यहां 'लीला' शब्द का कोई गलत अर्थ ना करे प्लीज़, सावधान! क्योंकि 'लीला' शब्द का गलत अर्थ किया जाता है। परमात्मा जब आकार धारण करता है, विग्रह धारण करता है तब चार वस्तु उसके साथ जुड़ जाती है। जो अनामी परमतत्त्व है वो नामधारी हो जाता है। जो अरूप है वो रूपधारी हो जाता है। वो लीला से पर है, अकर्ता है, साक्षी है, दृष्टा है। वो कुछ ना कुछ क्रीड़ा करता है, लीला करता है करुणा के कारण। सद्गुरु की लीला अद्भुत होती है। ज्ञानेश्वर महाराज लो; एकनाथजी लो; तुकाराम लो; सुर लो; जितने-जितने महापुरुष हुए; रामकृष्णदेव लो; रमण लो; जगद्गुरु हमारी पावनी परंपरा, आचार्यचरण लो; उसकी जो लीला मानी उसका रहस्य। तो लीला तो केवल सद्गुरु की। उसमें बुद्धि काम नहीं करती। हमारे कवि कागबापू ने एक भजन लिखा गुजराती में-

एमां पंडनुं डापण ना डोळाय,

भाई एने भरोसे रहेवायजी।

तुलसी ने 'रामचरित मानस' लिखा वैसे 'रामचरित मानस' के अंतर्गत 'नामचरित मानस' भी; 'रामायण' के अंदर 'नामायन।' तुलसी कहते हैं कि त्रेतायुग में भगवान राम ने जो-जो लीला की वो कलियुग में राम का नाम कर रहा है। त्रेतायुग में राम ने अहल्या का उद्धार किया। अब ये अहल्या की और त्रेतायुग की बात आज कलि में हम क्या करें? तो तुलसी कहते हैं, आज राम का नाम हमारे जैसे कुबुद्धिरूपी अहल्या को शुद्ध कर देती है। तुलसी ने कहा, कलियुग में केवल हरिनाम, केवल हरिनाम। आज कलियुग में कहां हम ध्यान कर पाएंगे यार! जो करते हैं उसको मैं प्रणाम करता हूं। योगा बहुत लोग करते हैं। जरूर करिये। पूज्यपाद रामदेवजी बाबा ने तो योग को मैदान में रख दिया। लेकिन उसमें चित्तवृत्ति निरोध एक बहुत बड़ी शर्त लगाई है पतंजलि ने तो। हम जैसे संसारियों को चित्त का कोई ठिकाना नहीं है! ध्यान, योगा कैसे हो? यज्ञ कहां से हम कर पाएंगे? और समय भी कहां इतना कि घंटों तक सेवा-पूजापाठ करे? इसलिए तुलसी आदि संतों ने, शास्त्रों ने भी कहा कि कलि में केवल नाम प्रधान है। प्रभु का नाम, जो नाम आपको रास आए, कोई चिंता नहीं। तो कलि में नाम की महिमा गजब है। तुलसी लिखते हैं-

नहिं कलि करम न भगति बिबेकू।

राम नाम अवलंबन एकू।।

राम नाम कलि अभिमत दाता।

हित परलोक लोक पितु माता।।

और तुलसी कहते हैं, स्वयं राम को उसके नाम की महिमा गाने को कहा जाए तो राम भी अपने नाम की महिमा नहीं गा पाते, ऐसी हरि के नाम की महिमा है। युवान भाई-बहन, खासकर आपके प्रति मेरा लक्ष्य रहा। आप पढ़ो, आप जिस क्षेत्र में हो, आगे बढ़ो। हम आपको ये नहीं कहते कि आप तीन घंटे माला जपते रहो। प्रासंगिक नहीं लगता। जपो तो अच्छी बात है। लेकिन मेरे देश की युवानी के पास मेरी व्यासपीठ इतनी ही अपेक्षा करती है कि आप एन्जोय करो, प्रामाणिकता से आगे बढ़ो, पढ़ो। अच्छी फिल्म देखो तो भी मेरी व्यासपीठ को कोई आपत्ति नहीं है। मंगल गीत गाओ, अच्छी बात है जिसमें से कुछ मिले। ये सब करते-करते अपने कार्यों से निवृत्त होने के बाद रात को अपने घर में बैठकर जब लगे कि अब कोई कार्य शेष नहीं है। अब केवल सोना ही बाकी है। अब कोई काम नहीं। टी.वी. भी देख लिया। वोट्सअप देख लिया, क्या आया है, क्या हुआ है? जो-जो करना है सब कर लो प्लीज़, कोई मना नहीं

लेकिन अब नींद ही लेना बाकी है और नींद ना आए; अल्लाह करे आ जाए, लेकिन यदि ना आए तो मोरारिबापू एक ही अपेक्षा करता है कि उस चंद लम्हें हरिनाम लो।

तो नाममहिमा का गायन किया गया। उसके बाद क्रम में गोस्वामीजी इस 'रामचरित मानस' का उद्गम किस रूप में हुआ उसका थोड़ा इतिहास कहते हैं। कहते हैं कि सबसे पहले तो शिवजी ने इसकी रचना की और अपने मानस में-हृदय में रख लिया 'रामचरित मानस।' योग्य समय आया तो भवानी के सामने वो 'रामायण' शिवजी ने गाना शुरू किया। वो ही रामकथा कागभुशुंडिजी के पास गई। भुशुंडि ने गरुड के प्रति गाया। फिर वो धारा पृथ्वी पर तीर्थराज प्रयाग में आई और जहां परमविवेकी याज्ञवल्क्यजी ने भरद्वाजजी के सामने गाया। और तुलसी कहते हैं, वो ही रामकथा मैंने मेरे गुरु से सुनी। तुलसीजी कहते हैं, मेरे बचपने के कारण मेरे मन में नहीं बैठी तो कृपालु गुरु ने बार-बार मुझे सुनाई तब जाके कुछ बुद्धि में बात बैठी। समाज का एक बहुत बड़ा सवाल है, एक ही कथा बार-बार क्यों सुनी जाए? आज का बौद्धिक जगत यही प्रश्न किया करता है। उसका जवाब तुलसी ने इतने साल पहले दिया कि कथा बार-बार सुननी पड़ेगी, तब जाके कुछ समझ में बैठेगी। कथा रोज नई होती है।

तो तुलसी ने उसको भाषाबद्ध करने का शिवसंकल्प किया। विक्रम संवत् सोलह सौ इकतीस रामनवमी का दिन; जो जन्मतिथि राम की है वो ही जन्म की तिथि 'रामचरित मानस' की भी है। तुलसी कहते हैं, चार संवाद में उसकी रचना की गई। संतों ने संवाद का बिलग-बिलग नाम दिया है। तो 'रामचरित मानस' को मानसरोवर का एक रूपक दिया। चार घाट- ज्ञानघाट, कर्मघाट, उपासनाघाट और शरणागति के घाट को स्थापित किया। तुलसी शरणागति के घाट से कथा शुरू करते हुए सीधे प्रयाग की कथा में हमें ले चलते हैं, जो कर्म का घाट है। जहां याज्ञवल्क्य महाराज और भरद्वाज मिलते हैं। कुंभ का मेला लगा प्रयाग में। कल्पवास के लिए सब आये, जहां से मैंने ये पंक्ति किन्नर की उठाई-

देव दनुज किंनर नर श्रेनीं।

सादर मज्जहिं सकल त्रिबेनीं।।

तुलसी कहते हैं, सब लोग कुंभ में इकठ्ठे हुए। कल्पवास पूरा करके संतगण, महात्मागण सब कोई अपने-अपने स्थान की ओर लौट रहे हैं। उसी समय याज्ञवल्क्य नाम के परम विवेकी महात्मा ने भरद्वाजजी के आश्रम से उसकी विदा मांगी तो भरद्वाजजी ने उसके चरण पकड़कर परम विवेकी याज्ञवल्क्यजी को रोक लिया और कहा, प्रभु, मेरे मन में एक बहुत बड़ा संशय है। महाराज, मुझे समझाइये कि रामतत्त्व क्या है? याज्ञवल्क्य मुस्कुराकर बोले, महाराज, आप राम के तत्त्व से बिलकुल परिचित हैं लेकिन मूढ़ की तरह प्रश्न करके मेरे से आप रामकथा सुनना चाहते हैं इसलिए आप बहाना बना रहे हैं। आप जैसा राम उपासक अथवा तो रामचरित्र में रुचि रखनेवाला श्रोता यदि मिल जाए तो याज्ञवल्क्य कहते हैं, मैं रामकथा गाऊंगा। वक्ता योग्य श्रोता को खोजता है। भरद्वाज ऋषि के सामने प्रसन्नता से याज्ञवल्क्य महाराज रामकथा का आरंभ करते हैं। रामतत्त्व क्या है वो पूछा लेकिन भरद्वाजजी के सामने याज्ञवल्क्य ने शिवतत्त्व की शुरूआत की। पूछी राम की कथा और महाराज याज्ञवल्क्य ने शुरू की शिवकथा। ये संतों ने विश्व में जोड़ने का काम किया। सिद्ध कर दिया कि राम हो, शिव हो, सब एक है। लेकिन राम तक पहुंचना है तो शिवकथा में रुचि लेनी ही पड़ेगी। शिव है द्वार राम तक जाने में प्रवेश करने के लिए। बहुत प्यारा सेतुबंध है ये। पूछी वैष्णवी रामकथा; कही शिवकथा। ये जोड़, ये मिलन क्योंकि ये संगम पर कथा हो रही है। और संगम तो संगम की ही भाषा बोलेगा, संगम के ही सूत्र स्थापित करेगा। तो पहले शिवकथा सुनाई।

किन्नरसमाज गाता समाज है। और उसके गायन में पांच वस्तु का पंचांग होता है। इसलिए तुलसी चाहते हैं, किन्नर समाज मुझ पर कृपा करें। पांच का अंग मिल जाता है किन्नर समाज के गायकों में। और वो पांच है, एक तो स्वर, अच्छा स्वर। दूसरा स्वर भी सुरमयी। स्वर तो सबके पास है साहब, लेकिन सुर में ना हो तो! ताल; करताली का ताल है। लय; एक प्रकार का विलंबित, द्रुत कब कैसे लय पकड़ना ये उसकी एक विशेष विद्या है। सुर, स्वर, ताल, लय और उसके पास कोई न कोई एक विशेष राग है। तो एक विशेष राग, लय, ताल, सुर, स्वर का एक पंचांग है किन्नर। और इनके द्वारा वो पंचानन को प्रसन्न करते हैं।

मानस-किन्नर : ३

रामकथा गाना मेरा संन्यास है

'मानस-किन्नर', नव दिवसीय रामकथा का केन्द्रबिंदु है, जिसको केन्द्र में रखते हुए आप और मैं मिलकर के संवादी सूर में कुछ सात्त्विक-तात्त्विक चर्चा कर रहे हैं। आगे बढ़ें। 'किन्नर' शब्द के बहुत से अर्थ है। मैं फिर एक बार दोहराऊं कि किन्नर एक उपदेव जाति है। जो धवलगिरि हिमालय की अगल-बगल बसती है एक विशेष जाति है। कैलास उसका मूल स्थान है। शिव की उपासना में वो गायन करते रहते हैं। शिष्ट भाषा में जिसको हम किन्नर कहते हैं उसके कई अर्थ है बाप! 'किन्नराः नर विग्रह अश्वमुखा देवयोनः।' अमरकोश। अमरकोश में किन्नर के परिचय में प्रस्तुत इस संस्कृत पंक्ति की व्याख्या हम आगे करेंगे। लेकिन 'किन्नर' शब्द के मूल अर्थ हम समझ लें, प्लीज़।

एक बहन ने आज मुझे चिठ्ठी लिखी है, 'बापू, मुझे बचपन से ही किन्नरों से बहुत डर लगता है। मैं कथा में इसीलिए आई हूं कि मेरा इस नौ दिवस में किन्नर समाज का जो भय लगता है, उस भय से मैं मुक्त हो जाऊं।' मैं स्वयं इसीलिए गा रहा हूं और आपको सुना रहा हूं कि आपके मन से भी भय दूर हो, संदेह दूर हो। आपको पता नहीं मेरे भाई-बहन, इस किन्नर समाज का एक नाम है मंगलमुख। उसके चेहरे को मंगलमुख कहा है। इसीलिए वो शुकनवंत है, सगुनवंत है। उसके लिए बहुत प्यारा शब्द ऋषियों ने निर्णित किया है, 'मंगलमुखी।' किन्नर का एक अर्थ है नर-नारायण। याद रखना, किन्नर माने केवल नर नहीं, नारायण भी। मैं दो दिन से कह रहा हूं कि किन्नर मनुष्य जाति से मनुष्योत्तर जाति तो है ही; मनुष्य से ऊंची जाति तो ये है ही, लेकिन किन्नर का परिचय कराते हुए मेरे देश के मनीषीगण कहते हैं कि किन्नर का एक अर्थ होता है नर-नारायण। मुझे 'रामचरित मानस' की एक पंक्ति से उसका एक सूक्ष्म संकेत प्राप्त हो रहा है कि किन्नर माने नर-नारायण। और जब मुझे 'मानस' प्रमाण दे तब मेरी खुशी ओर बढ़ जाती है-

की तुम्ह तीनि देव महँ कोऊ।
नर नारायन की तुम्ह दोऊ।।

'किष्किन्धाकांड' की ये पंक्ति 'की' शब्द से शुरू होती है और दूसरी 'नर' शब्द से शुरू होती है वहां मेरे गोस्वामीजी सूक्ष्म रूप में किन्नर की ओर संकेत कर रहे हैं। वानर भी एक जाति है। नाग भी एक जाति है। यक्ष भी एक जाति है। किन्नर भी एक जाति है। गंधर्व भी एक जाति है। नर भी एक जाति है। देव भी एक जाति है। कितनी-कितनी जातियों का एक कुंभ है! लेकिन यहां संकेत के रूप में प्रमाण मिलता है। श्री हनुमानजी कहते हैं, आप किन्नर हो, नर-नारायण तो नहीं? वो तीन जो देव है उनमें से दो तो नहीं? और एक किन्नर बड़ा प्रसिद्ध है 'महाभारत' में जिसको हम नर कहते हैं वो है अर्जुन। एक साल के लिए ये आदमी किन्नर बना। और अर्जुन को 'श्रीमद् भगवद्गीता' में योगेश्वर कृष्ण ने अपनी विभूति कहकर के गले लगाया है, 'पांडवानां धनंजयः।' पांडवों में अर्जुन मैं हूं। तो किन्नर का एक अर्थ है नर। नर माने अर्जुन। एक साल का किन्नर। किन्नर का दूसरा अर्थ है नर-नारायण।

तो 'किन्नर' शब्द की जो पहचान है, बड़ी प्यारी पहचान। किन्नर माने नर; नर से ऊंची जाति। किन्नर माने नर-नारायण दोनों। किन्नर का एक अर्थ है ईश्वर। किन्नर माने ब्रह्म। मैं बहुत जिम्मेदारी के साथ बोल रहा हूं; व्यासपीठ पर हूं। मेरे हर शब्द रेकर्ड हो रहे हैं। किन्नर माने ईश्वर, ब्रह्म। और ब्रह्म माने उपनिषद में ना वो स्त्रीलिंग है, ना पुल्लिंग है; बीच वाला नान्यतर है। ब्रह्म तत्त्व केवुं? ना स्त्रीलिंग, ना पुल्लिंग। किन्नर का एक अर्थ है ईश्वर। और दूसरा भी ज्यादा अच्छा मुझे अर्थ लगता है कि किन्नर माने महादेव; साक्षात् शिव। और ये लोग जो त्रिपुंड करते हैं, जो दीक्षित हैं; पूरी गुरु परंपरा होती है किन्नर समाज की। ये तो कुछ जो भटक गए हैं उसका आपको भय लगता होगा कि परेशान करेंगे कि ये करेंगे कि जिद्द करेंगे! इसीलिए तो सबको एक स्थान पे मूल जगह पर लाने के लिए ये किन्नर अखाडा स्थापित हुआ है, जिसको शंकराचार्य ने आशीर्वाद प्रदान किया। आप सब एक बने रहियो। एकता की बहुत जरूरत है। हां, संसद में भी

आपका प्रतिनिधित्व हो। कोई है कि नहीं? अभी कोई है? पर अल्लाह करे मैं चाहता हूं कि कोई किन्नर समाज का एक मंत्री बन जाए यार! क्या गुनाह किया है? जिसके पास कुछ न कला, न विद्या, बस शोरबकोर सिवा कुछ नहीं, तो भी हो जाते हैं, तो आप तो कला और विद्या के उपासक है यार! ये पद-पद तो ठीक है, छोड़ो लेकिन वो सम्मान हो, एक एकता, आपका संगठन हो ये आवश्यक है। आपकी बड़ी गुरु परंपरा है। तो बाप! ये तेरह अखाडा तो है संन्यास का। ये चौदहवां अखाडा।

एक प्रश्न है, 'बापू, संन्यास कितने प्रकार के होते हैं?' इरादा क्या है? छोड़ो संन्यास की बातें! दंडी संन्यास होता है। शीघ्र संन्यास होता है। कई प्रकार के संन्यास होते हैं। कृष्ण तो कहते हैं, नित्य संन्यास, जो द्वेष न करे, आकांक्षा न करे। मुझे पूछ रहे हो तो संन्यास लेकर भागना नहीं। यदि आप संन्यास के आशिक है तो मैं आपको एक संन्यास बताता हूं, 'मानस-संन्यास।' रामकथा गाना मेरा संन्यास है, जब तक गाऊं। शायर के लिए गज़ल संसार नहीं, संन्यास है। यदि शायरी एक ढंग से चले तो ये संसार नहीं है, ये उसकी साधना, ये उसका संन्यास है। रामकथा हम सबका संन्यास है साहब! ओर संन्यास की जरूरत क्या है? इसका नाम मैं दूं 'मानस-संन्यास।' इसमें कपड़ा मत बदलो। वेशभूषा बदलने की जरूरत नहीं, थोड़ी वृत्ति बदलने की जरूरत है। थोड़ी वृत्ति का परिवर्तन हो जाए। मेरे भाई-बहन, आप खूब अच्छे कपड़े पहनो, मौज करो। युवान भाई-बहन, जिसमें तुम्हारी चित्त की प्रसन्नता बढ़े ऐसा करो। और जिस कार्य से, जिस संग से, जिस सोबत से, जिस संभाषणों से, जिस कार्यो से चित्त की प्रसन्नता में क्षीणता आने लगे उससे दूर रहो।

बाप! चित्त की प्रसन्नता परमात्मा है। और याद रखना युवान भाई-बहन, प्रसन्नता प्रामाणिकता के बिना नहीं आती। भीतरी प्रामाणिकता नहीं होती तो प्रसन्नता होते हुए भी प्रगट नहीं हो पाती। चाहिए प्रामाणिकता। प्रामाणिकता से आती है पवित्रता। पवित्रता से आती है प्रसन्नता। तीनों को मिला दो, उसका नाम है परमात्मा। कौन और परमात्मा? तो प्रसन्नता बरकरार रहे ये आवश्यक है। संन्यास की जरूरत नहीं। ये 'मानस-संन्यास' है। अच्छी कविता 'मानस' का संन्यास है। दीप्तिजी कल कह रही थी कि-

ना मैं मीरां, ना कबीरा, ना मैं तुलसीदास हूं।
उसको खोजके रहूंगी क्योंकि मैं अटल विश्वास हूं।

उसने ऐसी पूरी गज़ल सुनाई थी। उसमें उसने एक 'संन्यास' शब्द का भी उपयोग किया था। 'मानस-संन्यास', जिसमें केवल वृत्ति बदलनी है।

तो 'किन्नर' शब्द के कुछ अर्थ जिसकी मैं चर्चा आपके साथ कर रहा हूं। किन्नर माने नर; किन्नर माने नर-नारायण; किन्नर माने ब्रह्म, ईश्वर; किन्नर माने महादेव; किन्नर माने सेवक। सेवकों को भी किन्नर कहा। किन्नर माने जिस वृक्ष की डाली से पुराने जमाने में कलम बनती थी, कलम जिससे निर्मित होती है वो वृक्ष की शाखा को किन्नर कहते हैं। लेखनी है उसको किन्नर कहते हैं। किन्नरी सारंगी को कहते हैं। किन्नरी का एक अर्थ है सारंगी। किन्नरी कैलास में गायन के साथ नर्तन भी करती है। किन्नरी गायन करती है। किन्नरी एक वीणा का नाम है। दो तार लगा दिया, बिलकुल जिसको किन्नरी वीणा कहते हैं। किन्नरी वीणा है; लोकवाद्य है और श्लोकवाद्य भी; दोनों है।

बहुत विशाल अर्थ में हमारे सामने 'किन्नर' शब्द आया है। हमने उपेक्षा कर दी! हमने जानने की कोशिश नहीं की। ये अवसर मिला है। मेरी व्यासपीठ मुखर हुई है। तो 'किन्नरा नर विग्रहः अश्वमुखा देव योनयः।'- अमरकोश। किन्नरों में शादी होती है। ये एक उपजाति होती है। उसको अश्वमुख भी कहा है। ये जो जाति की चर्चा में, शरीर मनुष्य का होता है। मुख अश्व का होता है। चेहरा अश्व का माने घोड़े का नहीं। चेहरे में जो शक्ति है, सामर्थ्य है, जो पावर है, इनकी आंखों में जो पावर है, उसकी बोली में जो पावर है, जो मुख की ताकत, मुख का ओजस; मैं उसका ये अर्थ करूंगा। अश्वमुखी। किन्नर का शरीर मनुष्य का है, चेहरा अश्वमुख है और सामने उसका शरीर अश्व का है और मुख मनुष्य का है। उसकी शादी होती है। तो ये तिरस्कृत और उपेक्षित समाज नहीं है। जब मनीषीगण उसको ब्रह्म तक कह देते हैं। फिर क्या कहना? तो ऐसे किन्नर समाज की बड़ी-बड़ी सुंदर व्याख्याएं परिचय के लिए ग्रंथों से उपलब्ध होती है सो मैं यथासमय आपके सामने पेश कर रहा हूं। पहली बार 'किन्नर' शब्द मैंने कल कहा था आपके सामने कि दस लोगों से वंदना करके तुलसी, 'कृपा करहु अब सर्ब।' फिर 'मानस' में दूसरी बार 'किन्नर' शब्द जहां आया, जो पंक्ति हमने भूमिका में उठाई है-

देव दनुज किंनर नर श्रेनीं।
सादर मज्जहिं सकल त्रिबेनीं।
सुर किंनर नर नाग मुनीसा।
जय जय जय कहि देहिं असीसा।।

त्रिवेणी में स्नान करने के समय तुलसीदासजी ने किन्नरों का स्मरण किया है। देव, दनुज, किन्नर और नर चारों का स्नान। प्रयाग में जब कुंभ लगता है तब तुलसीजी कहते हैं इतने ही हिस्सेदार है त्रिवेणी स्नान के। थोड़ा समय का फ़र्क है। त्रिवेणी में स्नान करते हैं तो देव कब करते हैं? किन्नर कब करते हैं? नर कब करते हैं? और दनुज कब करते हैं? थोड़ा समय में अंतर है। ये भी सुन लीजिए। त्रिवेणी अथवा तो कोई भी जगह पर स्नान की जो महिमा है। स्नान हमारे यहां कई प्रकार के हैं। मैंने कभी इसकी चर्चा की है। आज स्मरण में जितना आए, कहूं। कई प्रकार के स्नान हैं। आप कोई देहात में रहते हैं। सायंकाल का समय है। आप कहीं जा रहे हैं। एक ओर से गोधन चारा चरकर आती है। और गायों के पैरों की धूली उड़ती है और ये धूल यदि तुम्हारे सिर पर, तुम्हारे अंग पर, सायंकाल को ये रजकण यदि हमारे ऊपर आ जाए तो उसको स्नान माना गया है। गाय की इतनी महिमा है यार! संविधान का प्रश्न होगा। राज्य का मसला है कि केन्द्र का मसला है, प्रभु जाने जो हो! लेकिन प्रसंग आया है तो मैं प्रार्थना करूं, गायों का जतन हो, गाय हमारी स्नान है; हमें शुद्ध-बुद्ध करती है। और बदनसीबी देखो कि दुनिया के मुस्लिम कन्ट्रीज़ में भी गाय के दूध का सेवन होता है और ये हमारे देश में खबर नहीं, गाय काटी जा रही है! मुझे तो किसी ने एक चिठ्ठी भी दी थी। मैंने शायद गत कथा में उल्लेख किया। किसी ने मुझे चिठ्ठी दी थी मेरे श्रोता ने कि बापू, पांच तारीख को एक झटके से पांच सौ और हजार की नोंटो को बारह बजे बंद हो रही है, ऐसी आदरणीय प्रधानमंत्रीश्री ने एकदम घोषणा कर दी तो क्या ऐसी घोषणा कभी राष्ट्रीय प्रसारण में एक झटके में न की जाए कि पूरे देश से रात को बारह बजे से गाय कतल बंद! ऐसा किसी ने मुझे पूछा है यार! शराब बंद! 'घायल' का शे'र है-

तने पीता नथी आवडतो मूर्ख मन मारा,
पदार्थ एवो क्यो छे के जे शराब नथी।

लेकिन मेरी महफ़िल में सबको दिल का आदर है। यहां तो शराब से इन्सान बनाए जाते हैं। तो बाप! मुझे खबर नहीं कि एक झटके से ऐसा हो सकता है कि नहीं? लेकिन एक श्रोता ने मुझे ये लिखा था। गो माता की सेवा हो; गो माता से प्रेम हो; गाय से प्रगट होनेवाले पंचगव्य आदि जो-जो चीज है उसका हम अपने घरेलू उपयोग में इस्तेमाल करना शुरू कर दे साहब, तो गायों की सेवा अपनेआप हो जाएगी। ये तो बहुत अच्छा हो। जब भी हो, लेकिन हो तो अच्छा हो। सब प्रयत्न तो कर रहे हैं। न हो तो जिसके पास क्षमता है वो जहां-जहां गो सदन हो, गौशालाएं हो, जहां गायों की सेवा हो वहां अपनी आय से थोड़ा योगदान दे। गायों को दत्तक ले, ये भी हो सकता है। गोरज यदि हमारे सिर पर गिरे तो मेरे देश के मनीषी कहते हैं, ये स्नान है। आप शांति से ध्यान में बैठो तो ध्यान भी एक स्नान है, यस। आप कोई गीत का रियाज करो, गाओ तो आपका ये गान भी स्नान है। आप उपनिषद के ज्ञान के लिए स्वाध्याय करो और वो ज्ञान भी स्नान है। मैं आपके सामने रामकथा गाऊं ये रामकथा गाना भी मेरा स्नान है और आपका सुनना भी आपका स्नान है। तो कथा स्नान है। स्नान दो प्रकार के होते हैं। आंतर स्नान शुद्ध होता है, अवश्य। ताजगी आती है। स्फूर्ति आती है। भीतरी अभ्यंतर स्नान जिसको कहते हैं। इससे एक आध्यात्मिक उघाड होने लगता है। भीतरी प्रसन्नता शुरू हो जाती है। तो गान भी स्नान है। ध्यान भी स्नान है। कथा सुनना भी स्नान है। स्वाध्याय करना भी स्नान है।

मुझे यहां 'मानस' के आधार पर चार वर्ग के स्नान का समय संकेत करना है। 'देव दनुज किंनर नर श्रेनीं।' देवगण प्रात:काल में स्नान करते हैं। अथवा तो प्रात:काल में स्नान करे वो देव है। हम प्रात:काल में स्नान न कर सके, कोई चिंता नहीं। हमें देव नहीं होना है। तो बाप! देवताओं के स्नान का समय है प्रात:काल। किन्नर समाज के स्नान का समय है प्रात:काल के बाद दोपहर तक कभी भी उसको छूट है स्नान की। मनुष्य जो नर है उसके स्नान का समय है सुबह से शाम तक कभी भी कर ले। किन्नर सुबह से दोपहर। लेकिन दनुज के स्नान का समय होता है रात्रि का क्योंकि ये लोग रजनीचर है, ये लोग निशिचर है। इसलिए उसके स्नान का समय कायम रात्रि का नियुक्त किया गया है। आपको नहीं लगता कि मेरे देश के ऋषियों ने कितनी सूक्ष्म स्वाभाविक नियमावलि प्रदान की है! कहीं भीड ना हो, कहीं हल्ला-गुल्ला ना हो इसमें देव का पहला अधिकार। ये कोई भेद नहीं, ये व्यवस्था है, वैषम्य नहीं है। ऋषियों ने सोचा होगा कि देव तो यही है

जो प्रात:काल में जागते हैं। वेद घोष करते हैं, ऋषिमुनि है, तुलसी है वो तो सुबह में ही स्नान कर लेते हैं। किन्नर समाज नर्तन करते हैं, गाते हैं, उसका समय निश्चित नहीं, लेकिन दोपहर तक कभी भी वो स्नान करे। मनुष्य शाम तक स्नान करे क्योंकि मनुष्य ज्यादा रजोगुण में हैं। हम सब प्रवृत्ति में है। दफ्तर जाना, ये करना, ये करना, ये सब करना। सुबह स्नान करते हैं फिर भी ये छूट दी गई है कि सुबह से शाम तक कभी भी वो स्नान कर सकते हैं। असुर लोग तमोगुणी है। तमोगुणी के स्नान का समय रात्रि का दिया क्योंकि तमोगुणी स्नान करेगा तो दूसरों को परेशान भी करेगा इसलिए एक ऐसा समय नियत कर दिया कि और कोई वर्ग उस समय वहां न हो। इसलिए ये रजनीचरों का स्नान रात्रि स्नान। श्रद्धा से चारों समाज त्रिवेणी में स्नान करते हैं।

किन्नर समाज की उत्पत्ति दो-तीन रूप में मिलती है। एक उत्पत्ति का स्थान किन्नर समाज का पुलत्स्य वंश माना गया। ये पुलत्स्य वंशज है। और ये किन्नर समाज का ईश्वर कुबेर माना जाता है। धनपति उसका ईश्वर है। वो किसी से धन नहीं मांगते थे। क्योंकि कुबेरेश्वर उसका अधिपति माना गया। यद्यपि कुबेर यक्ष के भी अधिपति है, गंधर्वों के। लेकिन किन्नरों के भी अधिपति माने गए। कुबेर धनभंडारी है। इसलिए किन्नर समाज धनप्रेमी नहीं माना गया। उसके पास खजाना है, दौलत है। और जिसके पास गायन है, नृत्य है, जो सबके सगुन का कारण बनते हैं, जो उदार है और जो तपस्वी है, मेरी दृष्टि में ये धनवान है। तो ये पुलत्स्य वंशज भी माना गया किन्नर समाज को। हमारे कश्यप और अरिष्टा की संतान माना गया है। महर्षि कश्यप और अरिष्टा उसकी पत्नी उसी से ये परंपरा चली किन्नर समाज की। एक तीसरा उत्पत्ति स्थान है, ब्रह्मा के चरणारविंद की ऊंगलियों के बीच में जो खाली जगह है वहां से किन्नरों की उत्पत्ति हुई है। गौरव लीजिए समाज। वो ही ब्रह्मा का चरण जहां से गंगा निकली विष्णुपाद से और ब्रह्मा के कमंडल में गई ऐसे पवित्रतम ब्रह्माजी के चरणारविंद की ऊंगलियों के बीचवाले भाग से किन्नर समाज की उत्पत्ति का एक कारण बताया है। पितामह ब्रह्मा की ऊंगलियों से जिसका प्रादुर्भाव बताया गया। इसलिए 'रामचरित मानस' में जहां किन्नर का उल्लेख है वहां बहुत आदर और श्रद्धा के साथ किन्नरों की वंदना की गई है। और ग्रंथ में एक मान्यता ऐसी भी आई कि किन्नर को कोई कन्या नहीं देते थे क्योंकि एक ऐसी घटना रही कि किन्नर से कोई परिवार अपनी कन्या दे तो दूसरे दिन वो विधवा हो जाती थी। इसी किन्नर समाज को आदर देने के लिए कन्या के रूप में श्रीकृष्ण ने एक बार मोहिनी रूप धारण किया कि मैं ब्याहूंगी। और कृष्ण को कौन विधवा कर सकता है? कृष्ण को कौन अनाथ कर सकता है? जो हमारा श्रीनाथ है; जो हमारा द्वारिकानाथ है; जो अनाथ का नाथ है।

ना हारना जरूरी है, ना जीतना जरूरी है।
जगत एक खेल है प्यारों, यहां खेलना जरूरी है।

हार-जीत मारो गोली! यहां जीतनेवाले अहंकारी हो जाते हैं। हारनेवाले डिप्रेश हो जाते हैं। दोनों ओर बीमारी है। शायर कहता है, राज कौशिक कहता है कि जगत एक खेल है, जिंदगी एक खेल है, खेलना जरूरी है, खेलो। कृष्ण की ये क्रीडा अद्‌भुत है। कृष्ण कृष्ण है। इसलिए मीरां कहती है, 'चूंदडी नहीं ओढुं मारा नाथ!'

मुझे वृंदावन में पूछा गया कि बापू, आपको राधा निकट लगती है कि मीरां? कुछ चर्चा चली। अब वृंदावन में

हम कहे कि हमें राधा निकट नहीं, हमें मीरां निकट है तो पिटाई होती है! वृंदावनवाले छोड़े यार कि राधा का अनादर करते हो? ये जानबुझकर मैंने कहा कि आप जो भी कहो लेकिन मुझे, मोरारिबापू को राधा निकट नहीं पड़ेगी, मीरां निकट पड़ेगी। क्योंकि राधा आह्लादिनी शक्ति है। उसकी बड़ी दूरनगरी है। मीरां हमको भूगोल की दृष्टि से भी नजदीक पड़ती है। मीरां हमें भाषा की दृष्टि से भी निकट पड़ती है। मीरां हमें भाव की दृष्टि से भी निकट पड़ती है। और छोड़ो, हमें राजस्थान जाने की जरूरत नहीं, मीरां हम सौराष्ट्रवासियों पर कृपा करके द्वारिका स्वयं आई है। हमें ओर निकट पड़ती है। अने अमारो रमेश पारेख बहु दर्द भरी कविता लखे छे-

हवे तारो मेवाड मीरां छोडशे.
गढने होंकारो तो कांगराय देशे,
पण गढमां होंकारो कोण देशे?

तो मीरां की भक्ति हम जैसों को निकट पड़ती है। और कई मीरांये हुई है। कश्मीर में जाओ तो लल्लादेवी मीरां ही है। भले धर्म अलग है। उधर सूफी में जाओ तो राबिया भी एक मीरां है। और हमारे सौराष्ट्र में समढियाळा आओ तो गंगासती भी एक मीरां है। ये मीरां का देश है। जो भक्ति हमें निकट पड़ती है। मीरां बहुत गरीब है, मीरां रांक है। संसार के दु:खों के सामने शूरवीर रहो लेकिन परमात्मा के प्रेम में हार जाओ, रंक हो। गंगासती कहती है-

भक्ति रे करवी एने रांक थईने रहेवुं।

याद रखो, साधना करने से सामने से त्रास देनेवालों का त्रास देना कम नहीं होगा। ये ओर बढ़ सकता है लेकिन इस प्रहारों को सहने की शक्ति तुममें रामनाम से ओर आएगी। नरसिंह ने कम भजा था हरि को? एक सम्राट ने जेल में बद कर दिया! क्या गुनाह था मीरां का? कृष्णनाम लेना गुनाह है क्या? लोग कहते हैं, 'हनुमानचालीसा' का पाठ करते हैं, विपत्ति तो कम नहीं हुई! नहीं होगी। क्योंकि विपत्ति देनेवाले कम नहीं है! ओर बढ़ेंगे! हां, साधना तुम्हारी सहनशक्ति में वृद्धि करेगी। तुम हारोगे नहीं। तुम गिरोगे नहीं। और जो बुद्धपुरुष, जो बड़े-बड़े मुर्शिद हुए हैं, फरीद, निज़ामुद्दीन आदि इन लोगों ने बहुत सहा है साहब! बंदगी करने से सामनेवाले की आपत्तियां कम नहीं हुई लेकिन हौसला बुलंद होता गया, बुलंद होता गया। गुलज़ार के कुछ शेर दिला ने मुझे दिये हैं-

कहनेवालों का कुछ नहीं जाता,
सहनेवाले कमाल करते हैं।
कौन ढूंढे जवाब दर्दों के?
लोग तो बस सवाल करते हैं।

क्या हुआ? कैसे हुआ? क्या? इलाज तो कोई दिखाते ही नहीं! दो ही नाम थे। एक अल्लाह, दूसरी लल्ला। ये समाज की बिलग-बिलग मीराएं हैं।

आंख में तैरती है तस्वीरें।
तेरा चेहरा तेरा खयाल लिए।
आईना देखता है जब मुझको।
एक मासूम सा सवाल लिए।

मैं आपको झूठा आश्वासन नहीं दे सकता इसलिए जो स्पष्ट है मेरी अनुभूति है सो बताऊं कि जितना भजन बढ़ाओ, तुम्हारी परेशानी बढ़ेगी। लेकिन उसके सामने ईश्वर भजन के प्रताप से सहनशक्ति बहुत देता है कि तुम लाख करो, अडग। इसलिए हमारी गंगासती गाती है, ये हमारी सौराष्ट्र की मीरां समढियाळा की मीरां-

मेरु तो डगे पण जेनां मनडां डगे नहीं पानबाई।
भांगी रे पडे ब्रह्मांड रे।

तो हमारी चर्चा चल रही थी, भगवान कृष्ण ने मोहिनी रूप लेकर क्या क्रीड़ा की है, क्या लीला की है! ऐसी ही एक दूसरी कथा, अर्जुन जहां द्रौपदीजी दूसरे भाई के साथ रही उसी कमरे में हथियार लेने के लिए जाता है और नियम के अनुसार उसे एक साल का दंड मिला। उसी समय अर्जुन निकल जाता है तब एक कन्या से उसकी मोहब्बत हो जाती है। और उसके प्यार के कारण उसको एक बेटे का जन्म होता है, वो किन्नर था। 'महाभारत' का युद्ध जब जीता नहीं जा रहा था और भगवान व्यासजी ने कहा पांडवों को; कृष्ण ने व्यास को संकेत किया, व्यास ने पांडवों को संकेत किया, एक यज्ञ करो। हमारे यहां सफलता के लिए यज्ञ किया जाता था। यद्यपि ये कथा है तो मैं बोल रहा हूं बाकी नरबलि या किसी भी बलि के पक्ष में मैं नहीं हूं। लेकिन वहां कथा है कि पांडव कुल का कोई किशोर बलि दे तो पांडवों का विजय हो। उस समय कोई पांडव कुल का नबीरा तैयार नहीं हुआ तब एक किन्नर खड़ा हुआ, एक पवित्र कुल यदि बच जाता है तो मेरा बलिदान कर दो। साहब! ये आपकी महिमा का गायन है। ये मेरी जेब से निकाली बात नहीं। कभी कृष्ण मोहिनी रूप लेकर

शादी कर लेता है। कभी उसी कुल का एक नबीरा उसी कुल को बचाने के लिए बलिदान तक पहुंचता है। तो इसके लिए हम केन्द्र में रखकर 'मानस' में जो किन्नरसमाज की देवताई अवस्था का वर्णन है उसकी चर्चा इस कथा में गान रूप में कर रहे हैं।

आगे की चर्चा कल करेंगे। आज थोड़ा कथा का क्रम उठा लूं कि कल भरद्वाज ऋषि ने याज्ञवल्क्यजी को पूछा था कि रामतत्त्व क्या है और याज्ञवल्क्य पहले शिवचरित्र कहते हैं। तो पूछी रामकथा और शुरूआत की शिवकथा से। ये सेतु की कथा। भगवान महादेव शंभु कुंभज ऋषि के आश्रम में गए। वो त्रेतायुग था और कुंभज मुनि के पास गए कथा सुनने हेतु। उस समय दक्षकन्या शिवजी की धर्मपत्नी सती भी साथ में गई। शिव और सती दोनों कुंभज के आश्रम में आए। कुंभज ऋषि ने बहुत पूजा की, बहुत स्वागत किया। शिवजी ने इस स्वागत का बड़ा प्यारा अर्थ निकाला लेकिन संग आई सती ने गलत अर्थ किया। घड़े से जिसका जनम हुआ हो, समंदर जैसी कथा क्या खाक कहेगा? मेरे भाई-बहन, कहीं भी आप जाओ और सामनेवाली व्यक्ति आपको आदर दे तो उसकी अपनी लायकात मत समझना, उसका शील समझना। ये उनकी खानदानी है। लेकिन सती दक्ष की कन्या। दक्ष का अर्थ होता है बुद्धिमानी। और बुद्धिमान की बेटी के कारण थोड़ी बौद्धिक है तो उसने सोचा ये क्या कथा सुनायेगा? मुनि ने रामकथा गाई। शिवजी ने सुख से सुनी। सती बैठी थी लेकिन नाम निकाल दिया। अधिकारी समझकर शिवजी ने कुंभज ऋषि को भक्ति का वर दिया। त्रिपुरारि ने मुनि से विदा मांगी।

वर्तमान त्रेतायुग में राम की लीला चालू थी। सीता का अपहरण हो चुका है। जानकी के विरह में राम मानवीय लीला करते हुए एक सामान्य कामी आदमी की तरह ज़ार-ज़ार रो रहे हैं! भगवान शिवजी ने देखा कि जिसकी कथा सुनकर मैं कैलास लौट रहा हूं और रास्ते में वही मेरे प्रभु का दर्शन होने जा रहा है। मैं कितना भाग्यवान हूं! 'हे सच्चिदानंद, हे जगपावन, आपकी जय हो।' शिवजी मन ही मन राम को प्रणाम करके चुप हो गये। सती ने ये दृश्य देखा। सती तर्क करती है। अंतर्यामी शिव जान गये। सती को कहने लगे कि हे देवी, मन में संदेह न करो। आपका नारी स्वभाव है इसलिए आपको बार-बार संदेह होता है। मातृशरीर का, मातृस्वभाव का एक स्वाभाविक लक्षण है कि उसको संशय बहुत होंगे। सती को संशय का कीड़ा खा रहा है।

कृपालु शिव ने समझाया कि ये ब्रह्म है लेकिन सती को उपदेश नहीं लगा। शिवजी मुस्कुराये। भगवान की माया प्रबल कि आज उसने मेरी पत्नी को भी बांध दिया! शिवजी ने कहा, देवी, एक काम करो, आप बुद्धि से सोच रही है। मैं तो कहता हूं ये परमात्मा है फिर भी आप न माने तो आप जाकर परीक्षा करो। आप अपनी बुद्धि से निर्णय करके मुझे कहो कि ये ब्रह्म है या भ्रम है, आप निर्णय करो। और बुद्धिमान आदमी परीक्षा किए बिना नहीं रहता। और याद रखो, ईश्वर परीक्षा का विषय नहीं है, प्रतीक्षा का विषय है। उसकी प्रतीक्षा करनी है। उसकी परीक्षा कौन कर सकता है? उसकी प्रतीक्षा करो। सती न मानी, राम की परीक्षा करने जाती है। और भगवान शंकर मन में निर्णय करते हैं-

होइहि सोइ जो राम रचि राखा।
को करि तर्क बढ़ावै साखा।

मेरे प्रभु ने जो रचा होगा वही तो होता होगा। सती गई। शिव 'अस कहि लगे जपन हरिनामा।' प्रामाणिक पुरुषार्थ के बाद, प्रामाणिक प्रयासों के बाद भी कोई नतीजा न आए ना मेरे भाई-बहन परिवार में तो निराश मत होना। एक जगह बैठकर हरिनाम लेना कि प्रभु तेरे पे छोड़ दिया। अब तू जाने, तू जाने। आज की कथा यहां विराम ले रही है।

एक प्रश्न है, 'बापू, संन्यास कितने प्रकार के होते हैं?' इरादा क्या है? छोड़ो संन्यास की बातें! दंडी संन्यास होता है। शीघ्र संन्यास होता है। कई प्रकार के संन्यास होते हैं। कृष्ण तो कहते हैं, नित्य संन्यास, जो द्वेष न करे, आकांक्षा न करे। मुझे पूछ रहे हो तो संन्यास लेकर भागना नहीं। यदि आप संन्यास के आशिक है तो मैं आपको एक संन्यास बताता हूं, 'मानस-संन्यास।' रामकथा गाना मेरा संन्यास है, जब तक गाऊं। शायर के लिए गज़ल संसार नहीं, संन्यास है। यदि शायरी एक ढंग से चले तो ये संसार नहीं है, ये उसकी साधना, ये उसका संन्यास है। रामकथा हम सबका संन्यास है साहब! ओर संन्यास की जरूरत क्या है?

मानस-किन्नर : ४

परमतत्त्व अधोगति और उर्ध्वगति से पर है

'मानस-किन्नर' ये इस रामकथा का केन्द्रबिंदु है, जिसकी 'मानस' के आधार पर अन्य संदर्भ ग्रंथों के आधार पर संतों से सुनी हुई बातों के आधार पर इतिहास और पौराणिक बातों के आधार पर गुरुकृपा से जो भी कुछ समझ आया, वो बातें आपके सामने संवाद के रूप में शेर कर रहा हूं। 'एता भगवंत वैचित्र्या नीति रीति गति रति कृति तथा।' मनीषी कहते हैं कि जिसको हम परमात्मा कहते हैं, परम सत्ता कहते हैं, परमतत्त्व कहते हैं, ब्रह्म कहते हैं, ईश्वर कहते हैं, जो जिसको रास आए; उस परमात्मा की पांच वस्तु अति पवित्र है। मनीषियों के वचनों को जरा साथ में मिलकर हम विचार करें। इतनी पांच वस्तु परमतत्त्व का परम वैचित्र्य है। परमतत्त्व की नीति अति विचित्र होती है। यद्यपि परमतत्त्व को कोई नीति-अनीति नहीं होती। परमतत्त्व वो है जो सब से उपर है। इन सबको अतिक्रमण करके सबसे पर है। जो परम है उसकी कोई नीति नहीं। इसलिए दिखता है कि कभी-कभी उसीके द्वारा नीतिभंग होता है। लेकिन परमतत्त्व होने के कारण वो नीति से पर है। उसकी रीति, उसकी कार्यशैली, उसकी पद्धति अति विचित्र होती है। मैं कभी-कभी सहज बोल गया हूं कि मेरी समझ में परम अव्यवस्था का नाम ही परमात्मा है। पकृति के तत्त्वों में व्यवस्था है लेकिन प्रकृति से भी जो पर तत्त्व है वो परम अव्यवस्था है। प्रकृति का तत्त्व सूर्य है, पृथ्वी है, सागर है, पंचतत्त्व है उसमें थोड़े नियम, थोड़ी शिस्त दिखती है। सूरज रोज उदित-अस्त होता है। वायु अपनी गति से बहा करती है। लेकिन प्रकृति से जो पर है, ये भगवंत तत्त्व जिसको मनीषी अति विचित्र कहते हैं।

तो परमतत्त्व की नीति अति विचित्र हैं। उसकी ये व्यवस्था 'नेति नेति नेति।' कोई किसी के कंट्रोल में नही हैं। ये परम अव्यवस्था का नाम, मेरी व्यासपीठ की थोड़ा-बहुत समझ में आया कि परमात्मा हैं। उसकी रीति पता नहीं चलता, अति विचित्र है। नीति, रीति, रति; परमात्मा की प्रेम करने की पद्धति भी अति विचित्र हैं। किस रूप में अति विचित्र कि हम लोग एक दूसरे से प्रेम करते हैं, तथाकथित प्रेम तो उसमें या तो बदला लेने की वृत्ति है या तो प्रेम के बदले में कोई ना कोई कामनापूर्ति की अपेक्षा हैं। हमारे प्रेम की रीत, तथाकथित प्रेम की पद्धति जो संसार में चल रही है, जो 'मानस'कार ने रति नाम दिया है वो या तो आकांक्षायुक्त है; आकांक्षा पूरी ना हुई तो प्रतिशोध के रूप में हैं। परम तत्त्व की रति ऐसी नहीं है। तुम लाख गिरे हुए क्यों न हो लेकिन उसकी विचित्र रति तुम्हें गले लगाएगी। तुमसे कोई आकांक्षा नहीं है। तुमने उसको नहीं भजा तो बदला लेने कि लिए उसकी रति अग्रसर नहीं होगी।

कृष्ण की जो रति की रीत है अति विचित्र हैं। वो मथुरा जाए तो सबसे पहले एक कुब्जा के घर जाते हैं। उसकी सेवा कबूल करते हैं और कोई तर्क नहीं जोड़े जा सकते कि इस स्त्री के पास कृष्ण का जाना क्या कारण हो सकता है? क्या उसमें रूप था? ये त्रिभंगी थी, टेढ़ी थी, वक्रता थी। और साहब! उसकी सेवा कुबूल करने का क्या? उसके घर वो रहते हैं। तब लगता है कि इस परम की गति भी परम विचित्र हैं। उसको तो तुलसी भी हस्ताक्षर करके मोहर लगा देते हैं, 'अति विचित्र भगवंत गति।' उसकी गति अति विचित्र हैं। कैसे आप उसकी गति को विचित्र समझोगे? तो 'मानस' की पंक्ति से उसके सामने आउं, 'बिनु पद चलई।' जिसे पैर नहीं फिर भी गति करता हैं। 'सुनई बिनु काना।' जिसको कान नहीं फिर भी सुनता हैं। 'कर बिनु करम करई बिधि नाना।' ये परमतत्त्व जो है मेरे भाई-बहन, अधोगति और उर्ध्वगति से पर हैं। न वहां कोई अधोगति है, न वहां कोई उर्ध्वगति हैं। वहां केवल अति विचित्र गति है। पता नहीं चलता कि ये क्या खेल करता हैं?

पांचवां सूत्र है कृति; परमतत्त्व की कृति अति विचित्र हैं। इसमें से एक उसकी कृति है किन्नर। अति विचित्र कृति है ये। कौन समझ पाएगा? और कोई लाख समझाए तो भी किन्नर हुए बिना उस कृति को कोई समझा नहीं पाएगा। कोई कथाकार समझा नहीं पाएगा। उसके लिए किन्नर होना अति आवश्यक हैं। हम व्याख्या करेंगे। अनुभूति तो ये लोग कर पाएंगे। ये लक्ष्मी कुछ किताब लिखती है और लिखेगी। मुझे बता रही थी बहनजी; तो ये ज्यादा प्रकाश डाल सकेंगे। कोई कथाकार नहीं कह सकेगा कि परमात्मा की कृति क्या है? किन्नरों की बड़ी महिमा है। 'किन्नर' शब्द संस्कृत में प्रश्नवाचक है। किं नर? क्या वो नर हैं? प्रश्न करके ये जानना चाहते हैं कि ये नर हैं? नहीं, किन्नर का अर्थ केवल नर नहीं हैं। ये विशेष मनुष्य हैं। ये हमारे सर्वसामान्य नर नहीं है। जो पहले दिन का भी मेरा वकतव्य है कि उपदेव जाति हैं; देवताओं की एक जाति है और मनुष्य से बेहतर वो तत्त्व हैं। किन्नर, क्या वो केवल हमारे जैसा नर ही हैं? प्रश्नवाचक है, किं नर? ये नरेतर हैं। ये मनुष्येतर हैं। हमसे ऊंचा हैं। हाइट में हो ना हो वो चिंता छोड़ो। तो ये जो उसकी अति विचित्र कृति है मेरे परमात्मा की। और मैं किन्नरों के बारे में थोड़ा बोलने का अधिकारी भी हूं क्योंकि मेरे तुलसी ने ही किन्नरों का तो सम्मान किया है। राम कहते हैं कि मुझे भजने के अधिकारी नर हो, नारी हो कि नपुंसक हो, चराचर कोई भी हो, वो मेरे हो सकते हैं। ये 'रामचरित मानस' का स्वीकार है।

मेरे पास एक प्रश्न है कि 'बापू, आप किन्नर पर क्यों बोलते हो?' इसलिए बोल रहा हूं, मेरा बाप बोला है। मेरा दादा बोला है। दादाओं का दादाओं का दादाओं का दादाओं का दादा शंकरदादा बोला हैं। हम शंकर को दादा कहते हैं, शंकरदादा। शिव बोला हैं। ये किन्नर पर में न कहता तो मेरी कथा की यात्रा थोड़ी अधूरी रह जाती साहब! अब एक शिखर मुझे चढ़ना है वहां बाकी है, मैं जाउंगा। गनिका...गनिका...गनिका...गनिका...गनिका। आपने ये बात सुनी होगी कि राम का वनवास जब हुआ। देहातों में ये बहुत बोली जाती है बातें। तो राम जब वन गये। तमसा नदी को पार किया। भगवान के संग पूरी अयोध्या निकल पड़ी थी। सब को प्रभु ने कहा, आप लौट जाओ। यदि मुझसे प्रेम करते हो तो मेरी बात मान जाओ। चौदह साल के बाद मैं आऊंगा। हे नर समाज, आप लौट जाओ। हे नारी समाज, आप लौट जाओ। आप चौदह साल अवध में रहो। सब को संभालो। सब गये। चौदह साल की यात्रा पूरी हुई। ठाकुर आये। वो ही तमसा के तट पर प्रभु उतरे। ये लोककथा है। तो एक समाज वहां तब से अभी तक बैठा हुआ है। चौदह साल से आंखें भरी हुई है। रो-रो करके आंखें चौदह साल की वेदना लिए बैठा था एक समाज। राम-लखन-जानकी ने देखा कि आप लोग क्यों बैठे हो? बोले, अब से नहीं बैठे, चौदह साल से बैठे हैं! मतलब? मैंने तो सब को कहा था कि आप यदि मुझे प्रेम करते हैं तो मेरी बात मानकर अयोध्या लौट जाओ। चौदह साल प्रतीक्षा करो। मैं आउंगा। हां महाराज! मैंने भी सुना था लेकिन आपने खास संबोधन किया था, नर समाज, लौट जाओ; नारी समाज, लौट जाओ। हम ना नर है, ना नारी है। हमने आज्ञा का पालन किया है। मेरे ठाकुर की आंखें ड़बड़बा गई! और मेरे राम का सम्मान करने के लिए अयोध्या आई थी उसके पहले मेरे राम ने इस समाज का स्वागत किया, आप मेरे साथ चलो।

राम स्वीकार करते हैं। रामकथा स्वीकार करती है। मोरारिबापू क्यों न करें? और मोरारिबापू से प्रेम करनेवाले आप यदि ना करे तो आप के प्रेम की कमी है। इस समाज का स्वीकार 'मानस' ने किया। उस भगवत सत्ता की जो कृति है, उसकी जो रचना है, अति विचित्र है; नीति अति विचित्र; प्रीति अति विचित्र; रीति अति विचित्र; उसकी कृति समझ में आती नहीं और कोई कथाकार नहीं पेश कर पाएगा।

मैं तो अपेक्षा करता हूं कि ये लक्ष्मी भी कथा कहे। और जब वो कथा शुरू करे तो दीप प्रागट्य के लिए मैं आऊंगा। वो ज्यादा अधिकारी होगी उस पर बोलने के लिए। हम तो ग्रंथ संदर्भ निकालेंगे अथवा तो अपनी भावना, शुद्ध हृदय के प्रेम को व्यक्त करेंगे। हकीकत तो आप पेश कर सकोगी। और महामंडलेश्वर तो अस्तित्व ने बना ही दिया है। और उसकी व्यासपीठ की श्रद्धा देखो साहब कि जब उज्जैन में निर्णय हुआ कि महामंडलेश्वर का पद का निर्णय जब हो गया। सरकार ने भी कह दिया; अखाड़ों ने भी कुछ वो करते हुए हां कर दी तो भी उसने निर्णय नहीं किया। मदन को कहा कि बापू कहां है? एक बार मुझे बात करा दो। मदन ने कहा, 'बापू मेरी गाडी में ही है।' बोले, 'बात करा दो।' मुझे पूछा, 'बापू, मैं मंडलेश्वर होऊं?' मैंने कहा, होना ही चाहिए। आप हो। अच्छा बोलती है। अच्छा लिखती है। विदुषी भी है। तो कभी आप भी कथा भी कह सकती है। जब योग हो। और हम तो केवल कथक है, कथ्थक नहीं कर सकते! आप चाहे तो कथा कहते-कहते नृत्य भी कर सकते हैं। आप की कथा, वो भी अति विचित्र होगी।

मैं छोटा था। तलगाजरडा के राममंदिर में साधु के, वैष्णव पूजारी साधु के नाते हमारा राम या कृष्ण मंदिर के पूजा का अधिकार रहता था। एक प्रवाही परंपरा। मैं जब आरती करता था राममंदिर में, करीब दस साल के आसपास मेरी उम्र रही होगी। उस समय मैंने देखा था; किन्नर समाज आते थे और राम के सामने नर्तन करते थे। और वो एकमात्र

राम मंदिर के पूजारीओं से ही याचना करते थे। ये हम से कहते थे कि हम को दक्षिणा दो। तो मैं तो दक्षिणा देने आया हूं। ये नौ दिन कोई उपकार करने नहीं आया हूं। आपने मेरे राम को रिझाया है। मेरे कृष्ण को रिझाया है। और सब कुछ इतनी बड़ी तपस्या करके आपने ठाकुर के सामने अपना नर्तन पेश किया है। तलगाजरडा का एक बावा का बच्चा, एक पूजारी के रूप में मैं इस समाज की दक्षिणा पेश करने आया हूं। अब जिम्मेदारी आप की बढ़ती जा रही है। ये तो मेरे विचार मैंने पेश किया है कि यदि चाहे तो महामंडलेश्वरजी कथा भी कह सकते हैं और ज्यादा अनुभव के साथ कह पाएगी। नर्तन के साथ कह पाएगी। नब्बे प्रतिशत मेरा पक्का वचन कि आप जब भी कथा शुरू करे अथवा तो दो-पांच दिनों की प्रवचन श्रेणी करेंगे तो तारीख पहले बताकर करना तो दीप प्रज्वलित मोरारिबापू करेगा। आप की पोथी की पहली यात्रा मैं उतारूंगा।

तो ये परमात्मा की अति विचित्र कृति है। उसको हम ठीक से नहीं पढ़ पाएंगे। पढ़ेंगे तो भी उसके अर्थ करेंगे, शब्दार्थ करेंगे। भावार्थ और अनुभावार्थ तो केवल वो ही कर सकेंगे। ये स्वीकार करना चाहिए। तो परमात्मा की जो अति विचित्र कृति है। ऐसी कितनी अति विचित्र कृतियों का मेरे पास एक लिस्ट है। उसमें सब से पहले विचित्र कृति है शिखंडी। वो तो 'महाभारत' में ओलरेडी है। शिखंडी मूल स्त्री था। आप को ये याद होगा, द्रुपद का पुत्र है शिखंडी। उसको पुरुष के रूप में घोषित कर दिया गया था। और पुरुषोचित सब संस्कार किया गया था। शिखंडी नहीं था, शिखंडिनी थी। बड़ा विचित्र इतिहास 'महाभारत' का है। महादेव जो अपने उपासक शिशु को जन्म देने के लिए स्त्री बने थे। तमिलनाडु की कथा है। तमिलनाडु के मंदिरों में विचित्र कथानकों से उठाया गया ये प्रसंग है कि महादेव अपने एक उपासक के बच्चे को जन्म देने के लिए स्वयं स्त्री का रूप लेकर, एक दायण का रूप लेकर प्रसूति के सहयोगी बने। तीसरा एक अभिप्राय ये सुनिए ग्रंथों से, लोककथाओं से, पौराणिक ग्रंथों से; चुडाला नामक एक स्त्री, शुद्धधन उसका पति। चुडाला बहुत ज्ञानी थी और उसका पति ज्ञान में रुचि रखता था बहुत। उसमें वैराग बहुत था। लेकिन ये पत्नी को पत्नी समझता था, ज्ञानी नहीं समझता था। इसलिए वे उससे ज्ञान लेने में जरा संकोच भी महसूस करता था। अथवा तो सोचता था कि ये क्या ज्ञान देगी? ये तो मेरी पत्नी हैं। वो पत्नी समझ रही है कि ये चुक रहा है। पति होने के नाते ये चुका इसीलिए वो चुडाला इतनी योग प्रक्रिया में सिद्ध थी कि वो पुरुष बनती हैं। पुरुष बनकर के उनके साथ चलती हैं। और वो उसको ज्ञान देती है। अति विचित्र भगवंत गति अथवा तो कृति। विष्णु भगवान ने कई बार देवताओं के लिए, दनुजों के लिए स्त्री का रूप धारण

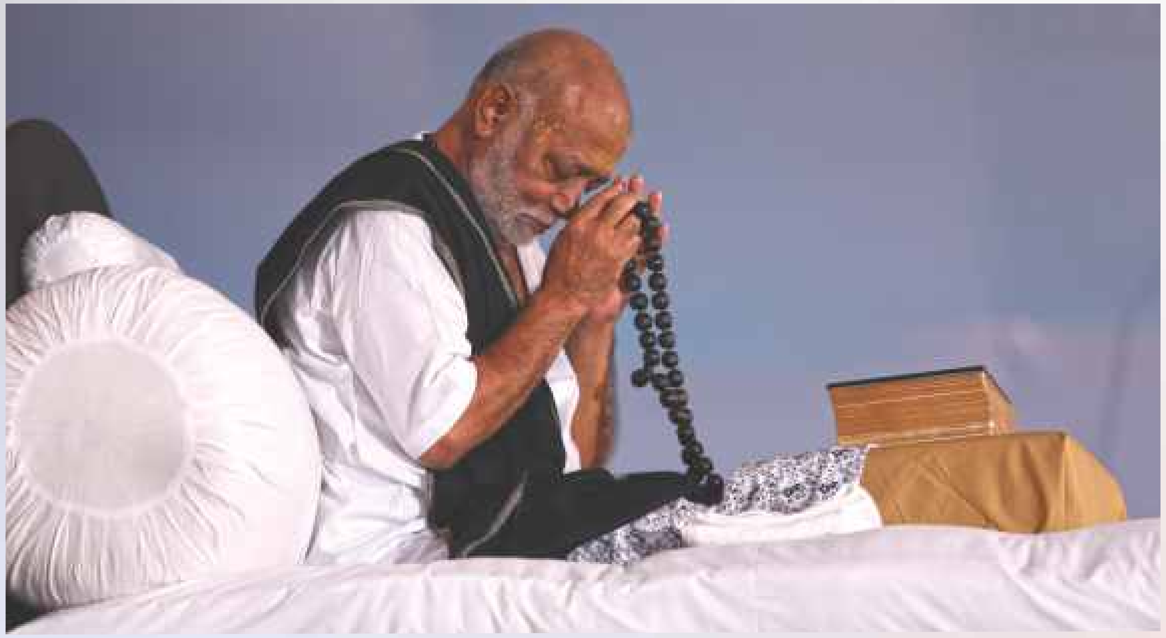

किया। मोहिनी रूप लिया है, महादेव के प्रसंग में, देव-दनुज के प्रसंग में। कृष्ण का रास देखने के लिए ये गोपी बनकर ओलरेडी गये थे स्त्री बनकर।

ओर एक कथा है ये बंगला की कथा है। काली माता, महाकाली, आपने वो चित्र देखा होगा जब दुराचारी बढ़ गये तो माता अपना खप्पर लेकर के निकलती है दुराचारियों को मारने के लिए। और उसके मुंड की माला पहनती हैं। और कालिका के नीचे जो गिरा हुआ एक आदमी वो शंकर हैं। शंकर के उपर उसका चरण है। शंकर भगवान ने एक दिन काली को कहा कि कोई ऐसी रचना करो ना कि मैं स्त्री रूप में आऊं और आप पुरुष रूप में आओ। तो देखिए, काली क्या कहती है? वेइट करो, प्रतीक्षा करो; द्वापर आने दो। मैं कृष्ण बनुंगी और महादेव, आप राधा बनिएगा। बंगालियों की लोककथा, जिसमें काली स्वयं कृष्ण होती है और शंकर स्वयं राधिका बनते हैं। 'अति विचित्र भगवंत कृति।' गजब है ये सृष्टि! और ये केवल दंतकथाएं नहीं, जरूर कोई लोककथाएं हैं। और एक ही बात से उसका समाधान पाया जाता है, 'अति विचित्र भगवंत गति।'

तो बाप! परमात्मा की, परमतत्त्व की नीति अति विचित्र; उसकी कार्यशैली, उसकी रीति अति विचित्र; उसकी गति अति विचित्र; उसकी रति, उसको प्रेम करने की पद्धति अति विचित्र और उसकी कृति, उसकी रचना अति विचित्र। तो किन्नर समाज के लिए 'किं नर?' क्या तो ये केवल नर है? या क्या तो ये नर है? ये प्रश्नवाचक शब्द बन जाता है। और 'महाभारत' के 'आदि पर्व' में तो मेरे पास एक माहिती आई सो मैं आप को पढ़कर सुना दूं। किन्नरों की कथा महिमा गाई है 'महाभारत' ने बाप! मुझे खास प्रिय लगी सो मैं आप को बता दूं। किन्नर प्रेमी क्या कहते हैं? वो कहते हैं, हम शाश्वत प्रेमी और प्रिया है। मानो पूरा सूफ़ीवाद आ गया! शाश्वत, नाशवंत नहीं। किन्नरों की जो विचारधारा है। 'महाभारत' जिसको मोहर लगा रहा है। हम शाश्वत प्रेमी और प्रिया है। हम कभी बिलग नहीं होते। जैसे राधा बिन श्याम आधा। ये संयुक्त रहते हैं। ये किन्नरों की जो विचारधारा यहां प्रेषित 'महाभारत' में। हम शाश्वत प्रेमी प्रिया है। हम कभी बिलग नहीं होते। हम कायम के लिए पति-पत्नी है। ना विधुर होने का प्रश्न, ना विधवा होने का प्रश्न है। कितनी ऊंचाई पर व्यास ले जा रहे हैं! एक-एक सूत्र एक से उपर जा रहा है। हम शाश्वत रूप में पति-पत्नी हैं। अद्भुत बात करते हैं किन्नरसमाज। हम कभी माता-पिता नहीं बनते। शाश्वत पति-पत्नी, शाश्वत प्रेमी और प्रिया। कभी बिलग नहीं होंगे हम। लेकिन हम कभी माता-पिता नहीं बनते। हमारी गोद में संतान नहीं होता। अब कारण देखिए साहब! कारण ये है कि हम दोनों के बीच में कोई दूसरा प्रेम में भाग पड़ाये ऐसा हम चाहते नहीं। हमारे प्रेम में कोई हिस्सा मांगे नहीं। क्योंकि बच्चा होने के बाद स्वाभाविक है, प्रेम वहां प्रवाहित हो जाएगा। क्या शाश्वत प्रेम की उद्घोषणा! व्यास गज़ब है! 'महाभारत' ने तो गज़ब कर दिया है बाप!

कुछ प्रश्न आपके पहले ले लूं। 'बापू, स्कूल भी नहीं बैठा इतना छोटा बच्चा उसकी मम्मी के हाथों से मोबाइल लेकर कथा सुनता है आपकी। और मम्मी मोबाइल मांगती है तो बालक रोता है और धमकी देता है, बापू को सुनने दो, मोबाइल नहीं दूंगा! तेरा फोटो जो मोबाइल में है, डीलिट कर दूंगा!' उसकी माँ को धमकी देता हैं! 'बापू, बालक अभी समझता नहीं तबसे कथा प्रेम!' साहब! कोई चेतना कहां-कहां से आती हैं! ये संस्कार उतर रहे हैं। ये बड़ी अच्छी बात है कि छोटे-छोटे बच्चें भी कथा सुनते हैं। मेरे पास कई लोग आते हैं कि कई बच्चें ऐसे हैं कि रोते हैं, धमाल मचाते हैं लेकिन जैसे टी.वी. शुरू करे, कथा करे, बापू...बापू! बस चुप! ये तुम्हारे संस्कार हैं। तुम्हारी चेतना का मैं स्वागत करता हूं।

'बापू, सच-सच बताओ, किन्नर के जीवन की साधना और सिद्धि क्या होती है?' किन्नर की साधना गायन है और नर्तन है। उसको ओर कुछ करने की जरूरत ही नहीं। वो शृंगार सजकर गायन करे, नर्तन करे। नृत्य बड़ी साधना है साहब! किन्नर की यही साधना है। 'आप कथाकार हो या किन्नर हो?' यार! किन्नर होनेकी जरूरत नहीं। किन्नर तो अपने आप हैं। उसको आदर दो; उसको सन्मान करो; उसको प्रणाम करो तो भी बहुत है। और कथाकार का ये कर्तव्य है कि ये करे। मेरी व्यासपीठ कर रही है। 'न मे जातिभेद:।' शंकराचार्य का बस समझ लो। नान्यतर, नारी, नर कोई भेद नहीं हैं। जगद्गुरु ने सिखाया। हम चरितार्थ न कर पाए बात और है लेकिन हमारे बाप ने ये सिखाया हैं। 'न मे मृत्युशंका न मे जातिभेद:।' जवाब ओलरेडी शिव देते हैं। सब शिवरूप हैं। 'आप कलाकार हो

या पागल?' खबर नहीं हैं। 'आप मनुष्य हैं? मानव हैं?' मानव बने रहने की कोशिश कर रहे हैं। 'साधु हो कि भिक्षुक हो?' दोनों। साधु बनने का भरचक प्रयास कर रहा हूं और भिक्षुक भी हूं। जहां से शुभ विचार मिलता है ले लेता हूं। वैसे परमात्मा की बहुत कृपा है। आनंद से जी रहे हैं। जहां जाउं वहां गंगाजल आ जाता है। भिक्षा के रुप में हवा तो हनुमान भेजता हैं। उतारा ये लोग निश्चित करते हैं। और दो-तीन पेर कपड़े भी कमरे में जाउं उसके पहले ओलरेडी तैयार पड़े रहते हैं। भिक्षुक ही हूं। तुम्हारे पहनाए कपड़े पहनता हूं। तुम्हारी रोटी खाता हूं। मेरी गंगा का गंगाजल पीता हूं। पवनपुत्र का श्वास और विश्वास लेता हूं। 'इन्कम टेक्स भरते हो कि सरकारी सुविधा पाते हो?' सरकारी सुविधा से मेरा क्या लेना-देना? और इन्कम टेक्स क्या? कोई खाता नहीं मेरे पास। और पैसे नहीं। मैं क्या भरूं? और सरकारी सुविधा मुझे क्या चाहिए? हां, भीड़ होती है तो व्यवस्था के लिए, मेरे लिए नहीं। कोई गिर न जाए। कोई कुचल ना जाए बच्चें-बूढ़ें इसीलिए बाकी मुझे क्या सुविधा चाहिए? मुझे कोई सुविधा नहीं चाहिए। बिलकुल नहीं। मुझे सुविधा अच्छी भी नहीं लगती। साधु को साधु रहने दो। समाज बिगाड़ देता हैं। ये ट्राफिक में पुलिस वाहन आ जाती है वो तो व्यवस्था के लिए। मुझे क्या चाहिए? आप लोग मुझे चलने नहीं देते तो ये व्यवस्था का प्रश्न उठ गया! और कोई कारण नहीं। आपके जैसा संसारी आदमी हूं। जैसे आप हैं। मैं मनुष्य हूं आपके जेसा हूं।

अब महत्त्व का प्रश्न आया। ये बहुत महत्त्व का है, 'बापू, सब जाने दो, इतना बता दो, हम आपको कब भूल पाएंगे?' असंभव! और ये तुम भूल भी जाओ तो तुम्हें हक हैं। ये फिल्म की पंक्ति बोलकर सुनाउं? आप भूल भी जाओ तो आपको हक हैं।

तुम मुझे भूल भी जाओ तो ये हक है तुमको,
मेरी बात और है मैंने तो मुहोब्बत की हैं।

हां, बिलकुल मैं कह सकता हूं, मेरी बात और है, मैंने तो मुहोब्बत की हैं। मैंने मेरे श्रोताओं से ममता की हैं। मैंने प्रेम बांटा हैं। आप भूल जाओ तो आपको ये हक है। लेकिन मेरी बात और हैं। व्यासपीठ ने प्यार किया है। जमाने को महोब्बत दी हैं, ममता दी हैं। दिल से कह रहा हूं। यस, बड़ा प्यारा गीत हैं साहब! कौन कहता हैं इसे फिल्म का गीत? ये तो गोपीगीत हैं। बस, ये एक श्रोता की जिज्ञासा थी। कुछ शे'र मुझे दिला ने दिया हैं -

तुझे रुसवाई का डर है तो चलो यूंही सही,
कि तेरा होके रहूं, पर तेरा ना लगूं।

राजेश रेड्डी का शे'र है-

वो जो मेरे करीब से हंसकर गुजर गए।
कुछ खास दोस्तों के चेहरे भी उतर गए!

भगवान शिव हरि इच्छा को शिरोधार्य करके एक वटवृक्ष के नीचे बैठकर सोचने लगे, नियति ने जो निर्णय किया होगा वो ही होगा, मैं क्यों तर्क-वितर्क करूं? ऐसा विश्वासी निर्णय करके वटवृक्ष के नीचे बैठकर हरिस्मरण कर रहे हैं। और सती दक्षकन्या राम ब्रह्म है कि सामान्य व्यक्ति है, उसकी परीक्षा करने हेतु राम के पास जाती हैं। सती ने सीता का रूप लिया। राम सती को सीता के रूप में देखकर पहचान गए। रामजी ने हाथ जोड़कर प्रणाम किया, मैं दशरथ का आत्मज राम आप को प्रणाम करता हूं। मेरे पिताजी शिवजी कहां हैं? आप अकेले क्यों आई? सती पकड़ी गई! एक ग्लानि से भरा हृदय लिए सती शिव के पास आई। शिव मुस्कुराकर पूछते हैं, देवी, आपने कैसे परीक्षा की? सती झूठ बोली, मैंने कोई परीक्षा नहीं ली। आपकी तरह मैंने भी प्रणाम किया। झूठ बोल रही है। महादेव ने आंखें बंद करके अंत:करण के ध्यान में देखा तो सती सीता का रूप लेकर गई। शिव सोचने लगे कि मेरी पत्नी सती ने जो सीता का रूप लिया तो सीता तो मेरी माँ लगती हैं। अब सती से मैं जो गृहस्थ जीवन रखूं तो भक्तिमार्ग खंडित हो जाएगा। राम पर छोड़ दिया कि प्रभु मुझे क्या करना चाहिए? मेरे भाई-बहन, जब डांवाडोल चित्त हो तब जल्दी कोई निर्णय मत करना जीवन में। तब अंतर्मुख होकर के भीतर के हरि पर छोड़ देना। जो आवाज़ आए वो निर्णय करना। जल्दी मत करना। हमारी प्रतिक्रिया भी जल्दी होती है। हमारे कुछ निर्णय भी जल्दी होते हैं। हमारे निर्णय हमारे होते हैं। हरि का निर्णय हरि का होता हैं। इसलिए साधक को चाहिए कुछ ऐसी डांवाडोल स्थिति में थोड़ा रुके, थोड़ा धैर्य रखे। इतनी भी जल्दी निर्णय न करे कि गलत हो जाए। शिवजी ने हमको ये सिखाया। शिवजी शांत चित्त से बैठे। राम का सिमरन किया और अंदर से ही राम की आवाज़ आई और राम ने जो प्रेरणा दी उसी मुताबिक शिवजी ने निर्णय कर लिया, जब तक सती का ये शरीर रहेगा, मेरी और उनकी कोई भेंट नहीं होगी।

विश्वनाथ कैलास पहुंच गए। अपनी प्रतिज्ञा का स्मरण करके शिव कैलास के भवन में नहीं गए। मुझे लगता है, ये आंतर कैलास की बात हो सकती है, जहां विश्वास कायम निवास करता है। शिव बैठ गए। 'मानस' में लिखा है, सतासी हजार साल बीत गए। शिव समाधि में बैठे हैं साहब! ये एक करुणा है। शिव ने सती को इस भक्ति के कारण बिलग कर दिया। लेकिन शिव भाग नहीं गए। वहीं बैठे रहे। सद्‌गुरु कभी भागता नहीं। वो आश्रित के द्वार पर समाधि लगाकर बैठता है। कोई बुद्धपुरुष कभी भागता नहीं। वो जागता रहता है कायम। इसलिए मैं इस पक्ष का यात्री हूं, मार्गी हूं कि हमारे जीवन में कोई ऐसा बुद्धपुरुष होना चाहिए जो द्वार पर डटा रहे। दिखे भले ना। सतासी हजार साल के बाद शिव जागे। 'राम राम राम' बोलने लगे। रामनाम महामंत्र का उच्चारण सुनते ही सती को लगा कि जगतपति जागे हैं। विपत्ति आदमी के विवेक को पुष्ट करती है। आदमी को धीरे-धीरे विनम्र बनाती है विपत्ति। दु:ख मिलन कराता है, सुख बिलग कर देता है। मैं ये नहीं कहता कि सुख का अनादर करो। प्रभु के प्रसाद के रूप में जो आए उसको कुबूल करो लेकिन विवेक रखो। विवेक हो तो एक काम करना चाहिए कि सुख जब भी मिले तब खुद अपने का विचार न करें। मेरा सुख सब के लिए हो। तब मरहूम मरीज़साहब याद आते हैं। इतने बड़े गुजराती भाषा के शायर मरीज़साहब! बिलकुल फ़कीर जैसा आदमी! मैंने उसको रूबरू सुना है।

बस एटली समझ मने परवरदिगार दे।
सुख ज्यारे ज्यां मळे त्यां बधाना विचार दे।
दुनियामां कंईकनो हुं करजदार छुं मरीज़,
चूकवुं बधानुं देण, जो अल्लाह उधार दे।

बाप! सुख का स्वभाव है बंटवारा। दु:ख का स्वभाव है इकठ्ठा करना; बहुधा, बहुधा। तो सुख का अनादर न करें। परमात्मा की कृपा से, प्रामाणिक प्रयास से यदि मिल गया तो इतना तो हम जरूर सोचे कि मेरे सुख में सब का हिस्सा हो। सती को इतने सालों के दु:ख ने विनम्र बनाया। सती ने प्रणाम किया। मुस्कुराते हुए शिव ने सती को सन्मुख आसन दिया। शिव रसप्रद कथा कहने लगे। उसी समय सती के पिता दक्ष ने यज्ञ का आयोजन किया। इस बड़े यज्ञ में सभी बड़े देवताओं को, यक्षों को, किन्नरों को, नाग को, हरएक को निमंत्रित किया शंभु, विरंचि और विष्णु को छोड़कर। क्योंकि दक्ष बदला लेना चाहते थे। सती का ध्यान विमान में गया। 'महाराज, बताइए, ये देवगण कहां जाते हैं?' आप के पिता के घर यज्ञ है। और देवी, जहां आमंत्रण न हो वहां जाना भी नहीं चाहिए।' सती ने जीद की। शिव ने कहा कि ठीक है। सती पिता के यज्ञ में गई। दक्ष के भय के कारण किसीने सती का भी सन्मान नहीं किया। सब मुंह फ़ेरने लगे। मध्य मंडप में जाती है। भगवान शंकर का यज्ञभाग कहीं नहीं देखा तो सभा में सभी ऋषिमुनिओं और देवताओं को संबोधित करते हुए सती ने कहा कि इस यज्ञ में जिन्होंने भगवान शिव का अपमान किया है, निंदा की है इन सब को भलीभांति फल मिलेगा। योगाग्नि में सती ने अपना बलिदान दे दिया। हाहाकार हो गया! दक्ष की दुर्गति हुई। सती जल गई। जलते समय ईश्वर से मागती है, हे प्रभु, जनम-जनम मुझे शिव ही पति के रूप में प्राप्त हो। इसी कारण सती पार्वती के रूप में हिमालय के घर में, शैलराज के घर शैलजा बनी। पर्वतराज के घर पार्वती बनी और पार्वती के रूप में कन्या का जन्म। पूरे हिमालय में उत्सव शुरू हुआ। ऋषिमुनिओं के वृंद-वृंद आने लगे। मैं मेरे समाज को कहता रहता हूं कि परिवार में कन्या का जन्म हो तब ज्यादा उत्सव मनाना। जब परिवार में कन्या का जन्म होता हे तब भगवान कृष्ण ने 'भगवद्‌गीता' में नारी में जो सात-सात विभूतियां है, ऐसा जो योगेश्वर का वचन है, ऐसी सात विभूतियां आती है। एक कन्या आती है, तो सात विभूतियां आती है। बड़ा उत्सव किया। पार्वती के जन्म की वधाई गाई गई है।

परमतत्त्व की नीति अति विचित्र होती है। यद्यपि परमतत्त्व को कोई नीति-अनीति नहीं होती। उसकी रीति, उसकी कार्यशैली, उसकी पद्धति अति विचित्र होती है। नीति, रीति, रति; परमात्मा की प्रेम करने की पद्धति भी अति विचित्र हैं। हमारे प्रेम की रीत, तथाकथित प्रेम की पद्धति जो संसार में चल रही है वो या तो आकांक्षायुक्त है; आकांक्षा पूरी ना हुई तो प्रतिशोध के रूप में हैं। परम तत्त्व की रति ऐसी नहीं है। परम की गति भी परम विचित्र हैं। ये परमतत्त्व अधोगति और उर्ध्वगति से पर हैं। पांचवां सूत्र है कृति; परमतत्त्व की कृति अति विचित्र हैं। इसमें से एक उसकी कृति है किन्नर। अति विचित्र कृति है ये।

एक दिन नारदजी पधारे हैं। नगाधिराज हिमालय और महाराणी मैना ने नारदजी से कहा, मेरी कन्या का नामकरण करो और हाथ की रेखा देखकर बताओ कि मेरी सुंदर बेटी को वर कैसा मिलेगा? नारदजी ने नामकरण किया, 'उमा अंबिका भवानी।' उसका नाम उमा, अंबिका, भवानी ये सब हैं। पार्वती के हाथ की रेखाएं देखकर देवर्षि नारद ने कहा, उसको पति ऐसा मिलेगा जो अगुण होगा; अमान होगा; माता-पिता ही जिसके नहीं होगे; भिक्षा मांगकर खाता होगा; दिगंबर होकर रहता होगा। माता-पिता रो पड़े कि बाबा, इतनी सुंदर कन्या और पति ऐसा बांवरा! भवानी समझ गई कि बाबा मेरे पति के बारे में जो बोल रहे हैं वो शंकर के सिवा कोई ओर हो ही नहीं सकता। तुम्हारी बेटी को शिव मिले तो दूषण भूषण बन जाएंगे। उसके लिए तप करे। भवानी ने बहुत कठिन तप किया। बहुत तप किया तब आकाशवाणी ने जाकर कहा कि हे पार्वती, तुझे शिव मिलेंगे।

सती के वियोग में शिव भी विशेष वैरागी हो गए। कहीं रामकथा सुनते हैं। कहीं रामकथा सुनाते हैं। कहीं ध्यान में बैठ जाते हैं। भगवान प्रगट हुए। शिव को जगाए, 'मैं आप से एक मांग करने आया हूं। आपने जिस सती का त्याग किया वो हिमालय के घर पार्वती के रूप में प्रगट हो चुकी है। पार्वती का पाणिग्रहण करें।' बोले, 'महाराज, जो आप की आज्ञा शिरोधार्य करता हूं।' अवकाश में तारकासुर नामक एक राक्षस हुआ जिसने दैवी समाज को बहुत पीड़ा देना शुरू किया। ब्रह्मा ने कहा, एक ही उपाय है। शंकर का ब्याह हो और शिव के घर पुत्रजन्म हो तो शिवपुत्र ही तारकासुर को निर्वाण देगा। देवताओं ने कामदेव को बुलाया और कामदेव ने शिवसमाधि तोड़ने की बड़ी योजना की। महादेव बैठे हैं। स्वार्थी देवताओं का झुंड आया। ब्रह्मा ने चतुराई की, किसी की शादी हो तो बाराती बनने का आनंद आए। तो हमने कहा कि चलो, शंकर को प्रार्थना करें कि वो शादी करे। चतुराई की! ये नहीं कहा कि आप शादी करो, बेटे का जन्म हो, तारकासुर मरे और हम भय से मुक्त हो। स्वार्थी लोग हमेंशा नेटवर्क बनाते हैं! शंकर कहे, बच्चों, आप कहो और मैं घोड़े चढ़ जाऊँ, ऐसा सामान्य नहीं हूं। लेकिन मेरे बाप ने मुझे कहा कि शादी करो इसीलिए करूंगा बाकी तुम कहो और मैं चलूं? शिव ने कहा, आप कहते हो तो शादी करेंगे। देवता खुश होकर चले गए।

बाबा की तैयारी होने लगी। भस्मलेपन हुआ। जटा का मुकुट; सांप का आभूषण; हाथ में बिछु; यज्ञोपवित सर्प की। एक मृगचर्म लपेटा। नंदी पर बाबा बिराजमान हुए हैं। हाथ में त्रिशूल धारण किया हैं। और बारात चली। देवतागण मजाक कर रहे हैं। दुनियाभर से भूत-प्रेत आये। भगवान शंकर के गले में माला पहनाने गये ही और रुद्र रूप देखकर सब बेहोश हो गये, गिर पडे! मैना राणी के प्रवेशद्वार पर गये। और रुद्र का रूप देखकर ही पार्वती की माता बेहोश हो गई! नारद, सप्तर्षि और हिमाचल आये। बड़ा गंभीर मामला हो गया था। नारद समझ गए कि आप मुझपे नाराज है लेकिन हे महाराणी मैना, आप जिसको पुत्री कहते हो, असल में वो तुम्हारी भी माँ हैं। तुम्हारी ही नहीं, पूरे विश्व की माँ हैं। जगदंबा है, परांबा हैं। पार्वती के चरणों में सब प्रणाम करने लगे। शिवतत्त्व क्या है और शक्तितत्त्व क्या है ये कोई नारद जैसा गुरु समझ दे तभी पता लगता हैं। इसलिए चाहिए कोई बुद्धपुरुष, कोई सद्गुरु। नारद गुरु हैं। उसने ये खुलासा किया। शिव के प्रति एक नया आदर प्रगट हुआ। मेरा महादेव दुल्हे की सवारी में निकला अद्‌भुत! स्वर्ण सिंहासन पर भोलेनाथ दुल्हे के रूप में विराजमान हैं। अष्ट सखियां भवानी को साज शृंगार करके ले आई हैं। पाणिग्रहण हुआ। लोकिविधि और वेदविधि से विवाह संपन्न हुआ। हिमाचल की पुत्री शिव को समर्पित हुई।

बेटी की बिदाई का अवसर आया। नगाधिराज हिमालय, महाराणी मैना, हिमाचलवासी उदास मुख खड़े हैं क्योंकि बेटी की बिदाई हैं। पालखियां तैयार हुई हैं। कन्या चाहे हिमालय की बेटी हो, चाहे जनक की हो, चाहे पालक पिता कण्व की बेटी शकुंतला हो, लेकिन कन्या की बिदाई किसको ढीला नहीं करती? नगाधिराज हिमालय की आंखों में अश्रुपात शुरू होते हैं। बेटी बिदा ले रही हैं। भगवान शिव पार्वती को लिए कैलास पहुचें। यक्ष, गंधर्व, किन्नर सबने भगवान शिव का स्तोत्रों में गायन किया। समय मर्यादा पूरी हुई है। पार्वती ने पुत्र को जन्म दिया। कार्तिकेय का प्रागटय हुआ। परम पुरुषार्थ ये कार्तिकेय हैं। तुलसी ने शिवचरित्र की कथा गाई। उसके बाद एक बार शिव कैलास के वेदविदित वटवृक्ष की छाया में सहजासन में बैठे हैं और पार्वती शंकर के चरणों में बैठकर रामकथा की जिज्ञासा करती है। और कैलासपीठ से शिव भवानी के सामने रामकथा शुरू करते हैं। उसकी चर्चा हम कल करेंगे।

किन्नर समाज मनुष्य से उपर उठा हुआ समाज है

'मानस-किन्नर', जो नव दिवसीय रामकथा का केन्द्रबिंदु है, जिस पर 'मानस' के आधार पर, अन्य ग्रंथ-संदर्भ के आधार पर सात्त्विक-तात्त्विक चर्चा हो रही है। कुछ जिज्ञासाएं भी हैं। यथामति यथासमय मैं कोशिश करूंगा। एक बात ये है, बापू, कल आपने कहा कि स्वर्ग की अप्सरा उर्वशी ने किसी माँ से जन्म धारण नहीं किया है। यस, उर्वशी का जन्म किसी माँ से नहीं हुआ है। उर्वशी को हमारे ग्रंथकार अयोनिज बताते हैं। ये अयोनिजा है। उसके पीछे एक छोटी-सी कथा है। मैं कल कथा के आरंभ में कह रहा था, परमात्मा की कृति अतिविचित्र है।

कथा ऐसी है बाप! बदरीनारायण, बदरीक्षेत्र, बदरीवन जिसको हम बदरीनाथ-बदरीकाश्रम कहते हैं, वहां नर-नारायण भगवान तपस्या करते हैं। नर-नारायण को हमारे ग्रंथों में दो महात्मा जैसे भी प्रस्तुत किया है। किसी ग्रंथ में दो तपस्वी, विशिष्ट तपस्वी के रूप में भी प्रस्तुत किया है। नर-नारायण हम कृष्ण और अर्जुन को भी कहते हैं। साधक और सिद्ध को भी कहते हैं। आश्रित और आश्रयदाता ये दोनों के एक आध्यात्मिक संबंध को भी हम नर-नारायण कहते हैं। कई सांप्रदायिक मंदिरों में भी नर-नारायण की मूर्तियों स्थापित भी है। और लोग उसको नर-नारायण कहते हैं। कुछ लोग संदर्भ बदल देते हैं! ये कलिप्रभाव है, तो कुछ न कुछ संदर्भ में कर देते हैं! खैर, ये सब विवाद की बातें हैं। हमारा कोई विषय भी नहीं, स्वभाव भी नहीं। तो नर-नारायण बदरीकाश्रम में तपस्या करते हैं। बड़े तपस्वी है। याद रखना मेरे भाई-बहन कि इस दुनिया में ब्रह्मा की सृष्टि में जड़-चेतन कोई भी हो। इनमें से कोई विकारों से मुक्त नहीं है, मात्रा भेद है। कमजोरियां सबमें होती है। बड़े-बड़े तपस्वियों में भी होती है। हां, मैं ये न कहूं कि कोई माई का लाल होता ही नहीं। लेकिन ये विश्व का अपवाद है। सिद्धांत नहीं। जिसको हरि ने बचाया होगा। लेकिन नर-नारायण ऐसे हैं जहां कोई विकार छू न सका।

ये दोनों अलिप्त रहे और नियम ऐसा है स्वर्ग के देवताओं का, नियम नहीं स्वभाव है ये लोगों का कि कोई कठिन तपस्या पर पहुंचता है और उसका तपभंग नहीं होता, कोई विकार वहां प्रवेश नहीं कर पाता तब ये देवगण उसमें विक्षेप डालने की कोशिश करते हैं। देवराज इन्द्र ने अपनी अप्सराओं को बदरीकाश्रम भेज दिया। और सबसे बड़ा तप भंग करने का साधन यही तो है। सभी अप्सराएं आई। इनमें जो नर था वो एकदम नारायण की आड़ में आ गया कि ये सब क्या है? अप्सराएं आई, नृत्य करने लगी, गायन करने लगी। सब चला। नर था वो नारायण की आड़ में आरक्षित है। उस समय नारायण ने दृष्टि भी नहीं की इन अप्सराओं पर। कहते हैं, पत्ता टूटकर नीचे आया। यहां एक तपस्वी है। उसमें कोई विकार नहीं है। विकार होता तो इतनी अप्सराएं उसका तपोभंग कर देती। लेकिन ये महात्मा उसी में डूबा है। अपनी जांघ पर एक स्त्री का चित्र अंकित करते हैं। उसी समय उसकी जांघ से एक स्त्री उत्पन्न हो गई। परमात्मा की कृति अति विचित्र है। मेरे कहने का मतलब परमात्मा तत्त्व नियम से बाहर है। आप कहे, कृष्ण झूठ बोले! नहीं, नहीं, कृष्ण नियमों में आबद्ध नहीं है। आबद्ध हो वो कृष्ण नहीं। कर्म मैं करूं, मैं भोगूं; आप करे, आप भोगे; ये नियम है। ईश्वर की व्यवस्था है। लेकिन अव्यवस्था ऐसी भी 'मानस' में लिखी है कि कर्म आप करे, फल मैं भोगूं; कर्म मैं करूं और आप भोगे। कर्म बेटा करे, बाप भोगे। कर्म बाप करे, माँ भोगे। तब अव्यवस्था है। और इसी व्यवस्था को मैं परमात्मा कहता हूं। मेरे पास 'मानस' का ठोस सबूत है।

और करे अपराध कोई, और पाव फल भोग।

अपराध कोई करे, फल कोई भोगे। कहां गई धर्म मीमांसाएं? सब अस्तव्यस्त! मेरे तुलसी ने लिखा, 'अति विचित्र भगवंत गति।' हरि, तेरी गति अति विचित्र है; तेरी कृति अति विचित्र है। बदरीकाश्रम का नारायण महात्मा अपनी जांघ पर पत्ते से, नोंक से नारी का चित्र बनाते हैं वहां से एक सुंदर स्त्री प्रगट होती है। ये अति विचित्र कृति है। ऊर्वशी प्रगट हो गई।

संक्षेप में कह दूं। ऊर्वशी जब प्रगट हो गई तो स्वर्ग की जो अप्सराएं आई वो सब चली गई कि इस आदमी पर कोई असर नहीं होगा! लेकिन वो स्त्री खड़ी हुई तो महात्मा को प्रणाम करके कहा कि आप की जांघ से मैं प्रगट हुई हूं। मेरा नाम आप दो। तब उसने कहा, मेरी उरु से तू प्रगट हुई है इसलिए तुम उर्वशी कहलाओगी। उरु मानी जांघ। महात्मा ने कहा, हम तो बदरीकाश्रम में रहनेवाले तपस्वी। तू यहां क्या करेगी? इससे अच्छा है कि तू स्वर्ग में चली जा। और ये ऋषि की जंघा से निकली हुई उर्वशी इन्द्र की प्रिय अप्सरा हो गई।

मेरे पास आज एक माहिती है। मैं स्वागत करता हूं इस माहिती का कि बापू, हमारे पास ऐसी माहिती है कि पांच कैलास हैं। हमारे यहां उत्तराखंड में तीन कैलास है। तिबेट में एक कैलास। हिमाचल प्रदेश में एक कैलास। पांच कैलास हैं। एक है मणि महेश कैलास जो उत्तराखंड में हैं। मुझे खयाल नहीं था। दूसरा कैलास है श्रीखंड कैलास, उसकी भी माहिती मेरे पास नहीं थी। तीसरा कैलास आदि कैलास के बारे में थोड़ी मुझे समझ है। जिस कैलास में हमने कथा की; मानसरोवर गए। ये सब कथाएं की। वो कैलास तिबेट के कब्जे में हैं। तो एक मणि महेश कैलास। एक श्रीखंड कैलास। एक आदि कैलास जो हमारा ही है लेकिन अब तिबेट के कब्जे में है; पडोसी राष्ट्र के कब्जे में वो कैलास। और मुझे आनंद हुआ इस माहिती से लक्ष्मीजी, आप तो जानते होंगे, एक कैलास है हिमाचल प्रदेश में जिसका नाम है किन्नर कैलास। मुझे अच्छा लगा। इससे एक ओर वस्तु सिद्ध होती है कि ये बहुत ऊंचाई पर रहनेवाला समाज है। इसको पतित मत समझो। ये गिरे हुए नहीं है। ये अपने कर्मों से गिरे नहीं है। ईश्वर की अति विचित्र कृति के कारण हम उसको गिरे हुए देखते हैं। ये उनका दोष नहीं है।

'रामचरित मानस' में तो आप के समाज को तुलसी ने कहा, सुकृति। आप बहुत पुण्यशाली समाज है। मैं नहीं कहता, मेरा गोस्वामीजी कहता है, 'सिद्ध तपोधन जोगी जन। किन्नर मुनि बसहिं सकल।' ये पुण्यशाली समाज है और शिव की सेवा करते हैं; शिव आराधना करते हैं। आदमी किसकी आराधना करता है उसीसे उसकी अवस्था का पता लग जाता है। दोरें-धागें की, वींटी की, परचा की आराधना करने से पता लग जाता है कि कितना सामान्य साधक है! और जिसने कैलास की साधना की है 'सेवहि सुख कंद' और वहां मेरे गोस्वामीजी शब्द लगाते हैं, 'सकल सुकृति हैं।' पुण्यश्लोक दस लोगों को कहा जाता है। अच्छा राजा हो, प्रजा की पूरी देखभाल करता हो। रजोगुण चारों तरफ घूमता हो लेकिन तपस्विता अंदर से बरकरार हो ऐसे राजाओं को हमारे ग्रंथों ने पुण्यश्लोक कहा है। ये सुकृति है। ये पुण्यशाली है। आप जीवन में ज्यादा मौन रखने का स्वभाव हो तो आप सुकृति है। दान देनेवाला सुकृति है ही। एक स्थान उसका भी है, यस। लेकिन आप मौन रहते हैं। भला-बुरा सब का सुन लीजिए। द्वेषमुक्त चित्त से कोई कुछ भी कहे फिर भी आप मुस्कुरा देते हैं तो आप सुकृति हैं। आप पुण्यश्लोक हैं। आप को हरिनाम में रुचि है; भीतर निरंतर हरिनाम से जुड़ा रहता है, ऐसा भजनानंदी पुण्यश्लोक है, सुकृति है। और मुझे बहुत अच्छा लगता है, जो एकाग्र होकर गाता है वो पुण्यश्लोक है। साहब! जो गाता है; लोकगीत क्यों न गाए, दोहा क्यों न गाएं, कुछ भी जो गाता है लेकिन इन्वोल्व होकर गाता है वो पुण्यश्लोक है। जितने गा रहे हैं ये सब सुकृति है। किन्नर तो उनके आचार्य माने जाएंगे साहब! जहां देखो वो गाने में कूद पड़ते हैं किन्नरसमाज!

ये कोई मोरारिबापू नई बात नहीं कर रहा है। देर हो गई है उसका पश्चात्ताप करो। बाकी कोई नहीं। ये होना चाहिए। जब होना चाहिए था, हुआ। मुझे लोग पूछते हैं, क्या इससे बहुत बड़ा फ़ायदा? मैंने कहा, फ़ायदे की हम सोचते ही नहीं। फल की तुम सोचो। हम को रस आ रहा है। फल मिले ना मिले, मारो गोली! रस आ रहा है। मेसेज़ तो जाए ना यार! और उसका कोई गौरव भी नहीं लेना है। जिस क्षण ये होना था, ये हो रहा है उसका हमें आनंद है। इस समाज के चेहरे पर कितनी मुस्कुराहट है साहब! गानेवाले समाज को यदि तुम मुस्कुराहट न दे सको तो तुमने क्या दिया? उसको मुस्कान दो, उसको मुस्कुराहट दो। ये सुकृति है। अपनी आय का कुछ हिस्सा प्रसन्नता से किसीको देना ये सुकृति है; ये पुण्यमय है; ये पुण्यशाली है। भूखे को ईश्वर समझकर प्रेम से भोजन कराना पुण्यश्लोक का परिचय है। ये पुण्यश्लोकपना है। तो कई ऐसे श्लोक है जो पुण्यश्लोक से लागू होते हैं।

मेरे भाई-बहन, ये सुकृति समाज है। पुण्यमयी समाज है। पुण्यवान समाज है। लेकिन परमात्मा की कृति

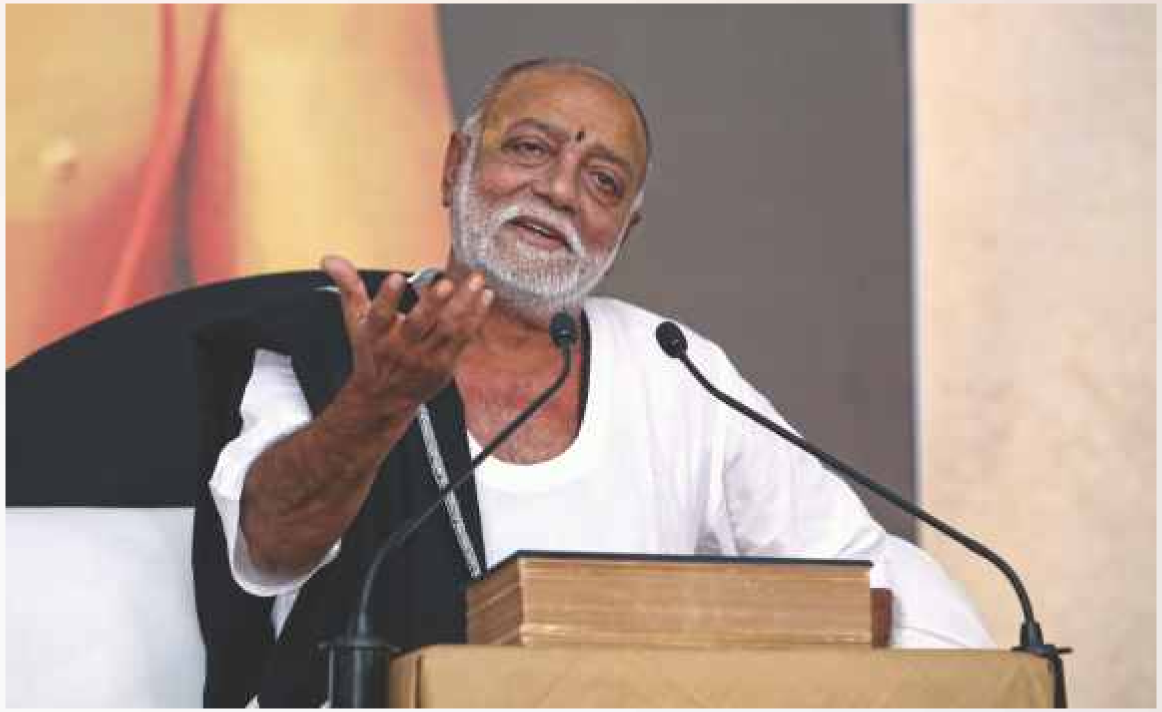

अति विचित्र है; अति विचित्र है क्योंकि अव्यवस्था का नाम परमात्मा है। भूल कोई करे, भोग कोई बने। भूल आश्रित करे, भोग बुद्धपुरुष बने। ये सब नियमों के बाहर हो जाता हे साहब! कश्यपपत्नी वनिता ने दो अंडे दिए। विचित्र कृति। समय पर वो अंडे फूटे ना तो एक अंडे को जबरदस्ती फोड़ा गया, और फोड़ा तो उसमें से एक बच्चा बाहर आया लेकिन उसका शरीर से नीचे का भाग नहीं था। अथवा तो उसका पैर विकलांग था। इसलिए आप जानते हैं कि सूर्य के सारथि को पंगु कहते हैं। ये विकलांग है; पंगु है। मेरे गोस्वामीजी उसका संदर्भ 'मानस' के आरंभ में ही देते हैं, 'मूक होइ बाचाल पंगु चढ़इ गिरिबर गहन।' ये पंगु कहां चढ़ गया? आसमान में। सूरज का सारथि बन गया। ये सूर्यवंदना का सोरठा है। तो कटि भाग के नीचे से अंग नहीं है, विचित्र है, विकलांग है। अति विचित्र कृति है। एक बार मांडव्य ऋषि बैठे थे क्योंकि ये अरुण ऐसा सारथि है सूर्य का की वो कभी छुट्टी नहीं ले सकता। वेकेशन नहीं ले सकता। सूर्य के सारथि ऐसे ही जो प्रकाश के उपासक होते हैं उसको छुट्टी नहीं होती। उसको कायम कर्मयोग में जुड़ना पड़ता है। वो वेकेशन नहीं ले सकता। उसका अपना जीवनकार्य करते रहना होता है। मने भगतबापु याद आवे-

आभना थांभला रोज ऊभा रहे,
अने वायुनो विंजणो रोज हाले.
उदय ने अस्तनां दोरडां उपरे
नट बनी रोज रविराज महाले.

तो बाप! 'मानस' की ये जो बात है। मैं आप से निवेदन करूं कि ये समाज और ये पूरी सृष्टि कुछ ना कुछ विकृतियों से बंधी हुई है। विकृति, कमज़ोरियां और विकारों से हम अपने बल से कभी भी मुक्त नहीं होंगे, हो पाएंगे। किसीके प्रसाद से ही हुआ जाएगा। ये साधन से नहीं होगा। कोई कृपा करे; 'तुम्हरी कृपाँ पाव कोइ कोई।' और मेरी व्यासपीठ एक बात अक्सर करती है कि किसी भी व्यक्ति का स्वीकार करो तो कमज़ोरियों के साथ करो। तुम कहो कि सौ प्रतिशत सोना, तो सोना होगा, आभूषण नहीं होगा। स्वर्ण होगा, गहना नहीं होगा। और खदान में पड़ा सोना कौन काम का? किसीके कंठ का गहना बने तभी स्वर्ण की महिमा है। और कहते हैं, सौ प्रतिशत जो सोना है उसका गहना नहीं बनता। कुछ तांबे का भाग डालना ही

पड़ता है। ऐसा सुना है। अब ये सोनी लोग जाने! हरि भजेगा उसके लिए शुद्धि का अवसर है। सुरसिंहजी गोहिल 'कलापी' बोले हैं-

देखी बुराई ना डरुं हुं शी फ़िकर छे पापनी।
धोवा बुराईने बधे गंगा वहे छे आपनी।
ज्यां ज्यां नज़र मारी ठरे यादी भरी त्यां आपनी।
ज्यां ज्यां चमन ज्यां ज्यां गुलो त्यां त्यां निशानी आपनी।

दीक्षित दनकौरी याद आया-

या तो कुबूल कर मेरी कमज़ोरियों के साथ।
या छोड़ दे मुझे मेरी तन्हाइयों के साथ।

तो ये किन्नर समाज तो मनुष्य से उपर उठा हुआ समाज है इसलिए समय पर उसका गुणगान गाया जा रहा है। गंधर्व, किन्नर, नाग, मनुष्य इन सब को तुलसीदासजी ने 'मानस' में काम प्रकरण में लिख दिया कि विकृतियां सब में होती है। कोई मुक्त नहीं है साहब! भजन करो और रघुवीर बचाए वो ही बच सकता है। तो किन्नरसमाज के लिए जो कुछ बातें होती हैं। धर्मक्षेत्र बनने के बजाय 'रामायण' कहती है, कर्मरथ बनो। क्षेत्र एक जगह जड़ हो जाता है। धर्म जड़ नहीं, फ़्रीज़ ना हो जाए धर्म, धर्मरथ हो धर्म। 'मानस' और 'महाभारत' में इतना ही फ़र्क है। 'महाभारत' है क्षेत्र, 'धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः मामकाः पांड्वा।' हमनें धर्म को क्षेत्र बना दिया! नाम तो अच्छा है 'धर्मक्षेत्र' लेकिन एक जगह बंधियार न बन जाए धर्म। इसलिए तुलसी ने एक नयी योजना बनाई और 'मानस' में धर्मक्षेत्र को धर्मरथ रखा। रथ गति का परिवाचक है। रथ चलता है। धर्म निरंतर प्रवाहित होना चाहिए। देशकाल के अनुसार उसमें संशोधन होना चाहिए। कभी-कभी धर्म बंद हो जाते हैं, संकीर्ण हो जाते हैं। 'रामचरित मानस' में जैसे धर्मरथ है।

तो बाप! 'मानस-किन्नर' की जो-जो कुछ बातें 'मानस' के आधार पर और कुछ संदर्भ लेते हुए आप के सामने मैं संवाद कर रहा हूं। ये किन्नरसमाज पुण्यवान समाज है। इसलिए हम सब मंगल प्रसंग में उसका सगुन चाहते हैं। क्योंकि सगुन पुण्यात्मा का लिया जाता है, पापात्मा का नहीं लिया जाता। इसलिए ये सगुनवंत समाज माना गया है। हां, मैं कल भी बोला हूं, आज फिर मैं बोलूं व्यासपीठ से कि किन्नरसमाज की ये दिव्यता जो है सो पेश कर रहा हूं। इसके साथ-साथ जिम्मेवारी भी किन्नरसमाज की बढ़ती जा रही है।

कथा का क्रम। आज रामजनम की कथा गानी है। तो उसी क्रम में आगे बढ़ूं। भगवान शिव कैलास पर एक बार सुखासन में, सहजासन में विराजित है। भल अवसर देखकर पार्वती शिव समीप गई। शिवजी ने अपनी प्रिया को आदर दिया और वाम भाग में उसको बिठाया। भवानी ने शिव के सन्मुख रामकथा पूछी। सुखासन-सहजासन में बैठे महादेव प्रसन्न हुए। पार्वती रामकथा पूछ रही है इसलिए शिव ध्यानरस में डूब गए। दो क्षण के लिए ध्यानरस में डूबे फिर बाहर आए और हर्षित होकर पार्वती के सामने रामकथा कहने के लिए प्रसन्नता से तैयार हुए। मन में अपने इष्टदेव का स्मरण किया। मन में मंगल भवन का स्मरण किया। अपने मन में इष्ट बाल राम को प्रणाम किया और हर्षित होकर महादेव ने वचन बोले, वचन उच्चारित किए और शंकर ने पहले शब्द जो बोले कैलास पर पार्वती के सामने कथारंभे वो वचनों को तुलसी ने चौपाई में लिख दिया-

धन्य धन्य गिरिराजकुमारी।
तुम्ह समान नहिं कोउ उपकारी।।

शिव के मुख से जो पहला शब्द उच्चारित हुआ वो 'धन्य' है। क्या मतलब? जो भगवान की कथा के निमित्त बन जाए; जो भगवान की कथा किसीके मुख से बुलवाने के लिए एक निमित्त बन जाए, तुलसी कहते हैं वो धन्य है। दो शब्द है हमारी भाषा के एक 'धिक्', एक 'धन्य।' धिक् होना है कि धन्य होना है? शब्द तो अस्तित्व के हैं। लेकिन दोनों मे से क्या होना है वो हमारे हाथ में हैं। धिक्कार पाना कि धन्यवाद पाना इन्सान के हाथ में है। आदमी स्वयं उसमें जागरुक रहे। आज शिव स्वयं कहते हैं धन्य, धन्य देवी, आप को धन्य है। और तीसरा शब्द, तुम्हारे समान कोई उपकारी नहीं है। मैं हर वक्त बोलता हूं, जो लोग निमित्त बने और समाज को भगवान की कथा मिल जाए उसके समान उपकारी कोई नहीं। ये जो व्यासपीठ को समर्पित भाई लोग और उनका परिवार वो निमित्त बने। वो न बनते तो कोई ओर बन जाता। मैं पक्का कहता हूं। ये तो उनके नसीब, आ गए। बाकी कोई भी आ जाता तो प्रवाह में। बाकी सच्चे अधिकारी तो ये समाज है, किन्नर समाज है।

इसलिए ये उपकारी है। शिव प्रसन्न होकर कह रहे हैं, हे पार्वती, आप ने बहुत उपकार किया जगत पर क्योंकि आपने ऐसी कथा पूछी जो समस्त लोक को पावन करनेवाली गंगा है। शिव ने कहा, देवी! रामतत्त्व क्या है पहले वो सुन लो। क्या है रामतत्त्व? देवी, मेरे इष्ट राम वो तत्त्व है जो बिना पैर चल सकते हैं। बिना हाथ पूरे संसार का संचालन कर सकते हैं। बिना आंख सब के दृष्टा है। बिना कान सब कुछ सुनता है। बिना शरीर सब को छूता है। ऐसी जिसकी अलौकिक करणी है। राम क्यों धरती पर आए? निराकार क्यों साकार हुए? व्यापक व्यक्ति क्यों बना? निर्गुण सगुण क्यों बना? उसका इदमित्थ कारण कोई नहीं दे पाएगा। ब्रह्मतत्त्व ऐसा है जो कार्य-कारण से बाहर है। फिर भी कुछ कारण बताए गए।

'मानस' में लिखा हैं पांच कारण रामजनम के। पहला कारण रामजनम का आप सब जानते हैं जय और विजय, जो वैकुंठ के द्वारपाल है। और जय-विजय ने बड़े विनीत स्वर में कहा कि बाबा, भगवान अभी शयन में हैं। आप अभी थोड़ी देर यहां बैठो। तो महात्माओं को गुस्सा आ गया कि हमें रोकनेवाला कौन तू? अब महात्माओं ने शाप दे दिया कि तुम दोनों भयंकर राक्षस हो जाओ और फिर यहां आने के लिए तुम्हें सात जनम लेने पड़ेंगे। तो एक कारण जय-विजय। दूसरा कारण सती वृंदा का व्याख्यान कह दिया शिव ने कि सती वृंदा असुर की पत्नी। असुर था उसका पति जलंधर लेकिन स्त्री बड़ी सती नारी। जलंधर का युद्ध चल रहा था। जलंधर को बल था अपनी पत्नी के पातिव्रत्य का। जलंधर की मृत्यु हो गई, और जलंधर की पत्नी वृंदा सावधान हो गई कि मेरे से कुछ छल हो रहा है। वृंदा ने मर्म जाना तो क्रोध में शाप दे दिया कि मेरे पति की गैरमौज़ूदगी में वेश पलटकर आपने मेरे साथ छल किया। आप रामावतार लोगे। सीता आपके पास होगी। और आप हाज़िर नहीं होंगे कुटिया में तब मेरा पति जलंधर रावण वेश पलटकर, संन्यासी बनकर आप की पत्नी जानकी का अपहरण कर ले जाएगा। नारद के शाप के कारण प्रभु को मनुष्य होना पड़ा। चौथा कारण मनु और शतरूपा, जिसने नैमिषारण्य में कठिन तप किया। प्रभु प्रगट हुए, मांग की कि अगले जनम में हम फिर पति-पत्नी बने और हमारे घर आप के समान पुत्र की प्राप्ति हो। भगवान भाव में तुरंत 'तथास्तु' बोल गए। फिर सोचा कि मेरे समान तो विश्व में

कोई नहीं है। अब मैंने बोल ही दिया राजन्, तो अगले जनम में मैं आपके घर में स्वयं पुत्र बनकर आऊंगा। ये चौथा कारण। पांचवां और अंतिम कारण राजा प्रतापभानु। बेचारा कुसंग में फंस गया एक कपटमुनि के जाल में आ गया और जो षड़यंत्र किया इस राक्षस ने उसके कारण ब्राह्मणों ने प्रतापभानु को शाप दिया कि तेरा पूरा कुलसहित तू राक्षस हो जाएगा। प्रतापभानु दूसरे जनम में रावण हुआ। अरिमर्दन कुंभकर्ण बना। धर्मरुचि नाम का प्रतापभानु का एक मंत्री था वो दूसरे जनम में दूसरी माता के उदर से विभीषण हुआ।

मैं हर बार कहता हूं कि रामकथा में राम के जनम से पहले रावण के जनम की कथा है। कारण इतना ही कि पहले रात्रि होती है उसके बाद सूर्य निकलता है। इसलिए पहले निशिचर वंश की कथा कही, उसके बाद सूर्यवंश की कथा कहेंगे। तो रावण आदि राक्षसों से धरती भर गई। कठिन तपस्या की। दुर्गम और दुर्लभ वरदान प्राप्त किए ब्रह्मा और शंकर से और वरदानों का दुरुपयोग करके समाज पर अत्याचार करने लगा रावण। रावण के पापाचार से धरती बोझिल बन गई। गाय का रूप लेकर धरती ऋषिमुनिओं के पास जाकर रोने लगी कि मुझे बचाओ। ऋषिमुनियों ने कहा कि रावण के जुल्म के कारण अब हमारा चिंतन-मनन तक रुक गया है। देवताओं के पास गए। देवताओं ने कहा, हम को लगता है, पुण्य खतम हो गया। हम भी कुछ नहीं कर सकते। निर्णय किया, हम पितामह ब्रह्मा के पास जाएं। ब्रह्मा पृथ्वी को ढ़ाढ़स देते हैं कि हमारे बस की भी बात नहीं रही। अब तो एक ही बात है, हम सब को जिसने बनाया है वो परमतत्त्व की शरण में जाए। उसको पुकारें। ब्रह्मा की अगवानी में समस्त देवकुल, समस्त ऋषिकुल पूरी पृथ्वी गाय के रूप में इस परमतत्त्व की स्तुति करते हैं। पूरे अस्तित्व ने पुकार किया और आकाशवाणी हुई, डरो मत, धैर्य धारण करो। यद्यपि मेरे अवतार के लिए कोई कार्य-कारण सिद्धांत नहीं फिर भी कई कारण मैं अयोध्या में प्रगट होऊंगा और सभी समस्याओं का अंत होगा। आकाशवाणी ने ढ़ाढ़स दी। देवगण प्रसन्न हो गए। भगवान की प्रतीक्षा करने लगते हैं और तुलसी हमें रामजनम की भूमिका बनाकर के अयोध्या ले चलते हैं, जहां राम का प्रागट्य होनेवाला है।

अयोध्या का सर्वभौम राष्ट्र। रघुकुल का शासन और रघुकुल में मणि के समान वर्तमान राजाधिराज दशरथजी जो वेदविदित व्यक्तित्व है, धर्मधुरंधर है, गुणनिधि है, ज्ञानी है, सारंगपाणि की भक्ति भी अंदर विराजमान है। कौशल्यादि प्रिय रानियां है। सब पवित्र आचरण में जी रही हैं। मैं अक्सर इस प्रसंग पर समाज को कहता रहता हूं; खास करके युवान भाई-बहनों को कि हमारे दाम्पत्य में राम जैसी संतान प्रगट हो ऐसा यदि मनोरथ है तो दो ही काम करना। पति अपनी पत्नी को प्रेम दे और पत्नी अपने पति को आदर दे। स्त्री को चाहिए प्यार और पुरुष जरा घमंड़ी होता है उसको चाहिए आदर-सम्मान। पत्नी को प्यार और पत्नी पति को आदर दे तो उनके दाम्पत्य में राम जैसी संतान प्रगट हो सकती है। और हमारा छोटा-सा परिवार अयोध्या बन सकता है। लेकिन इतना नहीं हो पा रहा है और दाम्पत्य जीवन दिन-ब-दिन बिगड़ता जा रहा है! ऐसे समय में रामकथा हमारे जीवन को मोड़ दे सकती है।

एक बार महाराज दशरथ को ग्लानि हुई कि इतनी रानियां होते हुए भी मुझे कोई पुत्र नहीं, कोई वारिस नहीं। मेरे से रघुवंश समाप्त हो जाएगा? लेकिन ये पीड़ा कहूं तो किसको कहूं? एकमात्र उपाय है। एकमात्र स्थान है गुरुद्वार। आज राजद्वार गुरुद्वार के पास गया है। व्यासपीठ कहती रहती है कि जब कहीं भी समाधान नहीं मिले तो आख़िरी द्वार है जिसको मेरे देश की आध्यात्मिक प्रवाही परंपरा कहती है वो है गुरुद्वार। दशरथजी अपने दुःख-सुख के समिध लेकर के वशिष्ठजी के पास गए। सुख-दुःख सुनाए। बाबा, आपकी कृपा से बहुत सुख है लेकिन एक पीड़ा भी है कि पुत्र नहीं है। मेरे नसीब में पुत्र नहीं है क्या? मुस्कुराते हुए वशिष्ठजी ने कहा, राजा, मैं तो कब से लालायित हूं कि राजा मेरे पास आकर कभी तो कहे, 'अथातो ब्रह्मजिज्ञासा।' आप इतनी जिज्ञासा करे इसी की तो प्रतीक्षा थी। आज आपने जिज्ञासा की है तो ब्रह्म को आप के आंगन में बेटे के रूप में खेलता कर दूंगा। एक नहीं, चार पुत्रों के पिता हो जाओगे। लेकिन एक विधा से गुज़रना होगा। महर्षि शृंगी आते हैं। पुत्रकामेष्टि यज्ञ करवाते हैं। संतान प्राप्ति की प्रक्रिया को मेरे देश ने यज्ञ का सुंदर रूप दिया है। भक्तिसहित आहुतियां दी गई। यज्ञदेव, अग्नि स्वयं यज्ञ के रूप में हाथ में प्रसाद का चरु लेकर बाहर आये। प्रसाद का चरु वशिष्ठजी को दिया। वशिष्ठ ने वो राजा को हस्तांतरित किया, राजन्, अपनी रानियों में बांट दो।

कौशल्या को आधी खीर दी। आधा प्रसाद उसमें से पा भाग कैकेयी को, पा भाग शेष रहा उसके दो भाग करके सुमित्रा को, कौशल्या और कैकेयी के हाथों से दिलवाया। प्रसाद पाने के बाद रानियां सगर्भा स्थिति का अनुभव करने लगी।

कुछ काल बीता। हरि प्रगट होने का अवसर निकट आया। मंद सुंगध शीतल वायु बहने लगा। बिना आहुति डाले यज्ञकुंड में अग्नि प्रज्वलित होने लगे। पंचांग अनुकूल हुआ। चर-अचर सब प्रसन्न है। राम का जन्म ये तो सुख की जड़ें हैं। त्रेतायुग, चैत्र मास, शुक्ल पक्ष, नये संवत्सर की पहली नवरात्रि, शक्ति पूजा के दिन पूरे हुए नवमी को और शक्तिमान के प्रागट्य की क्षण आई। चैत्र शुक्ल नवमी, भौमवासर, मध्याह्न का सूर्य, अभिजित सोह रहा है। सरयू में अमृत बह रहा था। अस्तित्व के सभी तत्त्व पुलकित थे। स्वर्ग के देवता, सूर्यदेवता, पृथ्वी के ब्राह्मणदेवता और पाताल के नागदेवता परमात्मा की गर्भस्तुति कर रहे हैं। पुष्प की वृष्टि हो रही है। और पूरे जगत में जिसका निवास है अथवा तो समस्त जगत का जिस परमात्मा में निवास है ऐसा परमात्मा, ऐसा ब्रह्म, ऐसा ईश्वर, ऐसा भगवान, जो कहना चाहो; कौशल्या माँ के भवन में प्रकाश होने लगा। और माँ ने देखा कि प्रकाश में कुछ अवतरित हो रहा है और चतुर्भुज विग्रह में परमात्मातत्त्व माँ कौशल्या के भवन में प्रगट हुए। माँ करबद्ध खड़ी रह गई कि हे अनंत, मैं किन शब्दों में आपकी स्तुति करूं? परमात्मा मुस्कुरा दिए। संतों से मैंने सुना है, कौशल्याजी मुंह फेर लेती है। माता ने कहा, आप आये, आप का स्वागत लेकिन आप वचनभंग कर रहे हैं! आप ने गत जन्म में हमें वादा किया था कि आप इस जन्म में पुत्ररूप में आप के घर पे मनुष्यरूप में आऊंगा। ना आज आप नर है, ना पुत्र है। आप नारायण बनकर आए हैं। और पुत्र बनकर नहीं, बाप बनकर खड़े हो। हमें मनुष्य चाहिए। हमें मनुष्य के रूप में ईश्वर चाहिए। अब भगवान माँ से पूछता है कि मनुष्य कैसे हुआ जाए? मुझे ये प्रसंग बड़ा प्यारा लगता है कि धन्य है इस देश की एक माँ जो ब्रह्म को मनुष्य होना सिखा रही है। भगवान को कहा, ये चार भुजा मनुष्य की नहीं होती। तुम दो भुजा कर दो। भगवान ने दो भुजा कर दी, दो हाथ। अब मनुष्य हो गया? अब मनुष्य हो गए लेकिन बड़े लगते हो, बाप लगते हो। बेटे बनने के लिए तो छोटा बालक बनना पड़े। भगवान छोटे हो गए। और छोटा होते-होते-होते नवजात बच्चे की तरह भगवान छोटे हुए और माँ से पूछा, अब हो गया? बोले, हां, अब बालक हो गए लेकिन बोलते हो बड़ों की तरह! बच्चा तो रोएगा, आप रोओ। भगवान ने कहा, मेरे पर कौन नौबत आई कि मैं रोऊं? माता ने कहा, तेरे पर नौबत नहीं आई। तेरी बनाई दुनिया पर बहुत नौबत आई है और कितनी पीड़ित जनता है उसका अनुभव करने के लिए तू भी जरा रो तो पता लगे! परात्पर ब्रह्म बालक के रूप में माँ के अंक में रोने लगे और रोने लगे ही कि तुलसी ने घोषणा कर दी-

बिप्र धेनु सुर संत हित लीन्ह मनुज अवतार।
निज इच्छा निर्मित तनु माया गुन गो पार।।

परमात्मा का प्रागट्य बालरूप में। माँ कौशल्या के अंक में रुदन होने लगा और बच्चे का रुदन सुनकर ही सभी रानियां भ्रमित होकर कौशल्या के प्रासाद में दौड़ आई। दशरथजी के कानों पर आवाज़ गई कि महाराज, बधाई हो, बधाई हो। वशिष्ठजी ने कहा, पुत्रजनम के अवसर पर बधाई हो, बधाई हो। और आज किन्नरसमाज की कथा के इस मंच से आप को और पूरे जगत को रामजनम की बधाई हो, बधाई हो, बधाई हो।

ये किन्नर समाज तो मनुष्य से उपर उठा हुआ समाज है इसलिए समय पर उसका गुणगान गाया जा रहा है। गंधर्व, किन्नर, नाग, मनुष्य इन सब को तुलसीदासजी ने 'मानस' में काम प्रकरण में लिख दिया कि विकृतियां सब में होती है। कोई मुक्त नहीं है साहब! भजन करो और रघुवीर बचाए वो ही बच सकता है। ये किन्नरसमाज पुण्यवान समाज है। इसलिए हम सब मंगल प्रसंग में उसका सगुन चाहते हैं। क्योंकि सगुन पुण्यात्मा का लिया जाता है, पापात्मा का नहीं लिया जाता। इसलिए ये सगुनवंत समाज माना गया है।

कथा-दर्शन

- परमतत्त्व बहाना खोजता है समग्र विश्व के कल्याण का।
- परमात्मा ने पृथ्वीरूपी मंच दिया है। वहां शील और मर्यादा से नृत्य कर लो।
- परम अव्यवस्था का नाम परमात्मा है।
- धर्म निरंतर प्रवाहित होना चाहिए। देशकाल के अनुसार उसमें संशोधन होना चाहिए।
- भक्ति में पौरुष नहीं होना चाहिए। भक्ति ये तो दीनता का स्वरूप है।
- प्रेम दबाव नहीं डालता; प्रेम समर्पण करता है।
- कोई बुद्धपुरुष कभी भागता नहीं। वो जागता रहता है कायम।
- रामकथा हमारे जीवन को मोड़ दे सकती है।
- सत्य जय और पराजय दोनों से उपर का स्थान है।
- साधना तुम्हारी सहनशक्ति में वृद्धि करेगी। तुम हारोगे नहीं; तुम गिरोगे नहीं।
- कलियुग में सबसे बड़ा तप है सहन करना।
- दु:ख मिलन कराता है, सुख बिलग कर देता है।
- विपत्ति आदमी के विवेक को पुष्ट करती है।
- आदमी किसकी आराधना करता है उसीसे उसकी अवस्था का पता लग जाता है।
- किसी भी व्यक्ति का स्वीकार करो तो कमज़ोरियों के साथ करो।
- वेशभूषा बदलने की जरूरत नहीं, थोड़ी वृत्ति बदलने की जरूरत है।
- धिक्कार पाना कि धन्यवाद पाना इन्सान के हाथ में है।
- गूगल आपको इन्फर्मेशन दे सकता है, ज्ञान नहीं दे सकता।
- हमारी प्रतिक्रिया भी जल्दी होती है। हमारे कुछ निर्णय भी जल्दी होते हैं।
- ये दुनिया गाती होनी चाहिए, मुस्कुराती होनी चाहिए।
- उद्धार करना आसान है, सुधार करना भी आसान है लेकिन गिरे हुए को थामकर स्वीकार करना मुश्किल है।

किन्नरसमाज आशीर्वाद देनेवाला समाज है

'मानस-किन्नर', जो इस नव दिवसीय रामकथा प्रेमयज्ञ का केन्द्र है, जिसके बारे में आप और मैं मिलकर के संवाद कर रहे हैं। बार-बार एक प्रश्न पूछा जा रहा है कि परम अव्यवस्था का नाम परमात्मा है, ये निवेदन समझ में आता भी है; नहीं भी आता है। और सीधी-सी बात है बाप! व्यवस्था समझ में आ सकती हैं। अव्यवस्था समझ में नहीं आ सकती। व्यवस्था के बारे में आप इति कह सकते हैं। अव्यवस्था के बारे में 'नेति' के सिवाय हमारे पास कोई उपाय नहीं। जगत शायद परमात्मा की व्यवस्था हो सकता है। लेकिन जगत का नियंता, जगत का रचयिता जिसको हम जगदीश कहते हैं वो नितांत अव्यवस्था है। और मैंने आपके सामने एक दिन बात रखी कि ये जो अव्यवस्था है, जिसकी नीति अति विचित्र है; जिसकी रीति, कार्यशैली अति विचित्र है; उसकी कृति, उसकी रचना अति विचित्र है; और परमात्मा की ये पांच वस्तु यदि अति विचित्र है तो परमात्मा के अंश के नाते, हम सब में भी ये पांच अति विचित्र के रूप में न भी हो लेकिन अति विशिष्ट जरूर है। क्योंकि हम थोड़े सभ्य हो चुके हैं। हम आदि मानव अब नहीं रहे। अब गिरिवन वासी, आदि वनवासी भी सभ्य होने की स्पर्धा में है। यद्यपि बहुत समय लगेगा लेकिन प्रक्रिया शुरू है। शुरू नहीं, बहुत आगे बढ़ चुकी है। आप भारत के प्रदेशों में भी देखिए, जिसको हम बिलकुल पछात समझते हैं, वो आज इतने पढ़े-लिखे हैं कि सरकारी पोस्टों में, बहुत ज्यादा मात्रा में जिसको हम पछात और उपेक्षित समझते हैं वो ज्यादा अधिकारीपद पर नियुक्त है। क्योंकि समाज की सभ्य होने की प्रक्रिया चल पड़ी है। आगे बढ़ रही है। इसलिए ईश्वर के अंश के नाते ये नीति, रीति, गति, रति और कृति जो हम में होगी ही मात्राभेद क्योंकि हम ईश्वर के अंश है।

ईश्वर परम चैतन्य का नाम है। उसके अंश के नाते हम भी चेतन है। ईश्वर परम पवित्रता का नाम है। उसके अंश के संबंध के कारण हम भी निर्मल है आत्मरूप में। इश्वर परम सुखधाम है, परम सुखस्वरूप है। तो उसके अंश के नाते हम भी सुखस्वरूप है। लेकिन में इतना सुधार जरूर कर रहा हूं कि परमात्मा की नीति-रीति जो अति विचित्र है, उसके अंश के नाते हम में ये सब आया है लेकिन समाज शिष्ट हुआ है, सभ्य हुआ है, होता जा रहा है, इसलिए हम में ये अति विचित्रता अति विशिष्टता के रूप में प्रगट हो रही है। इन में ये किन्नरसमाज उसकी अति विचित्र कृति है। तो ये समाज की अति विचित्रता नहीं लक्ष्मी, लेकिन आप के समाज की ईश्वर के अंश के नाते कुछ अति विशिष्टताएं है। मेरा समाज इसकी नोंध ले, प्लीज़। मेरे समाज के हृदय में ये बात जाए कि आप में कुछ विशिष्टताएं है। ये आपकी सराहना के लिए नहीं है। मुझे कुछ लेना तो नहीं आपसे। मैंने तो आपको कथा दी है। आपकी आंखों की करुणा, आपकी आंखों की दीनता; शताब्दियों से आप से बिलग समाज के कारण, उसकी अति विचित्र रचना के कारण आप जो दंड भोग रहे हैं। और जो मैं आपकी आंखों मे देख रहा हूं, इसके कारण ये कथा आपकी हो चुकी है।

किन्नर समाज स्त्रीलिंग भी नहीं है; पुल्लिंग भी नहीं है। उसके लिंग का कोई निर्णय नहीं है। ब्रह्म को क्या कहते हो आप? अलक्ष लिंग कहते हो। ये हरि की अति विचित्रता, आपकी अति विशेषता। ये बहुत संशोधन मांग रहा है। इस सब्जेक्ट पर में बुद्धिमानों को निमंत्रित करूं कि अपनी लेखनी चलाए, अपने विचार प्रस्तुत करे। उस पर कुछ सर्जनात्मक काम हो; कुछ रचनात्मक काम हो। और समाज ऐसी प्रक्रिया और ऐसी योजना के पीछे सहयोग करे। इस समाज़ की विशेषताओं की नोंध लेनी चाहिए। ब्रह्म अलक्ष लिंग है। शुकदेव अलक्ष लिंग है। छोड़ो यार! व्यासपीठ पर जो बैठता है वो भी अपने आप को पुरुष नहीं कह सकता; अपने आप को स्त्री नहीं कह सकता। उसको अलक्ष लिंग बैठना पड़ता है। उसमें पुरुष-स्त्री का भेद नही माना गया। और पुरुष और स्त्री जातिभेद से मुक्त होकर जो गाएगा और श्रोता भी इसी अवस्था में आकर सुनेगा तो एक ही सत्संग परम प्राप्ति का काम कर देगा। वक्ता अलक्ष लिंग है। श्रोता की मानसिकता भी अलक्ष लिंग है। तो आपकी कुछ विशेषताएं हैं। आप के सर्जन तो क्रिएटर की अति विचित्रता है। लेकिन आपमें इसी विचित्रता के कारण मेरी व्यासपीठ को कुछ विशेषताएं नज़र आ रही है। मैं उसको आपके सामने पेश करना चाहता हूं। कौन-सी विशेषताएं हैं, जहां 'मानस' में लिखा है-

सुर किंनर नर नाग मुनीसा।
जय जय जय कहि देहिं असीसा।।

ऋषि आशीर्वाद दे, समझ में आता है। कोइ संत आशीर्वाद दे, समझ में आता है। कोई बड़ा बुजुर्ग हमसे वरिष्ठ हो, आशीर्वाद दे, समझ में आता है। लेकिन यहां सब आशीर्वाद दे रहे हैं राम और जानकी की शादी के समय उसमें किन्नर का नाम खास क्वोट किया गया, 'सुर किंनर नर नाग मुनीसा।' तीन बार जयजयकार किया। और तुलसी ने 'जय' शब्द पहले लिखकर 'आशिष' शब्द बाद में लिखकर बड़ा संकेत किया है। किसी का जयजयकार करना बहुत आसान है। फिर उसकी जय हो, ना हो! हम तो निकल जाते हैं! अच्छा नारा है। समझ में नहीं आता। सत्य को कोई जय की जरूरत पड़ेगी? सत्य को जय की जरूरत हो तो वो सत्य दो कौड़ी का है! सत्य जय और पराजय दोनों से उपर का स्थान है। न उसके चरण को जय छू सकता है, न पराजय छू सकता है। सत्य सन्मान-अपमान दोनों से बाहर है; जय-पराजय से ये बाहर है। जयजयकार करना बहुत आसान है।

तो बाप! कुछ विशेषताएं है, उस पर संशोधन हो। कृति तो अति विचित्र हैं परमात्मा की आप। लेकिन हरि का कोई सर्जन बेवजह नहीं होता। उसके पीछे कोई न कोई वजह होती है। आपकी कुछ विशेषताएं जो मेरी व्यासपीठ के नज़र आ रही है। हां, मैं जो-जो विशिष्टताएं कहने जा रहा हूं वो आपको किसी विशेष समाज में न भी दिखे तो उसको कलिप्रभाव समझना क्योंकि आज पहले जैसी पृथ्वी रही है अथवा तो हमने रहने दी है? आज पहेले जैसी हवा शुद्ध रही है या तो हमने हवा को प्रदुषणमुक्त रखी है? आज पहले जैसा जल रहा है अथवा तो हमने रहने दिया है? आज पहले जैसे जंगल-वनस्पति रही है या हमने रहने दी है? आज पहले जैसा गगन रहा है कि आज अनेक प्रकार के परीक्षणों के कारण आकाश प्रदूषित हो चुका है? ये सब शुद्ध-बुद्ध तत्त्व है लेकिन कलिप्रभाव लग गया है। तो ये समाज की जब मैं विशेषता रखने जा रहा हूं; बड़ी जिम्मेदारी के साथ मेरी तलगाजरडी आंखों से जो विशेषताएं देखी है, उसको मैं आपके सामने एक सेवा के रूप में प्रस्तुत करूं, तब ये विशेषताएं आपको वर्तमान समाज में शायद न भी दिखे तो उसके मूल की आलोचना मत करना। थोड़ा कलि प्रभाव सबको लागू है।

ये पूरा किन्नर समाज आशीर्वाद देनेवाला समाज है, भीख मांगनेवाला समाज है ही नहीं। और लोकमान्यता क्या है, आप सोचो ना अपने बारे में! मैंने तो जाना है, आपने भी जाना होगा कि लोग चाहते हैं किसी किन्नर के हाथ से हमको एक रूपिया मिल जाए तो हम रूपियेवाले हो जाए। ये मान्यता है। तो जिस समाज की विशेषता तलगाजरडा का अवलोकन पेश कर रहा हूं वहां आज के संदर्भ में वो विशेषता आपकी न भी दिखे तो भी मूल का स्मरण करना क्योंकि उसका गायन शास्त्रों ने किया है। उसका गायन पौराणिकों ने किया है। ये जाति ऊंची रहनेवाली जाति है; हिमालय निवासिनी जाति है। धवल प्रदेश की ये जाति है। श्वेत प्रदेश की ये जाति है। कुछ तो होगा। कुछ तो विशेषता होगी। तो मूल को पकड़ना। कलिप्रभाव हो सकता है। इसलिए में ये बार-बार कहता हूं कि मैं ये समाज के बारे में दिल से गा रहा हूं तब इस समाज की भी जिम्मेदारी है। साथ-साथ मैं कहता रहूंगा जिम्मेदारी। ये किन्नरसमाज को ही पूरी कथा समर्पित है तब उसकी विशेषता पर मेरा समाज गौर करे और ये समाज इस विशेषताओं की जिम्मेदारी भी समझे कि ये जिम्मेदारी भी हमारी बढ़ती जा रही है। ये मांगनेवाला समाज नहीं है। मांगना जब उसको धुत्कारा गया तो उसकी मजबूरी बन गया। उसका तिरस्कार हुआ तब उसका गुस्सा इस मजबूरी का कारण है। महोब्बत की होती तो ऐसा नहीं होता। वो तो आशीर्वाद देनेवाले लोग हैं, शाप देनेवाले लोग है ही नहीं।

तो जयजयकार बहुत सामान्य चीज है; प्यार-आशीर्वाद महत्त्व की चीज है। पहले तुलसी ने वंदना में तो कह दिया, 'कृपा करहु अब सर्व।' हे देवता, हे गंधर्व, हे किन्नर मैं आपके चरणों की वंदना करता हूं। आप मुझ पर कृपा करो। किन्नरों से तुलसी ने कृपा मांगी। अब राम विवाह के प्रसंग में तुलसी कहते हैं, किन्नर आशीर्वाद देते हैं। उसको आशीर्वाद का अधिकार है। उसकी विशेषता; आपको तो पता है, इस समाज को सावधान करूं, किन्नरसमाज के आशीर्वाद के तीन प्रकार होते हैं। कलिप्रभाव के कारण वात छोड़िए यार! बार-बार ये बात याद रखना।

मेरे समाज को मैं विशेषता कहना चाहता हूं। किन्नरसमाज के आशीर्वाद से तीन घटना घटती है। सीताराम के विवाह में, सीता और राम को आशीर्वाद इन्होंने दिया तब आशीर्वाद की तीन श्रेणी है। किन्नरसमाज आशीर्वाद देता है तब जिसको ये आशीर्वाद प्राप्त होता है उसको तीन प्रकार की मुक्ति मिलती है। ये विशेषता है। पहली मुक्ति, चिंतामुक्ति। अब कलि प्रभाव के कारण हो कि ना हो अल्लाह जाने! लेकिन किन्नरों के आशीर्वाद से चिंतामुक्ति का परिणाम आता है। एक समय था कि जब किन्नर आशीर्वाद देते थे तो व्यक्ति, परिवार और समाज चिंता से मुक्त हो जाता था। ये ताकत है। मैं कहूं, ये समाज इस ताकत को इसको पुनः प्रगट करे; इसको जीवित रखे। चिंतामुक्ति होती है। जैसे कोई बुद्धपुरुष आशीर्वाद दे और चिंतामुक्ति हो जाती है। कोई पहुंचा हुआ फ़कीर, कोई पहुंचा हुआ बुद्धपुरुष चिंतित व्यक्ति पर हाथ रखकर कह दे, अरे बेटा, इसमें क्या चिंता करना? हम बैठे है ना! चिंता छोड़ो। तो आदमी चिंता से मुक्त होकर नाचने लगता है। तो किन्नर समाज के आशीर्वाद की पहली विशेषता, उसके आशीर्वाद जिसको मिले वो व्यक्ति, वो परिवार, वो समाज, वो राज्य, वो राष्ट्र, वो पूरी दुनिया, कायनात चिंतामुक्त हो सकती है।

दूसरे आशीर्वाद की विशेषता आपके समाज की। किन्नरसमाज का आशीर्वाद साधक को विकारमुक्त कर सकता है क्योंकि ये अलक्ष लिंग है। विकारमुक्त होता है। ये जो मूलधारा है वो ये है। कलिप्रभाव के कारण हो, न हो ये बात ओर है। बाकी मूलधारा विकारमुक्त करता है। धरती पर हम जी रहे हैं लेकिन किन्नरों का आवास ऊंचा माना गया है। जब भी आशीर्वाद देते हैं प्रसंग पर तो गगन से आशीर्वाद देते हैं। गायन के साथ आशीर्वाद देते हैं। और गगन है असंगता का प्रतीक। और जिसके आशीर्वाद देने का स्थान इतना असंग हो, वो आशीर्वाद दे उसमें विकार कभी घूस नहीं सकते। वो आसमान से मिला आशीर्वाद है।

तीसरी जो उनकी विशेषता है, उनके आशीर्वाद का तीसरा भाग है, वो रोगमुक्त करता है। चिंतामुक्त, विकारमुक्त और रोगमुक्त। दैहिक रूप में रोगमुक्त, मानसिक रूप में चिंतामुक्त और आध्यात्मिक रूप में विकारमुक्त कर देता है। ये तीनों प्रकार। आधिदैहिक, आधिदैविक, आध्यात्मिक तीन प्रकार की वर्षा करनेवाला ये समाज है। रोगमुक्ति दे सकते हैं ये। जैसे कोई बुद्धपुरुष आशीर्वाद दे, रोग की मात्रा कम हो जाती है। और प्रत्येक रोग शंकर का गण माना गया है ग्रंथों में। रोग रोग नहीं है, महादेव के गण हैं। और अल्लाह करे, ये गण किसी के पास न जाये लेकिन आ जाए तो सोचना, कैलास का गण आया है। मेरे भोले का गण आया है। और मेरे घर में रहने नहीं आया, मेरे देह में रहने आया है तो 'अतिथिदेवो भव।' मैं स्वागत न करूं तो हिन्दुस्तानी काहे का? ये गण है।

मेरी कथा तो कुंभमेला है साहब! इसमें गंगा भी आ सकती है, जमुना भी आ सकती है। सरस्वती आती है माने इसमें साहित्य भी आ सकता है। गंगा आती है माने इसमें भक्ति भी आ सकती है। और जमुना आती है माने इस आध्यात्मिक सिद्धांत के प्रवाह भी आ सकते हैं। ये तो कुंभ है। वहां तो बारह मास में एक कुंभ होता है, अर्धकुंभ होता है। मेरे भाग्य में हर महीने में दो कुंभ लगते हैं। और आप भी कितने भगवद्प्रेमी हैं कि हर कुंभ में स्नान करते हैं। थोड़ी मारा-मारी जरूर करते हो क्योंकि ये कुंभ का स्वभाव है कि पहला स्नान कौन करे? पहला स्नान कौन करे? ये तो होता कि पहले कौन बैठे? सब एक-दूसरे को हटाकर बैठ जाए! मुझे लोग कहते हैं कि बापू, रामकथा तो बाद में शुरू होती है आपके आने के बाद। इसके घंटे पहले 'महाभारत' होता है! आगे बैठने के लिए, ये करने के लिए! इस कथा ने इस किन्नर समाज की कथा ने आपको इतना निकट ला दिया है! क्या बचपना कर रहे हैं? ये लोग तुम्हें मिलने नहीं आ रहे, मोरारिबापू को मिलने आ रहे हैं। हां, आनेवालों का भी शील और शिस्त जरूरी है। ये भी मैं चाहता हूं कि समाज मेरी व्यासपीठ के ओर निकट आए। मैं ये चाहता हूं लेकिन आपका भी एक शील होना चाहिए। इसमें शील का प्रयोग करो, अपने बल का प्रयोग मत करो। ये दूर करने के लिए कथा थोड़ी है साहब! हमारे लखनऊ से आए किन्नरबापू वो तो कहते हैं बापू, मैं तो यू.पी. के चुनाव में उमेदवारी करनेवाली हूं। और ऐसा होना चाहिए यार! हर विधानसभा में ये समाज के लोग खड़े रहे; उमेदवारी करे। आपको गंवाने का कुछ नहीं। गंवाना सामनेवालो को ही है। 'कोई जीता, कोई हारा! सुन चंदा, सुन तारा।' मैं फिर राज कौशिक का एक शे'र क्वोट करूं-

ना हारना जरूरी है, ना जितना जरूरी है।
जगत ये खेल है, खेलना जरूरी है।

ये दुनिया एक खेल, एक क्रीड़ास्थली है। परमात्मा ने पृथ्वीरूपी मंच दिया है। वहां शील और मर्यादा से नृत्य कर लो। ये मौका दिया है। ऐसा कलियुग कभी नहीं आएगा। लोग कहते हैं, कलियुग बहुत खराब है। काहे का ये कलियुग है? ये तो कलि का युग है। अभी तो कलि है, खिलने दो। उसको गुलाब होने दो। हमारे आचार्यगण संकल्प कराते हैं, कलि प्रथम चरणे; कलि का ये प्रथम चरण है। अभी दूसरा चरण आने दो, महक फैल जाएगी। तीसरा चरण आने पर हम लिफ्ट हो जाएंगे। चौथा चरण आएगा, देवता इर्ष्या करेंगे कि ये पृथ्वीवाले क्या कर रहे हैं? देवता लोग तो आज भी इर्ष्या कर रहे हैं! कहलानेवाले देवता! अभी तो कलि है कलि। उसको खुलने दो। जबरदस्ती मत खोलो। खिलने दो। कलियुग के समान कोई दूसरा युग ऐसा नहीं है।

कई लोग कहते हैं बस स्वर्ग में जाना। स्वर्ग में आप जा सकते हैं। लेकिन स्वर्ग में दो चीज़ नहीं मिलेगी। रामकथा नहीं मिलेगी और दूसरी चाय नहीं मिलेगी। यस, वहां चाय की व्यवस्था नहीं है। आप ना पीते हो तो मत पीना। मैं तो भाई पीता हूं इसलिए मना नहीं कर सकता आप को क्योंकि मैं खुद पीता हूं चाय। कौन कहता है कथा की असर नहीं होती? कल मैं एक जगह गया चाय पीने। एक काम से अंधेरी गया था। तो लौटते समय चाय पीनी थी तो मुझे रास्ते में प्रवीण ने कहा कि हमारे एक जिसने सापुतारा की कथा मांगी है उस बहन का जन्मदिन भी है और रास्ते में ही घर है। मैंने कहा, तो जनमदिन की बधाई भी दे दी जाए तो चाय पीना मिल जाए। तो हम गए वहां। तलगाजरडा वो अक्सर आते हैं याद दिलाने कि बापू, कब कथा दोगे? तो बार-बार आते हैं प्रेम से तो उसके साथ जो एक भाई और पतिदेव भी, तो वो बिना पूछे तलगाजरडा आए और मुझे अचानक एक बार कहा उसने कि बापू, हम बहुत सालों से पीते थे लेकिन खबर नहीं, आप के पास आते हैं, कभी कथा सुन लेते हैं, हम कथा भी कराना चाहते हैं, आप जब भी हम को अवसर दे। हमने शराब छोड़ दी है। मैंने कहा, ठीक है, अच्छी बात है। मैं किसीको कहता तो नहीं कि आप ये करो। और किसीके कहने से कौन छोड़ता है? लेकिन कल मैं गया तो मुस्कुराकर कहे, बापू, थर्टी फर्स्ट में छुट्टी आपो ने! बोलो! ये जो नई साल शुरू होगी तो इकतीस तारीख बापू, एक ज दिवस! मैंने कहा, जा, लगाओ! दम मारो दम! मेरे साथ सब थे। साक्षी है, मैंने हाथ ऐसे कि लगाओ! फिर भी मैंने कह दिया, सार्वजनिक कह दिया कि थर्टी फर्स्ट की छूट है इसका मतलब आपने छोड़ी हो तो शुरू मत करना। मैं तो आप को एक महाव्यसन देने आया हूं कि जिसके सामने सभी व्यसन छोटे हो जाए; सभी व्यसन फ़ीके हो जाए। भगवत कथा पीने का जिसको व्यसन हो गया है। ये बड़ा व्यसन दिया जा रहा है। ये व्यसन जिसको अनुभव हो जाए तो छोटा छूट जाता है। बाकी मैंने उसको कह दिया कि छूट है। बीच में मैंने कथा में भी कह दिया कि छूट है। तो मैं व्यसन का समर्थन नहीं कर रहा हूं लेकिन आप अपनी निजता में जीए। तो युवान भाई-बहनों, ये मैं विनोद कर रहा हूं। आप व्यसनी ना हो तो प्लीज़, व्यसन शुरू मत करना। छोड़ना चाहो तो कथामृत सुनकर थोड़ा-थोड़ा कम करते जाओ और इस रस का ज्यादा रस प्राप्त हो तो अपने आप छूटता जाएगा।

तो बाप! हम चर्चा करते-करते बहुत आगे निकल गए! तो कुछ विशेषताएं हैं इस समाज की। वो तीन प्रकार से मुक्त करते हैं। एक तो चिंतामुक्ति आप के आशीर्वाद से होती है। दूसरी विचारमुक्ति। और तीसरा है रोगमुक्ति; रोग मिट जाते हैं। रोग की मात्रा कम हो जाती है। गांधीजी ने कहा है कि रामनाम मेरे अनुभव में चिंतामुक्त करता है। रामनाम मेरे अनुभव में रोगमुक्त करता है। रामनाम मेरे अनुभव में विकारमुक्त करता है। और विनोबाजी जब बीमार हुए, थोड़े अस्वस्थ हुए और उसी समय गांधीबापू का रामनाम के उपर का ये लेख उसने पढ़ा फिर विनोबा ने उस पर टिप्पणी की है। विनोबाजी कहते हैं कि गांधीबापू का ये अनुभव मेरा भी अनुभव है। किन्नरसमाज की नीति की अपनी एक विशिष्टता है। नोट विचित्रता, बट विशेषता। मैं बार-बार आप को स्पर्श करता रहूंगा, टकोरा मारता रहूंगा कि कलिप्रभाव लग गया है ये चोक्कस। इन्सान की नीति क्या हो गई? एक इन्सान दूसरे इन्सान को छलता है! एक इन्सान दूसरे इन्सान को फ़रेब देता है! एक इन्सान दूसरे इन्सान का विश्वास तोड़ता है! किन्नरसमाज के मूल तत्त्वों में ये आया है कि उनकी एक विशेष नीति है। कभी किन्नर किन्नर को छलता नहीं। किन्नर किन्नर को धोखा नहीं देता। और पूरे समाज को धोखा नहीं देना चाहिए। अध्यात्म में इशारे होते हैं। करसनदास माणेकदादा को आक्रोश प्रगट हुआ था ये सब

देखकर कि 'ते दिन आंसुभीनां रे, हरिनां लोचनियां में दीठां।' ठाकुर के सामने छप्पन भोग धराया जाए और जीर्ण अजीठुं मानव प्रेत, जैसे एक मानव दरवाजे रोता आए और उसको तथाकथित धर्मावलंबी ठेस मारकर जाते हैं! माणेक कहते हैं, 'ते दिन आंसुभीनां रे, हरिनां लोचनियां में दीठां।' ये देश ही कह सकता है, 'अतिथिदेवो भव।' अतिथि में हमने देवों का आरोपण कर दिया है। तेरे पास कोई भीख मांगने नहीं आया, अतिथि आया है, देव आया है। ये भारत का चिंतन है। तो कहने का मतलब मेरे भाई-बहन, एक क्षमता है इस समाज में। कलि प्रभाव के कारण और है। छोड़ो! एक दूसरे को छल ना करे। एक दूसरे से फ़रेब न करे। इश्क की ये भी एक मंज़िल थी। शेर सुनिएगा-

इश्क की ये भी एक मंजिल थी।
हर कदम पर फ़रेब खाया गया।

तो हकारात्मक लें कि चलो, हर कदम पर फ़रेब खाया, धोखा खाया। प्रेम करनेवालों के लिए ये भी एक मुकाम था, पड़ाव था, एक लक्ष्य था कि खाओ फ़रेब। तो एक विशेषता जो है आशीर्वाद की। जिसमें रोगमुक्ति की बात आती है। चिंतामुक्त, विकारमुक्त, रोगमुक्त। और नीति, एक दूसरे में कभी छल नहीं करते। आप की विशेष रीति है, आप किसीके पास मांगते हैं , आशीर्वाद देने के लिए जाते हैं। और कोई आप को दे तो आप लेते हैं तो एक आपकी पद्धति है ताली लगाकर के, मुस्कुराकर के गा करके ले। ये आपकी विशेषता है; ये आप की रीति है। आप की गति विशेष है। कई अर्थों में आपकी गति विशेष है। गति विशेष है और आपकी रति विशेष है। आपकी प्रेम करने की जो रति की बात है वो विशेष है। और मुझे कहने दो, ईश्वर के अंश होने के नाते आपकी कृति विशेष है। उसकी एक विशेषता है। मुझे बहुत अच्छा लगता है, ये समाज के इतने उपेक्षित होते हुए भी कथा में जब आ रहे हैं, कितने सजधज कर आ रहे हैं! तो उसकी कृति की भी एक विशेषता है। बड़ी प्यारी विशेषता है, जो मार्गदर्शक है।

आइए, थोड़ा कथा का क्रम ले लूं। कल हमने रामजन्म की कथा गाई; सुनाई; उत्सव मनाया गया। जैसे माँ कौशल्या राम को जनम देती है, उसी तरह कैकेयी से एक पुत्र का जन्म हुआ। सुमित्राजी ने दो पुत्रों को जन्म दिया। अयोध्या के आनंद की कोई सीमा न रही। 'मानस'कार का प्रसिद्ध मंतव्य है कि रामनवमी के दिन राम प्रगट हुए तो एक महीने तक सूर्यास्त हुआ ही नहीं; रात हुई ही नहीं। एक महीने का दिन हो गया। अब ये बुद्धिगम्य नहीं लगेगा। बुद्धि तो तर्क करेगी कि एक महीने तक दिन? सूरज अस्त ही ना हो? परम अव्यवस्था का नाम परमात्मा है, ये याद रखना। वो क्या नहीं कर सकता? वहां क्या नहीं हो सकता? आज भी दुनिया के भूगोल में सूर्य के इर्द-गिर्द घूमते कहीं छः महीने का दिन है, कहीं छः महीने की रात है। तो ये हो सकता है। अथवा तो एक संत ने कहा, रामजनम होता है तब उसके बाद रात होती ही नहीं; दिन ही होता है। क्योंकि हरि प्रगट हुआ फिर मोह और ममता की रात नहीं होती। तब तो विज्ञान और विवेक का ही सूरज होता है। यूं भी कह सकते हैं आप कि रामजन्म के समय लोग इतने अखंड और परमानंद में डूबे थे कि किसीको काल का भान नहीं हुआ। दिन तो अस्त होता होगा, रात होती होगी, लेकिन तीस दिन कैसे गुजर गए किसीको भान नहीं रहा होगा स्वाभाविक है। और हर कथा का मेरा खुद का अनुभव है कि नव दिन कब बीत जाते हैं, खबर नहीं! तो रामकथा केन्द्र में है तो नव दिन कैसे बीत जाते हैं, खबर नहीं रहती, तो स्वयं राम प्रगट हुआ हो तो एक महीने की किसीको खबर न रहे तो कोई आश्चर्य नहीं है। स्वाभाविक है।

सुंदर लीलाएं चलती है। नामकरण संस्कार का अवसर आया। वशिष्ठ आदि महापुरुष पधारे। सुंदर उत्सव का आयोजन हुआ और चारों भाईओं का भगवान वशिष्ठजी अंतःकरण की प्रवृत्ति के अनुसार नामकरण करते हैं। कौशल्या के अंक में सांवरा राजकुमार जो खेल रहा है, जो आनंद का समंदर है, सुख की राशि है, जिसका नाम विश्व को आराम, विश्राम और विराम का दान देगा, इस बालक का नाम मैं राम रखता हूं। सब ने जयघोष किया। कौशल्यानंदन का नाम रामचंद्र रखा। कैकेयी के अंक में खेल रहे बालक को देखकर वशिष्ठजी बोले, राम के जैसा वर्ण है, राम के समान ही जिसका शील है, स्वभाव भी उसका ऐसा ही है; ये सब को भर देगा, किसीका शोषण नहीं करेगा, सब का पोषण करेगा, इसलिए मैं इसका नाम भरत रखता हूं। अब सुमित्रा के दो पुत्र इसमें तीसरे स्थान पर शत्रुघ्न का नाम। तो ये जो बालक है, जिसका सिमरन करने से शत्रुबुद्धि का नाश होगा; शत्रुता का नाश होगा, शत्रु का नहीं; वैर का नाश होगा, वैरी का नहीं; दुश्मनी का नाश होगा, दुश्मन का नहीं; उसका नाम मैं शत्रुघ्न रख रहा हूं। समस्त लक्षणों का धाम, शेष के रूप में अपने सिर पर धारण करनेवाला, जगत का आधार, इस बालक का नाम मैं लछिमन रखता हूं। जिसका राम के सिवा कोई लक्ष्य नहीं है वो लक्ष्मण है। चारों भाईओं का नामकरण कर दिया।

तलगाजरडी अवलोकन है वो ये है कि राम, भरत, लक्ष्मण और शत्रुघ्न इसका हमें आज के संदर्भ में ऐसा अर्थ लगाना चाहिए कि रामनाम जपनेवालों को चाहिए कि भरत नाम का अनुसंधान करे। राम महामंत्र है यस, लेकिन राम महामंत्र का जप करनेवालों को चाहिए कि भरत की तरह सब को भरे। किसीका शोषण न करे, पोषण करे। रामनाम के आधार पर समाज का शोषण नहीं होना चाहिए। समाज का पोषण होना चाहिए। रामनाम जपनेवालों को चाहिए कि दुनिया तो तुम्हारे साथ दुश्मनी करेगी लेकिन तुम रामनाम जप रहे हो, किसीके प्रति तुम्हारे मन में दुश्मनी नहीं होनी चाहिए ये शर्त है। रामनाम जपनेवाला किसीके प्रति दुश्मनी नहीं करेगा। सामनेवाला तो करेगा। तुम्हारे मन में ये विकार न आए ये बहुत जरूरी है। हरिनाम जपे उसके दुश्मन तो शायद बढ़ सकते हैं, कम नहीं होंगे। सहनशीलता कम नहीं होनी चाहिए। आक्रमकता सामने से बढ़ेगी तभी तो कसौटी है। उसी समय हमारे मन में किसीके प्रति दुश्मनी भाव न हो। नरसिंह मेहता ने क्या कहा?

सकल लोकमां सहुने वंदे,
निंदा न करे केनी रे।

रामनाम जपनेवाला किसीका शोषण न करे। रामनाम जपनेवाला किसीके प्रति दुर्भाव न रखे। और पूरे जगत का आधार तो लक्ष्मण बन सकता है। लेकिन हम हमारी औकात के अनुसार जितने के आधार बन सके, इतने के आधार बने। हम पूरे वन की सिंचाई नहीं कर सकते लेकिन हमारे भवन में जितने गमले हो उसमें तो एक-एक लोटा पानी डाल सकते हैं। हम ब ड़े-बड़े विद्यालय नहीं बना सकते लेकिन किसी गरीब विधवा माता का एक बालक, तेजस्वी बुद्धि है फिर भी फ़ीस के कारण महाशिक्षण चुक जाता हो तो उसकी फ़ीस हम भर सकते हैं। हम बड़ी-बड़ी अस्पताल न बना सके लेकिन कोई मरीज़ बेचारा ऐसी बड़ी अस्पताल में इलाज न करवा पाए, तो उसके लिए कुछ दवाईओं की व्यवस्था करके हमारी क्षमता के अनुसार हम दुनिया के आधार बने। व्यासपीठ मानती है इसीलिए प्रार्थना करती है। रामनाम जपो तो किसीका शोषण न हो उसका ख्याल रखें। रामनाम जपो तो किसीके प्रति दुश्मन के प्रति भी दुश्मनी न रखो, उसका ध्यान रखें। रामनाम जपो तो जितने को सहाय कर सके इतने को सहाय करे, प्रसिद्धिमुक्त चित्त से।

अंतःकरण की प्रवृत्ति के अनुकूल चारों भाईओं का नामकरण किया और वशिष्ठजी बोले कि राजन्, ये तुम्हारे पुत्र ही नहीं है, ये चारों वेदों के सूत्र हैं। ये वेदतत्त्व है। तुम बड़भागी हो। उत्सव मनाया गया। कुमार अवस्था हुई। और तुलसी प्रसंग बदलते हुए कहते हैं कि बगल में बकसर सिद्धाश्रम में रहनेवाले महर्षि विश्वामित्र जो महामुनि हैं, ज्ञानी हैं, उसके यज्ञ अनुष्ठान में ताडका के संतान मारीच-सुबाहु बाधा डालते हैं। उसकी पीड़ा से वो दशरथजी के पास आते हैं राम-लखन की याचना करने के लिए। इसकी कथा हम 'मानस-किन्नर' को केन्द्र में रखते हुए कल कहेंगे।

किन्नर समाज आशीर्वाद देनेवाला समाज है, भीख मांगनेवाला समाज है ही नहीं। और लोकमान्यता क्या है, लोग चाहते हैं किसी किन्नर के हाथ से हमको एक रूपिया मिल जाए तो हम रूपियेवाले हो जाए। ये मान्यता है। ये मांगनेवाला समाज नहीं है। मांगना जब उसको धुत्कारा गया तो उसकी मजबूरी बन गया। उसका तिरस्कार हुआ तब उसका गुस्सा इस मजबूरी का कारण है। महोब्बत की होती तो ऐसा नहीं होता। वो तो आशीर्वाद देनेवाले लोग हैं, शाप देनेवाले लोग है ही नहीं।

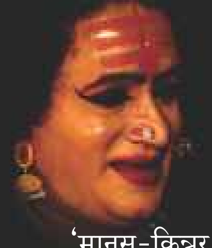

किन्नरसमाज भक्तिमार्गी है

'मानस-किन्नर', जिसको 'मानस' के आधार पर इस कथा का केन्द्रबिंदु बनाकर हम संवाद के सूर में उसकी सात्त्विक-तात्त्विक चर्चा कर रहे हैं। आज मेरे पास 'लिंगपुराण' का एक श्लोक है। आज का संवाद मैं इस 'लिंगपुराण' के श्लोक से करना चाहूंगा। और 'लिंगपुराण' के इस श्लोक में किन्नर समाज की कुछ विशेषताओं का वर्णन है। मैं ये श्लोक लिखकर लाया हूं। इस श्लोक का एक-एक शब्द मैं बोलूं। और मैं चाहूंगा कि आप भी ठीक से सुनकर उसका उच्चारण करें।

वीणाज्ञः किन्नरश्चैव सुरसेनः प्रमर्दनः।
अतिशयः स प्रयोगी गीतज्ञः चैव किन्नराः।।
शिव प्रणाम संपन्नाः व्यपोहन्तु मलं मम।

'लिंगपुराण' में 'व्यपोहम् व्यपो' एक स्तवन है उसका ये मंत्र है, श्लोक है, जिसमें किन्नरसमाज की पुराणकार ने कुछ विशेषताओं को हमें दिखाने की कोशिश की। किन्नर की पहली विशेषता है, वो वीणाज्ञ है। वो वीणावादन में कुशल है। एक बात रोज की याद रखना, कालप्रभाव के कारण आज ये न भी दिखाई दे तो भी मूल मूल है। किसी एक कुल में जन्म हुआ उस कुल का जीवन न भी जीता हो लेकिन कोई कहेगा तो यही कहेगा कि इस कुल का है। परिचय में तो मूल को पकड़ना पड़ेगा। तो किन्नरसमाज का जो मूल है, उसकी जो स्वाभाविक विशेषता है उसका जिक्र जरूरी है। कलिप्रभाव में परिवर्तन हुआ हो। लेकिन मूल में है वीणाज्ञ। पहली विशेषता, किन्नरसमाज वीणावादन में प्रवीण है। वीणा को एक वाद्य के रूप में लिखा है। मुझे लगता है कोई भी शास्त्रीय वाद्य; वादन में वो प्रवीण समाज है, ऐसा पौराणिक का मत है। और साहब! किसी भी वाद्य का निष्णात होना कोई मामूली उपलब्धि नहीं है। एक मंजीरा बजाए ना वो भी कोई सामान्य उपलब्धि नहीं है। ताली भी एक वाद्य है; विशेष प्रकार की ताली। उनमें भी किन्नरों की ताली एक विशेष वादन है।

आज मेरे पास एक प्रश्न भी है कि बापू, आपकी कथा सुनते हैं तो हम गूगल से हर सब्जेक्ट की माहिती प्राप्त करते हैं। और मुझे भेजते भी है मेरे श्रोता। खास करके युवापीढ़ी जो मेरी व्यासपीठ को सुन रही है। गूगल आपको इन्फर्मेशन दे सकता है, ज्ञान नहीं दे सकता। यस, मैं ये न कहूं कि इन्फर्मेशन की जरूरत नहीं, इन्फर्मेशन बहुत जरूरी है। एक बटन दवाओं और पूरे समाज की आ जाए। किसी भी सब्जेक्ट की आ जाए। तो विज्ञान की इस उड़ान को नमन करना चाहिए। लेकिन ये पर्याप्त भी नहीं है। गूगल के पास माहिती है, ज्ञान नहीं है। मेरी देहाती भाषा में कहूं तो ज्ञान तो गांव में राममंदिर में या कृष्णमंदिर में सायंकाल में धूपिया में देवता डालकर जिसने गूगल डालकर धूप किया है, उसके पास है। ज्ञान फ़कीरों के पास है। ज्ञान दरगाहों के पास जिसने लोबान का धूप किया ऐसे निजाम के पास है, सूफ़ियों के पास है, ओलियाओं के पास है, बाउलों के पास है। माहिती जरूरी है। आप मुझे माहिती भेजते हैं तो मैं शेर करता हूं। इसका मैं अनादर कैसे करूं? लेकिन इसको नोलेज समझ लेना भी तो ठीक नहीं है।

तो किन्नरसमाज कोई ना कोई वाद्य के वादक है। वादक ही नहीं, उसके ज्ञानी है। वीणाज्ञ, वीणा का वीणावादन का उसको ज्ञान है। वो ज्ञानी वादक है। दूसरा मंत्र का भाग 'किन्नरश्चैव सुरसेनः।' सुर की सेना के अधिपति है। सुर यहां देवता नहीं, जिसके पास सूर का ज्ञान है। सूरों के अधिपति है ये, सूरज्ञान जिसमें है। जहां तक मैंने सुना किन्नरों को गाते हुए, बेसुर नहीं सुना। हो भी सकता है। लेकिन पोज़िटिव लेना है। हम संवाद के लिए यहां है, विवाद के लिए नहीं। शास्त्रार्थ के लिए नहीं है। हम खुद को शास्त्र का एक अध्याय बनाने के लिए यहां बैठे है कि मानवी का जीवन शास्त्र का एक श्लोक बन जाए; एक अध्याय बन जाए। सूर के वो सम्राट हैं। सूर के वो जानकार हैं। अच्छा गाते हैं। तो उसकी एक विशेषता है, ये सूरमय है। ये बेसूर नहीं है। असुर तो है ही नहीं। सूरों का समूह लिए हुए है। 'वीणाज्ञ किन्नरश्चैव सुरसेनः प्रमर्दनः।' गायिकी के संदर्भ में इसका अर्थ किया है भाष्यकारों ने प्रमर्दनः वो पंक्ति का, शास्त्रीय रोगों को बड़ा मर्दन करते हैं, घूंटते हैं। और आयुर्वेद का सिद्धांत है, 'मर्दनं गुणवर्धनं।' जैसे कोई भी राग। एक अच्छा गायक कंठ की खरल में मानो राग को घूंट रहा है। और वो राग जब एक औषधि, एक रसायन बनकर हमारे श्रवणपुट में आता है तो शरीर के केमिकल्स बदल जाते हैं। शरीर में सभी रासायणिक प्रक्रिया बदल जाती है। जैसे कल ही हम गाड़ी में सुन रहे थे, महेंदीसाहब ये ग़ज़ल गा रहे थे-

चरागे हुस्न जलाओ, बड़ा अंधेरा है।
जरा नकाब हटाओ बड़ा अंधेरा है।

किन्नरसमाज की ये विशेषता है कि ये घूंटता है। मूल यही है। आज आपको न दिखे, तो मैं बार-बार आपको आगाह करता हूं ये कलिप्रभाव है। 'अतिशयः।' अतिशय का अर्थ यहां भाष्यकारों ने लगाया है, उसमें कुछ विशेष है, सामान्य नहीं। कुछ अतिशय है, कुछ विशेष ये उस समय की विशेषता है। 'सप्रयोगि', ये लोग केवल गाते हैं, सुनते हैं? नहीं, ये पौराणिक काल का मत है, लिंगपुराण का, वो उसका अच्छा प्रयोग भी जानते हैं। ये प्रयोग भी करते हैं। किन्नर समाज की ये विशेषता है। और आज कलिप्रभाव के कारण ये सब दिखता न हो तो ये समाज की जिम्मेदारी है कि फिर उसको पनपाए, फिर उसको अंकुरित करे। फिर उसको उसी स्थति में लाए जो उसकी मूलधारा है। फिर आगे का इस श्लोक का शब्द है, 'गीतहिश्चैव', ये गीतकार भी है और गीत के गायक भी है। किन्नर गीतकार भी है। और गीतगायक भी है, ये उसकी कला है।

सबसे श्रेष्ठ विशेषता मुझे ये छू रही है साहब! बड़ी प्यारी बात 'लिंगपुराण' ने कही। सबसे बड़ी विशेषता आपकी ये है कि सब विशेषताओं के धनी होते हुए भी आप क्या करते हैं? 'शिव प्रणाम संपन्नः।' भगवान महादेव के सामने कायम करबद्ध खड़े रहते हैं। कायम एक किन्नर होकर किंकर बने रहते हैं। किन्नर बनने के बाद किंकर बनना; जब भी देखो, दीन-हीन, प्रपन्न, शरणागत। शिव के हां, जीव के नहीं। जीव के सामने तो मुझे लक्ष्मी कहती है, मैं बहुत उद्दंड हूं बापू! बड़ों-बड़ों की खबर ले लेती हूं! लेकिन व्यासपीठ के पास; मोरारिबापू को निकाल दो, व्यासपीठ शिवरूपी है उसके पास 'शिव प्रणाम संपन्नः।' ये दीनता बहुत बड़ी उपलब्धि है। 'व्यपोहन्तु मलं मम।' अब कितनी ऊंचाई पर इस समाज को ऋषि लिए जा रहा है! ऋषि कहता है, जो वीणाज्ञ है; जो सूर का जानकार है; जो उसको घूंटकर उसका रसायन बनाता है; जिसमें कुछ विशेष जागृति है; प्रयोग करनेवाले हैं; गीत रचते भी हैं; गीत गाते भी हैं और निरंतर ये सब विशेषताओं के बाद भी ये शिव के सन्मुख प्रणाम की मुद्रा में समर्पित है। अब ऋषि क्या कहता है? हे ऐसा किन्नरसमाज, आप मेरे पापों से मुक्त करो। किन्नरसमाज से ऋषि कहता है, 'व्यपोहन्तु मलं मम।' मेरा मल, मेरा कषाय, मेरे भीतर का कचरा, हे किन्नर समाज, आप मुझे मल से मुक्त करो, मुझे पाप से मुक्त करो। एक पौराणिक ऋषि किन्नर समाज के सामने ये प्रार्थना करता है। आपका दर्जा कितना बढ़ जाता है साहब! दर्जा था। बीच में थोड़ी उपेक्षा हुई है। अब हम प्रायश्चित्त करके समाज के द्वारा दर्जा वो जो मूल है वो दिए जा रहे हैं। उसको टिकाए रखना; उसको बरकरार रखना। मैं तो परसों बोलकर चला जाऊंगा। सांई मकरंद की एक पंक्ति कहकर कि 'पछी वादळ जाणे ने वसुंधरा जाणे।' बीज बो दूंगा। फिर पृथ्वी जाने कि मेघ जाने। कितनी बड़ी महिमा गाई गई! हद कर दी! किन्नरसमाज, मेरे मलों को हर लो। मेरे भीतरी कचरे को नष्ट कर दो। मुझे मल मुक्त करो। ऐसी प्रार्थना पुराणकार किन्नरसमाज से करता है। कितनी बड़ी महिमा है! तो ऐसे किन्नरसमाज को केन्द्र में रखते हुए ये नौ दिवसीय रामकथा प्रेमयज्ञ के रूप में चल रहा है।

बार-बार आपको सुनाया गया कि 'रामचरित मानस' में 'किन्नर' शब्द सोलह बार आया है, मानो ये किन्नरों की षोडोपचार पूजा है। सोलह बार ये शब्द आया है, मानो ये किन्नरों का सोलह संस्कार है। सोलह बार ये शब्द 'मानस' में आया, मानो ये संकेत है कि किन्नरों का सोलह शृंगार है। क्या सजधज के आते हैं! सोलह शृंगार है, षोडोपचार पूजा है और ये सोलह संस्कार है। महामंडलेश्वर कह रही थी कि हमारा कोई पिंडदान नहीं कराता। हमने काशी में उस जगह जाकर पंडितों को आचार्यों को बुलाकर, हमारे किन्नर समाज के सबके, उनका पिंडदान कराया। किसीने ये भी कहा कि आपके तर्पण का, पिंडदान का कोई उल्लेख नहीं। तो एक स्वामीजी ने कहा कि आप शास्त्र लेकर आओ, हम शास्त्र लेकर आए, हम शास्त्रार्थ करें, न हो तो बंद कर दें। और हो तो आप शास्त्र हमारे पास रखकर चले जाओ। और साहब! ये अधिकार दिया गया। ये सोलह संस्कार है, ये सोलह शृंगार है; ये

षोडोपचार पूजा है। 'मानस' के आधार पर मैं किन्नर समाज का अवलोकन तलगाजरडी दृष्टि से कर रहा हूं, तब मुझे लगता है गंधर्व समाज जो है वो ज्ञानमार्गी है। इसका मतलब ये नहीं कि प्रेममार्गी नहीं है। उसकी प्रधानता ज्ञानमार्ग है गंधर्वों की। देवलोग जो है जिनको हम सुर कहते हैं वो रजोगुणी है। और रजोगुणी हंमेशा कर्मवादी होता है। रजोगुणी कभी शांत बैठ नहीं पाएगा। तमोगुणी कभी खड़ा नहीं होता। और रजोगुणी कभी बैठता नहीं। बार-बार खड़ा होगा, बैठेगा, इधर जाएगा, उधर जाएगा, समझना कि ये रजोगुणी है। और प्रमादी तमोगुणी कभी खड़ा नहीं होगा, लाख कहो! सत्त्वगुणी बेलेन्स करता है। सम्यक् रहता है। जब उठना हो उठेगा। जब कोई क्रिया नहीं करनी है, अक्रिय रहेगा। ये सत्त्वगुणी है। आखिर तो इन तीनों से बाहर जाना पड़ता है आध्यात्मिक यात्रा में, जिसको गुणातीत कहते हैं। संतों का जिक्र करते हुए ब्रह्मानंदजी ने गाया था।

त्रिगुणातीत फिरत तन त्यागी, रीत जगत से न्यारी।
ब्रह्मानन्द संतन की सोबत, मिलत है प्रगट मुरारी।
जगत मांही संत परम हितकारी।

सुर कर्मवादी है। वायु चलता रहता है। वायु देव है; चलता रहता है। सूर्यदेव है। सुर कर्मवादी है, कर्मपंथी है। राघव ज्ञानवादी है। इसका मतलब प्रमादी है ऐसा नही, लेकिन प्रधान धारा उसकी ज्ञान की है। सुरों की प्रधान धारा कर्म है। लेकिन 'रामकथा' के माध्यम से उसके आधार पर, गुरुकृपा से, तलगाजरडा का जो अवलोकन है वो ये हैं, किन्नर भक्ति मार्गी है। यस, इसका मतलब ये नहीं कि उसके पास ज्ञान नहीं है। इसका मतलब ये नहीं कि ये प्रमादी है। और 'भागवत' की भक्ति में और 'मानस' की भक्ति में जो-जो सूत्र है, आज भी आप देखोगे। किन्नरसमाज को पता हो कि न हो, इन में भक्ति आपको प्रगट दिखेगी क्योंकि किन्नरसमाज का मार्ग ही भक्तिमार्ग है। साड़ी पहनकर तो दिखाओ! साड़ी पहनना भक्तिमार्ग का लक्षण है।

भक्ति में पौरुष नहीं होना चाहिए। कोई गाली दे, कोई तमाचा मारे तो आंसू गिरा दे। भक्ति ये तो दीनता का स्वरूप है। वहां पौरुष नहीं। यदि कोई किन्नर को पौरुषहीन कहे तो नाराज मत होना। कहना नहीं चाहिए लेकिन किन्नरसमाज नाराज भी ना हो। ये तो तुम्हारी भक्ति का परिचय है। जो कहे, हमारे में बल है वो भक्ति नहीं कर सकता। जो कहे, हमारे पास इतना पद है; होगा स्वागत, लेकिन भजन से दूर हो जाएगा। भक्ति में पुरुषतत्त्व नहीं दिखाया गया। इसलिए नरसिंह महेता को मैं फिर एक बार क्वोट करूं। नरसिंह ने कहा। 'सारमां सार अवतार अबळातणो।' 'माया भगति सुनहि तुम दोउ।' तुलसी कहते हैं कि माया भी स्त्री है और भक्ति भी नारी है। किन्नरसमाज भक्तिरूपा समाज है, मायारूपी नहीं।

'मानस' का किन्नर क्या है? 'मानस' का किन्नर कैसा है? 'मानस' के किन्नर का रूप क्या है? बहुधा 'मानस' के किन्नर को गायक बताया गया है। ये गायक है। गायक ही है, जहां जाओ वो गाता है। मेरे अवलोकन में वो नर्तक भी है। गायक भी है, नर्तक भी है, बादक भी है। मुझे कहने दो, दोनों हाथ जोड़कर ये दासभक्ति का सेवक भी है। और जहां कैलास है वहां किन्नरों का समाज निवास करता है इसका मतलब किन्नरसमाज उपासक भी है। वो कैलास के पास निवास करते हैं, इसलिए उपासक भी। गायक भी है, वादक भी है, नर्तक भी है, उपासक भी है, सेवक भी है। ये सब भक्त के लक्षण है साहब! तलगाजरडी दृष्टिकोण से भागवती भक्ति और रामायणी भक्ति के जो सूत्र हैं ये किन्नरसमाज के परिचय के लिए पर्याप्त है।

पहले 'भागवत' से शुरू करें। 'श्रवणं, कीर्तनं, विष्णोः स्मरणं, पादसेवनं, अर्चनं, वंदनं, दास्यं, आत्म निवेदनं।' भागवती भक्ति का पहला लक्षण है श्रवण। आप कथा श्रवण कर रहे हैं तो आप 'भागवत' की पहली भक्ति कर रहे हैं। यद्यपि मैं भी सुन रहा हूं। मै भी प्रथम भक्ति कर रहा हूं। फिर हमारे लिए कीर्तन की बात आई है। बोलने की बात आई तो भक्ति में बोलनेवाले हैं, गानेवाले हैं। लेकिन जो श्रवण कर रहे हैं वो भक्ति है। यहां श्रवणमात्र लिखा है। रामकथा श्रवण करो ऐसा नहीं; कृष्णकथा श्रवण करो ऐसा नहीं कहा। केवल श्रवण करो, तब एक अर्थ ये निपजता है कि कोई भी शुभ वस्तु श्रवण करो, ये श्रवणभक्ति है। एक अच्छी गज़ल आप श्रवण करो तो मुझे कहने में कोई आपत्ति नहीं, ये भक्ति है। कोई दो व्यक्ति कोई अच्छी बात, किसी के गुण का गायन करे कि फलां आदमी क्या निराभिमानी बनकर सेवा करता है, तो उसके गुण-कीर्तन सुनना ये भी भक्ति है। शुभ श्रवण करना ये पहली भक्ति है। रामकथा सुनना तो सवाल ही नहीं; 'भागवत' कथा सुनना तो प्रश्न ही नहीं; कहीं भी सुनो, शुभ वार्ता श्रवणभक्ति है। ये लोग जो है, ये भक्ति का पहला लक्षण पूरा करते हैं। ये शुभ ही सुनते हैं। किसके घर कौन मर गया ये कभी नहीं सुनेगे। किसके घर कौन जन्मा, ये सुनते हैं। किसके घर कौन नुकसान हुआ, ये कभी नहीं सुनेगे। किसके घर बारात आनेवाली है, ये सुनता है। तुम्हारा मकान गिर गया वो कभी नहीं सुनेंगे। तुमने नया फ्लेट लिया; प्रतीक्षा करो, आएंगे। तुम्हारे बच्चे का कोई संस्कार हो रहा है यज्ञोपवित संस्कार, नामकरण, जहां-जहां शुभ माहिती समाज को मिली, तो वो शुभ सुनकर तुम्हारे पास आते हैं। इसका मतलब मुझे कहने के लिए बाध्य करता है कि ये शुभ सुनने के आदती है। और शुभ सुनना ये पहली भक्ती है। किसी का उत्कर्ष सुने और राजी हो जाए, ताली लगाकर वे कीर्तन गाए। तुम्हें बधाई दे। तो जहां भी शुभ वार्ता होती है उसका श्रवण, शुभतत्त्व का श्रवण ही भक्ति है। और किन्नरसमाज में 'भागवत' की इस रूप में श्रवणभक्ति आज भी मौजूद है। कीर्तन तो करते ही हैं। व्रज के लोग, व्रजवासी जो हैं वो जो कीर्तन करते हैं लेकिन वो ही पद किन्नर जब गाते हैं तब वो ही कीर्तन की रोनक कुछ और हो जाती है। जो मैंने खुद अनुभव किया।

दूसरी भक्ति है शुभ कीर्तन। शुभ श्रवण पहली

भक्ति किन्नर समाज का एक लक्षण है। शुभ संकीर्तन ये दूसरी भक्ति। स्मरण करना; एक बार आपके पास आए और आपने उनका सन्मान किया तो जिंदगीभर उसके दिमाग में आपकी स्मृति रहेगी। शुभ की स्मृति को निरंतर अपने में बरकरार रखना ये स्मरण तीसरी भक्ति है। प्रभु के नाम के समान, भगवान की लीला के समान कौन शुभ है? इसलिए हम उसका स्मरण करते रहते हैं; उसकी स्मृति बनाए रखते हैं। तो तीसरी भक्ति भी इस समाज में दिखती है। पादसेवन, सेवकाई। तुलसी कहते हैं, किन्नर आदि सब सिद्ध कैलास में भगवान शंकर की सेवा करते हैं, सेवकाई करते हैं। पादपूजन उनके स्वभाव में है। अथवा तो कोई अच्छा पद उसकी सेवा, अच्छा कोई वाक्य, अच्छा कोई गीत का सेवन करना ये उसकी तीसरी भक्ति। चौथी भक्ति दासत्व ये उसकी भक्ति है। अर्चनम्, अर्चना करना। ठाकुरजी का शृंगार करना। अरे, ठाकुरजी को छोड़ो। खुद का शृंगार करना। क्योंकि आदमी अंततोगत्वा अंदर तो शिव ही है। जब सब में परमात्मा देखो तो दो अर्थ होता है, सब में ईश्वर देखो और सबमें ईश्वर देखो। तो सबमें तुम भी हो इसलिए तुम में भी ईश्वर देखो और जब कोई आदमी सद्भाव से शृंगार करता है तो वो अर्चन कर रहा है। वंदना करना, करबद्ध खड़े रहना, दीनता से जीना, ये दासत्व है। वंदनं; वंदन भक्ति है। दास्यम्; दास्यपना, दास्यभक्ति भी उसमें दिखती है। सख्यम्; मैंने मेरा अनुभव भी कहा कि वो जो उस समय में रामकृष्ण मंदिर में जो किन्नर समाज आते थे और ठाकुरजी के सामने ही नृत्य करते थे। और आत्मनिवेदन। हम ऐसे हैं। लक्ष्मी की किताब पढ़ना। उसमें सब निवेदन कर दिया है। ये है, ये है; ऐसा हुआ, ऐसा हुआ। कभी हाथ में आए तो पढ़ लेना। इंग्लिश में भी है। हिंदी में भी है। गुजराती में भी है। मराठी में भी है। आत्मनिवेदन है। कोई प्रपंच नहीं दिखाता। अच्छा लगता है मुझे। तो किन्नरसमाज भक्तिमार्गी है। किन्नरसमाज कार्य में प्रवृत्त होते हुए भी पथ से वो च्युत नहीं है। मूल धारा तो उसकी भक्ति की है।

ये हुई भागवती भक्ति के लक्षण। अब मैं रामायणी भक्ति कहूं। ये 'मानस' के आधार पर तलगाजरडी अवलोकन है। 'रामचरित मानस' के 'अरण्यकांड' में तीसरे सोपान में जहां ठाकुरजी शबरी के सामने नौ प्रकार की भक्ति का वर्णन करते हैं। उन नौवों की नौ मुझे किन्नरसमाज में दिखती है। वहां लिखा है, 'प्रथम भगति संतन्ह कर संगा।' पहली भक्ति संत का संग। जिसको संत का संग अच्छा लगता है वो पहली भक्ति है। जहां तक मेरा दर्शन है, मेरा अवलोकन है; मैं देखता हूं इस समाज को और अनुभव भी करता हूं, तो ये समाज को संत के प्रति प्रियता है। जो समाज संत का संग करे वो तो धन्य है, लेकिन जिसका संग संत भी करे उसके लिए मैं क्या कहूं? सब परंपराओं के अपने नियम होते हैं। हम नियम किसी के तोड़े नहीं लेकिन कई जगह ऐसा है कि बहनों को हटा दो, बहनों का मुख नहीं देखो! और जगद्गुरु शंकराचार्यजी ने भी प्रथम दिन, दूसरे दिन लक्ष्मी को कहा, इधर बैठो, मेरे पास बैठो। संतसंग जिसको प्रिय है वो पहली भक्ति। किन्नरसमाज को साधु के प्रति प्रियता है। और साधुओं को भी उसको हृदय का आदर देने की भावना है वो दिखती है। जिसको संत का संग प्रिय लगे अथवा जिन साधु समाज भी इस समाज के साथ बैठकर उसको आदर और प्रियता का दान दे ये पहली भक्ति नहीं तो क्या है?

'दूसरी रति मम कथा प्रसंगा।' दूसरी भक्ति है मेरी कथा के प्रसंग में प्रीत, राम कहते हैं। और किन्नरसमाज के किसी न किसी गीत में, किसी न किसी पद में, छोटा-बड़ा कोई कथानक पड़ा है। कोई न कोई कथानक पड़ा है। ये दूसरी भक्ति का प्रमाण है किन्नर समाज की। तीसरी भक्ति भगवान राम कहते हैं, 'गुरु पद पंकज सेवा तीसरी भगति अमान।' अपने गुरु के चरणकमल की सेवा अभिमानमुक्त होकर करना। आपको पता है, किन्नरसमाज में गुरु परंपरा बड़ी महत्त्व की रहती है। गुरु का आदेश इस समाज में कहीं उथापा नहीं जा सकता। जो हमारी भारतीय एक दिव्य परंपरा है और सब समर्पित है। गुरु के चरण कमल की सेवा। लेकिन तुलसी बहुत सावधान है। इक्कीसवीं सदी में जो अर्थ होने चाहिए वो चार सौ पचास साल पहले ओलरेडी लिखे गए हैं। यहां लिखा है, 'गुरुपद पंकज सेवा।' केवल गुरु के चरण की सेवा नहीं, लेकिन जिस गुरु का आचरण कमल जैसा असंग हो, उसकी सेवा हो। कमल जैसा; पानी में रहे पर पानी से पर हो। जिसका आचरण असंग है। जो संसार में रहते हुए संसार से असंग है; देखने में लगे कि हमारा अपना है और थोड़ा चिंतन करे तो लगे कि ये किसीका भी नहीं है। ऐसे बुद्धपुरुषों के चरणों की सेवा अभिमान छोड़कर करना ये तीसरी भक्ति है। जलकमलवत् जिसका जीवन हो ऐसे बुद्ध पुरुष की अभिमान छोड़कर सेवा करनी ये तीसरी भक्ति।

और चौथी भक्ति कपट छोड़कर हरिगुन गाना। अपनी परंपरा में गोपनीय मंत्र जो मिला है उसको दृढ़ विश्वास के साथ जपते रहना ये पांचवीं भक्ति हैं। और ये समाज के बहुत गोपनीय मंत्र होते हैं। कोई माई का लाल उसे ऐसे ही जान नहीं पाएगा। उसके खास मंत्र हैं, ये है मंत्र जाप में दृढ़निष्ठा; ये है पांचवीं भक्ति किन्नर समाज की। छठ्ठी भक्ति शीलपूर्वक संयम। दम को कहते हैं संयम। लेकिन दम केवल दमनकारी है तो दंभ हैं। शील के साथ संयम। बहुत प्रवृत्ति से अपने को धीरे-धीरे निवृत्ति की ओर ले चलना। किन्नरसमाज में छोटे, युवान अथवा तो प्रौढ़ लोगों को ही आप देख पाओगे। वृद्ध लोगों को आप बहुत कम देख पाओगे। सज्जन जैसे धर्म का अनुसरण वो छठ्ठी भक्ति हैं। किन्नर समाज में दिखती हैं।

सातवीं भक्ति है पूरे संसार को मुझमय देखे। ब्रह्ममय देखे जगत को ये सातवीं भक्ति। ब्रह्ममय जगत को देखे। मैं आगे बोल चुका हूं, ब्रह्म न स्त्रीलिंग हैं, ब्रह्म न पुल्लिंग है; ब्रह्म है नान्यतर जाति, बीच वाली। ब्रह्म केवुं? ब्रह्म केवो नहीं। ब्रह्म केवी नहीं। जो स्वयं ब्रह्म लिंगधारी है, उसको सब में ईश्वर दिखे ये तो स्वभावगत मानसिकता है सातवीं भक्ति। आठवीं भक्ति, अपने प्रामाणिक पुरुषार्थ और प्रभुकृपा से जो मिले उसमें संतुष्ट रहना। आपके पास कोई किन्नर गाडी खड़ी रहे और पैसे मांगे। दो सौ रुपए दे और पांच सौ मांगे तो ये मत समझना कि ये 'जथा लाभ संतोष' वाली भक्ति नहीं हैं। उसका इस तरह अवलोकन है तलगाजरडी पीठ का कि उसको परमात्मा ने जिस विग्रह दिया है उसमे उसको संतोष हैं। भगवान ने हमको पुरुष क्यों न बनाया? भगवान ने हमको ये क्यों नहीं बनाया? नहीं, जो मालिक ने दिया है उसमे संतोष है। सब प्रसन्न हैं। कोई परमात्मा की कमी नहीं देखता। और सपने में भी परदोष नहीं देखते। पर का अर्थ है यहां, परमात्मा सबसे पर हैं। जो दिया परमात्मा ने, जो शरीर दिया, जो स्थिति दी, समाज ने जो उपेक्षा की बस हमें तसल्ली है जो है। लेकिन परमात्मा ने हमारे साथ ऐसा क्यों किया, ऐसा कभी परमतत्त्व को दोष सपने में भी न दे ये किन्नर समाज की आठवीं भक्ति हैं। हम तो परमात्मा को दोष देते रहते हैं! भगवान के भरोसे पर जीवन; न उपलब्धियों को हर्ष, न आपत्तियों की ग्लानि, ऐसी स्थिति को नववीं भक्ति कही। तो भागवती भक्ति और मानसी भक्ति के सभी लक्षण किन्नरसमाज में यदि हमारी हकारात्मक दृष्टि है तो दिखते हैं। गुणदर्शन करने की गुरुकृपा से कोई विवेकदृष्टि यदि हम में है तो ये सभी लक्षण किन्नर समाज में दिखते हैं। इसीलिए अवलोकन कह रहा है कि समझदार होते हुए ये प्रमादी नहीं हैं। ये कार्य करते हैं; कार्य करते हुए भी उसकी मूल धारा भक्ति की हैं। किन्नरों का मूल प्रवाह भक्ति मार्गी हैं। इसलिए नारी के वेश में भक्तिरूपा बनकर ये नर्तन कर सकती है। ये गायन कर सकती हैं। ये वादन कर सकती हैं। ऐसे छुछ संकेत जो ग्रंथों में, सद्गुरुओं की बोलियों में, छोटे-बड़े कथानकों में गुरुकृपा से जो प्राप्त होते हैं उसमें किन्नर समाज की ये जो स्थिति है उसका जिक्र व्यासपीठ कर रही हैं।

भगवान राम और लक्ष्मण को लेकर महामुनि विश्वामित्र अपना एक अनुष्ठान जो ताडका की संतानें रोक रखती थी उसको पूरा करने के लिए जाते हैं। विश्वामित्र के संग राम-लखन निकलते है तब सबसे पहले ताडका मिली। विश्वामित्रजी ने राघव को संकेत किया कि राघव, ये राक्षसों की प्रसूता हैं। उसीकी संतान ही हमारे अनुष्ठान में बाधा डालते हैं। भगवान राम ने अवतारकार्य का श्रीगणेश किया। भगवान राम ने अपने अवतारकार्य में राक्षसों को मारा। उसके पूर्व राक्षसियों को मारा। तुलसी कहना चाहते हैं कि राक्षस प्रगट होते हैं उस भूमिका को पहले नष्ट किया

तलगाजरडा का जो अवलोकन है वो ये हैं, किन्नर भक्तिमार्गी है। इसका मतलब ये नहीं कि उसके पास ज्ञान नहीं है। इसका मतलब ये नहीं कि ये प्रमादी है। और 'भागवत' की भक्ति में और 'मानस' की भक्ति में जो-जो सूत्र है, आज भी आप देखोगे। किन्नरसमाज का मार्ग ही भक्तिमार्ग है। साड़ी पहनकर तो दिखाओ! साड़ी पहनना भक्तिमार्ग का लक्षण है। भक्ति में पौरुष नहीं होना चाहिए। कोई गाली दे, कोई तमाचा मारे तो आंसू गिरा दे। भक्ति ये तो दीनता का स्वरूप है। वहां पौरुष नहीं। यदि कोई किन्नर को पौरुषहीन कहे तो नाराज मत होना। कहना नहीं चाहिए लेकिन किन्नरसमाज नाराज भी ना हो। ये तो तुम्हारी भक्ति का परिचय है।

जाए ताकि आसुरी तत्त्व प्रगट ही न होने पाए। एक ही बाण से ताडका का निर्वाण किया। दूसरे दिन सुबह भगवान राम विश्वामित्र से कहते हैं, बाबा, आप यज्ञ का आरंभ करो। यज्ञ में आहुतियां डाली गई। सुबाहु आया। मारीच आया। बिना फने का बाण मारकर भगवान ने मारीच को शत जोजन सागर पार लंका के तट पर फेंक दिया! सुबाहु को अग्नि का बाण मारकर के जलाकर भस्म कर दिया। असुरों को निर्वाण दिया।

कुछ दिन विश्वामित्र के आश्रम में राघव रुके। अब विश्वामित्रजी ने कहा भगवान, यज्ञरक्षा के लिए आपके पिता ने आप दोनों को हमें सौंपा। कार्य पूरा हुआ। अब आप कहो तो मैं अयोध्या आपको छोड़ दूं। और यदि आप कहे तो आपकी यात्रा यज्ञयात्रा है तो दो यज्ञ अभी बीच में ओर शेष हैं। एक अहल्या का यज्ञ जो प्रतीक्षा का यज्ञ है, इसमें भी चरण धूली की आहुति डाली जाए। और तीसरा जनकपुर में एक धनुष्य यज्ञ हो रहा हैं। धनुष्य यज्ञ की बात सुनकर हर्षित हुए राम-लक्ष्मण विश्वामित्र की अगवानी में चल दिए। ये राम की पदयात्रा हैं। रास्ते में एक आश्रम आया। बिलकुल शून्य आश्रम हैं। कोई नहीं हैं। एक शिला, एक पत्थर देह-सा पड़ा हैं। शिला को देख राधवेंद्र ने विश्वामित्र से जिज्ञासा की कि महाराज, ये किसका आश्रम हैं? और ये पत्थरदेह, सुनमुन, उपेक्षित, तिरस्कृत जो पतित मानी गई है ये कौन है? मैंने शायद पहले दिन की कथा में भी थोड़ा स्पर्श किया था। राम पूछते हैं, ये किसका आश्रम है, कौन है तब विश्वामित्रजी राम के पक्ष से हटकर अहल्या के पक्ष में खड़े हो गए। साधु-संतों को चाहिए जो गिरे हुए हैं, पतित हैं, उपेक्षित हैं, तिरस्कृत है, उसके पास खड़े रहना। स्पष्ट है यहां विश्वामित्रजी अहल्या के बारे में उसकी वकालत करते हो ऐसे राम को कहते हैं, ये गौतम ऋषि का आश्रम हैं। और ये गौतम नारी हैं। उसका नाम अहल्या पत्थरदेह हो गई है। पत्थरदेह मानी शून्य हो गई हैं। समाज के इंद्रों का भोग बनी हैं। गौतम का रूप लेकर इंद्र ने छला हैं। और विश्वामित्र ने कहा, राघव, ये पापवश नहीं है, ये श्रापवश हैं। वो बड़ा सीधा-सादा प्रसिद्ध शेर है -

लोग नाहक मजबूर को बुरा कहते हैं।

आदमी तो सब अच्छे हैं, वक्त बुरा होता हैं।

समय बुरा होता है। ये पापवश नहीं है, ये श्रापवश है। और आपसे ओर कुछ नहीं मांग रही है। केवल चरणरज मांग रही है। एक रजमात्र कृपा हो जाए। ये अहल्या पुनः स्थापित हो जाए समाज में। उसको स्वीकृति मिले। आप कृपा करो। भगवान राम ने अपने चरण को वो किया ही; अब 'परसद पद पावन।' उसका क्या अर्थ करे? सीधा-सादा अर्थ करें तो भगवान के चरण बहुत पवित्र हैं। पद पावन, पावन चरण; उस पद ने अहल्या को स्पर्श किया। ये भी अर्थ आप निकाल सकते हैं। एक अर्थ ये भी आया अवलोकन में गुरुकृपा से कि ये जो हवा चली, उसके कारण रज उड़ी और रज गिरी अहल्या के पत्थरदेह पर और एक तपस्विनी प्रगट हो, ऐसे प्रगट हुई है अहल्या। भगवान अहल्या को फिर स्थापित करते हैं। ये पूरी स्तुति एक पूरी कथा की सामग्री हैं। उस पर एक कथा हो भी गई है।

यात्रा आगे बढ़ी। गंगा का तट आया। भगवान राम विश्वामित्र से पूछते हैं, प्रभु, ये कौन नदी हैं? विश्वामित्रजी हंस पडे कि जो आपके चरणों से निकलती हैं उसकी माहिती आप मुझसे लेना चाहते हैं! फिर भी आप कहते हैं कि कौन नदी तो मैं गंगा के अवतरण की कथा आपको सुनाउं मेरी वाणी को पवित्र करने के लिए। और गंगा के अवतरण की पूरी कथा राम-लक्ष्मण को सुनाई। दोनों भाई ने ऋषि संग स्नान किया। तीर्थ के देवताओं को दक्षिणा दी। पुरोहितों ने आशीर्वाद दिया। भगवान राम-लखन विश्वामित्र के संग जनकपुर पहुंचते हैं। महाराज मिथिला पति सन्मान के लिए आते हैं। राम-लक्ष्मण, विश्वामित्र आदि मुनिगणों का स्वागत करते हैं। और राम को देखकर जनकराज जो विदेह हैं; देह में रहते हुए देह से पर जिसका अनुभव है, अवस्था है, वो जनक राम को देखकर स्तंभित हो गए कि ये कौन हैं? कोई राजकुल के पालनहार हैं? ये है कौन? और जनकराज विश्वामित्र से पूछते हैं, महाराज, ये दो राजकुमारों को देखकर मेरा वैरागी मन उनमें लुब्ध क्यों होता हैं? ये है कौन? विश्वामित्र मुस्कुराये कि आप भले राजर्षि हैं लेकिन हो तो गृहस्थ। हम तो विरक्त त्यागी हैं। हमारा मन भी उसने चुरा लिया हैं! जनकजी, दुनिया में जितनी जड़-चेतन प्राणीसृष्टि है, सबको ये प्रिय लगते हैं। ये परमतत्व हैं। जनकजी बहुत प्रसन्न हुए। एक 'सुंदर सदन' नामक प्रासाद है वहां विश्वामित्र और राम-लखन को जनक ने ठहराया। और वहां मुनियों के संग भगवान राम भोजन करते हैं और थोड़ी देर विश्राम करते हैं। मैं भी आपको छोड़ कि आप भी भोजन करे और तुम्हारे नसीब में हो तो विश्राम भी करें।

नव दिवसीय कथा में किन्नर की प्रतिष्ठा का पाटोत्सव हो रहा है

'मानस-किन्नर' की कुछ संवादी चर्चा-बातचीत आगे बढ़ाएं इससे पूर्व गत सायंकाल को व्यासपीठ की निश्रा में किन्नर समाज की ओर से अपनी कला और अपनी विद्या की प्रस्तुति हुई, जिसके हम सब साक्षी है। सबने बहुत एन्जोय किया और इस समाज में जो कला और विद्या पड़ी है, गायन-नर्तन जो कुछ परमात्मा की देन है उसकी एक सुंदर प्रस्तुति शालीनता सभर हुई। मैं व्यासपीठ से मेरी प्रसन्नता व्यक्त करता हूं। और ये कला और विद्या कायम बनी रहे ऐसी हनुमानजी के चरणों में प्रार्थना करता हूं। सुंदर प्रस्तुति सबकी अपने-अपने ढंग से रही। और संचालन के रूप में लक्ष्मी अपनी एक अलग पहचान लिए हुए हैं। बहुत-बहुत धन्यवाद। खुश रहो बाप! 'भगवद्गीता' के दसवें अध्याय में जिसका नाम 'विभूति योग' है, उसमें भगवान अपनी भिन्न-भिन्न विभूतियों की चर्चा करते हैं। उसमें भगवान आख़िर में ये भी कह देते हैं कि 'नान्तोऽस्ति मम दिव्यानां विभूतीनां परन्तप।' हे परन्तप, हे अर्जुन, मेरी विभूतियों का कोई अंत नहीं है। इसका मतलब ये कि पूरा जगत सृष्टा की पूरी सृष्टि जिसमें जितना भाग व्यवस्थित हो, जितना भाग अव्यवस्थित हो, जितना व्यवस्था के रूप में हो, जितना अव्यवस्था के रूप में हो, लेकिन तत्त्वतः अंततोगत्वा ये सब परमात्मा की विभूतियां है। विभू की ये सब विभूतियां है।

मैं आपके पास कल की तरह एक श्लोक बुलवाना चाहता हूं, उसमें परमात्मा ने स्पष्ट रूप से कहा है; शास्त्र कहता है कि किन्नर भी मेरी विभूति है। यक्ष तो है ही। देवों में से अमुक देव तो है ही। पांडवों में से अर्जुन है ही। पक्षियों में गरुड है ही। जो 'गीता' में है। कुछ विभूति का दूसरा संदर्भ लेकर राजदूत अंगद रावण की सभा में, रावण के साथ वार्तालाप संधि का प्रस्ताव लेकर गया तब कुछ बिलग ढंग से उसकी प्रस्तुति हुई है। अन्य ग्रंथों में विभूतियों का संकेत प्राप्त होता है इसमें किन्नरों को भगवान की विभूति कहकर परमात्मा ने सन्मानित किया है। मैं ये किन्नरसमाज की जो ये मूल प्रतिष्ठा है, उसको पुनः प्रतिष्ठित कर रहा हूं। मैं कोई नई प्रतिष्ठा नहीं कर रहा हूं। जैसे मंदिरों में देवों की प्रतिष्ठा होती है उसमें हर साल पाटोत्सव होता है। वैसे आपकी प्रतिष्ठा ओलरेडी थी, है, ये रहनी चाहिए। पुनः उसका पाटोत्सव हो रहा है ये नव दिवसीय कथा में। और तब ये समाज और किन्नरसमाज और दोनों की जिम्मेदारियां बढ़ने लगी है।

कितने-कितने लोग जो अपना प्रतिभाव दे रहे हैं! एक बहुत नीडर और जागृत पत्रकार सौरभभाई ने आज ही लिखा है 'मुंबई समाचार' में। मेरे सामने भी कुबूल किया था और लिखा भी कि किन्नरसमाज के प्रति मेरा जो दृष्टिकोण था, एक बौद्धिक व्यक्ति का अपने आरपार का नीडर अभिप्राय है। वो पूरी सूग, वो पूरी नफ़रत निकल चुकी है। और मेरा पूरा नज़रियां इस समाज के प्रति बदल चुका है। ऐसे कई प्रतिभाव आ रहे हैं तब मैं बार-बार कहता रहूंगा, कायम कहता रहूंगा कि इस समाज का उत्तरदायित्व भी बढ़ता जा रहा है; जिम्मेदारी भी बढ़ती जा रही है। मुझे इस कथा में सीख के रूप में नहीं पर स्वाध्याय के रूप में नव बातें आपको कहनी है। इसमें मुझे क्या करना है वो एक मैं हूं। समाज को चार बातें क्या करनी है वो समाज को चार बाते कहूं। और किन्नरसमाज की बातें क्या, वो कुल नव दिन का नव सूत्र मुझे कल देकर जाना है। क्योंकि कथा कल पूरी हो जाएगी। वाह-वाह होगी, इतना बड़ा पंडाल, इतने में भोजन किया, आनंद ही आनंद हुआ है निःशंक। एक घड़ी का आनंद भी अस्तित्व में महत्त्व रखता है तब नौ दिन का आनंद कोई कम मुनाफ़ा नहीं है; कोई कम उपलब्धि नहीं फिर भी ये प्रवाह बस चला न जाए, ये टिका रहे। ये बात आपकी प्रतिष्ठा थी। व्यासपीठ ने आपकी पुनःप्रतिष्ठा भगवद्कृपा से की। एक कैलासी विचारधारा पर चला, लेकिन समाज को भी कुछ इस समाज के लिए करना होगा। अकेली व्यासपीठ करे ये पर्याप्त नहीं है। करते ही रहेगी क्योंकि ये मेरा तो जीवनकार्य है। ये तो होता रहेगा लेकिन मेरे श्रोताओं की, मेरे समाज की भी जिम्मेदारी है; संपन्न लोगों की भी जिम्मेदारी है कि इस समाज के लिए ओर क्या कदम उठाए जाएं। हर माध्यम से ये प्रयत्न होना चाहिए।

मैं कल मीडिया को भी कह रहा था कि आप मुझे कुछ प्रश्न पूछे; मैं जवाब दे दूं। आप राजी भी हो जाए। कुछ लेख भी लिख ले। स्वागत है। लेकिन प्रत्येक माध्यमों की जिम्मेदारी है। व्यक्ति की जिम्मेदारी है। मैं फिर से कहूं कि एक

घड़ी का आनंद भी बहुत महत्त्व का है। नव दिन का आनंद कोई कम उपलब्धि नहीं है। फिर भी जैसे बार-बार कथा सुनने के बाद गोस्वामीजी कहते हैं, भाषाबद्ध करूं; मैं अब उसको बांध लूं। ये बिखर न जाए। ऐसे मुझे और आपको नौ दिन के बाद, इस कथा को बांधना है कुछ ठोसकार्य के रूप में। मैंने कल भी कहा कि कथा केवल वचनात्मक न रह जाए, रचनात्मक भी हो जाए। जरूरी है रचनात्मक हो। उसमें मैं सभी समाज के जो आप इतना प्यार व्यासपीठ से करते हैं, इसलिए सब इसमें सहयोगी हो कि ये समाज ऐसा ही न रहे कि हर जगह मांगता रहे, हर जगह ये करता रहे। नहीं, ये एक बहुत प्रतिष्ठित समाज है। परमात्मा अपने मुख से जिसको अपनी विभूति कहते हैं। ये विभूति वैभववान है। उसकी, हम सबकी और उसके सामने समाज की पूरी की पूरी जिम्मेदारियां है उसकी मैं कल चर्चा करूंगा। आज हुई तो आज करूंगा। तो परमात्मा की ये सब विभूति, उसमें किन्नर, हमारे ग्रंथकार कहते हैं, मेरी विभूति है। और कल मुझे लक्ष्मी, बहुत प्यारी बात लगी आपमें से भी किसीने वक्तव्य दिया कि हम किन्नरों में ना कोई हिंदु होता है, ना कोई मुसलमान। हमारे में कोई जाति नहीं होती। हमारा कोई मज़हब नहीं। ये बड़ी बात है साहब! बहुत-बहुत साधुवाद। इसका मतलब ये नहीं कि हम हिंदु होने का गौरव न लें। हिंदु है, उसमें हमारी अस्मिता है। हिंदु समाज ने कितना दुनिया को दिया! सनातन धर्म का जो औदार्य है, 'उदारचरितानां वसुधैवकुटुम्बकम्।' उसका एक गौरव है। लेकिन हम किसीको तिरस्कृत न समझे। तो ये प्यारा विचार था।

तो कथा के समापन में चार बातें समाज को करनी है; चार बातें किन्नरसमाज को करनी है और नववां मैं हूं बीच में! वैसे भी हम मार्गी है। हम जो देहात के हैं वैष्णव साधु, हमको मार्गी कहते हैं। मुझे बहुत अच्छा लगता है। कई बुद्धिजीवी लोग, साहित्यकार लोग, मार्गी कहकर आलोचना भी करते हैं! आ तो मार्गी बावा छे! तब मैं राजी होता हूं। सबसे बड़ा सन्मान है!

तो किन्नरसमाज एक विभूति है। तो इस मंत्र को हम बोलें, आप भी पीछे बोलें, प्लीज़।

ब्रह्मेश शेष धर्मेन्द्र मुनिंद्रा मनःस्मृता मानवाश्च
तथादैत्या यक्ष राक्षसः किन्नराः।
पैये चराचरश्चैव सर्वे तनविभूतयः
आविर्भावस्तिरोभावः सर्वेषां चतवेच्छया।

मानव, राक्षस, देवेन्द्र, शेष, मुनिंद्र, कोई भी ये चर-अचर जो-जो है, ये सब विभु की विभूति है। ये तो समाज को परमात्मा ने शास्त्रों ने ऋषिमुनियों ने विभूति के रूप में स्वीकार किया है। और जब विभु उसको विभूति कहते हैं तब उसका सन्मान जरूरी है, उसका आदर जरूरी है। उसकी उपेक्षा नहीं होनी चाहिए ये बहुत आवश्यक है। लेकिन होती रही उपेक्षा किसी कारणवश! इसमें कुछ कारण किन्नरसमाज का अपना स्वभाव भी हो सकता है। ये भी हो सकता है, यस। यहां तो सब पोस्टमोर्टम होगा! सब चीज को देखना पड़ेगा। मुझे शोभितभाई एक कविता सुना रहे थे। मैंने कहा, ये कविता मुझे लिखकर देना। तो आज उसने मुझे दी है। शोभितभाई कह रहे थे कि बापू, देशी नाटकसमाज में बहुत समय पहले ये कविता नाटक में सुनी थी। उसका कवि कौन है खबर नहीं। गुजराती में है, मुझे बहुत प्यारी लगी।

मढेला चामडानुं आ जीवनमृदंग बोले छे।
हृदयवीणाना तारेतार थईने तंग बोले छे।

हृदयवीणा के तारतार तंग होकर बोलते हैं। चमड़े से मढ़ा हुआ ये जीवनमृदंग बोल रहा है। हृदय की वीणा के तार-

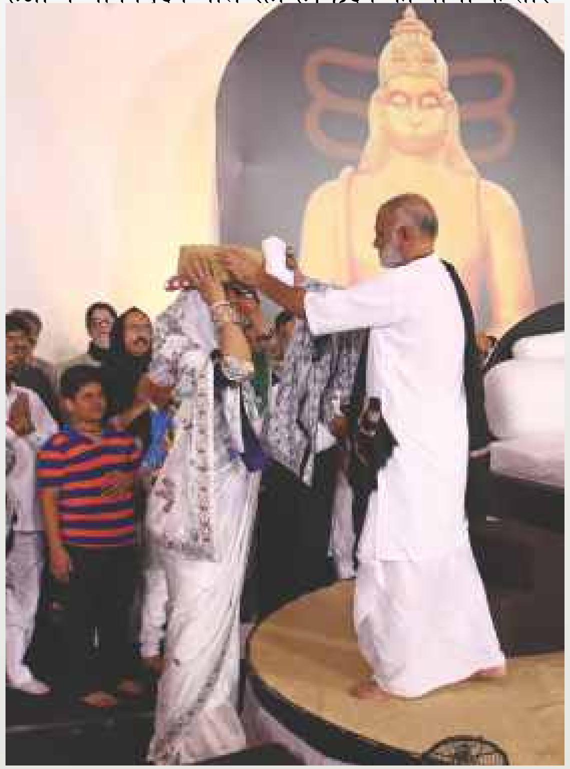

तार तंग होकर बोल रहे हैं और चर्म से मढ़ा हुआ जीवनरूपी मृदंग बोल रहा है।

करुणानो सदीओथी वणायो खंग बोले छे।
जगतना अर्धनारीश्वरनुं अडधुं अंग बोले छे।

चर्चा चल रही है इस समाज की पुनः प्रतिष्ठा की। जो विभु की विभूति है। रामकाल में राम ने इसकी प्रतिष्ठा की। रामकाल में तुलसीदासजी ने सोलह बार 'किन्नर' शब्द का प्रयोग करके फिर पुनः प्रतिष्ठा की। और आज हम सब मिलकर के संवाद के रूप में रामकथा के माध्यम से फिर पाटोत्सव कर रहे हैं। तो किन्नरसमाज की जो एक महिमा है। महिमा के साथ उसकी जिम्मेदारी बढ़ती जा रही है। सबको अपनी दृष्टि में रखते हुए हम आगे बढ़े तो ये समाज, ये पूरी सृष्टि अधिकाअधिक सुंदर बन सकती है।

तो मैं जब बैठकर दादा के चरणों में पढ़ता था रामकथा तब एक हरे रंग की अलमारी छोटी-सी टूटी-फूटी। दादा के पास रहती थी। मैं वहीं उस अलमारी के पास बैठकर के 'मानस' दादा से पा रहा था। दादा के बांये हाथ की ओर और मैं भी बांयी ओर बैठता था। और फिर इसमें सब संस्कृत ग्रंथ रहा करते थे जीर्ण-शीर्ण, टूटे-फूटे। तो कभी-कभी उसको निकाला जाता था। दादाजी तिरोहित हो गये फिर मैं कभी-कभी देखता रहता कि ये दादा ने संभालकर रखा है। ये बड़ी संपदा हो सकती है। तो उसमें जीर्ण-शीर्ण पत्तें सालों पहेले के! 'लो आ गइ उनकी याद...!' ये स्मृति है। आपने सुना है कि नामदेव तुकाराम से पहेले हुए हैं लेकिन नामदेव का काम जो अधूरा रहा वो उसने तुकाराम को सोंप दिया क्योंकि चैतसिक टच होता है। वहीं से यात्रा आगे बढ़ जाती है। और फिर जगद्गुरु तुकाराम ने अभंगों की रचना की ऐसा एक कथानक है। ऐसी चैतसिक परंपरा है। तो कभी-कभी स्मृति आती है, मौके पर आती है तो बहुत अच्छा लगता है; बहुत प्यारा लगता है। तो उस जीर्ण-शीर्ण पत्तों में कुछ 'रामायण' के भाग, कुछ-कुछ रहता था। तो सालों पहेले देखा हुआ एक वो श्लोक मेरी स्मृति में आज सुबह से दस्तक दे रहा है। और वो किन्नरों के बारे में है।

साहब! यहां हम सब युनिटेड है, संयुक्त है। यहां आप छोटे से फूल के पत्ते को छुए तो पूरे आकाशगंगा को छुआ जाता है। अपना अनुभव सोचो ना कि सुबह में सूरज निकलता है और हम करवटें बदल करके आंखें खोलते हैं क्योंकि सूरज से हम जुड़े हुए हैं। सूरज उगा, हम उठे, भले थोड़ी देर से उठे। लेकिन टकोरा तो वहीं से मिल जाता है। जैसे सूरज डूबे फिर हमको लगता है, चलो, हम सो जाए। फूल सिकुड़ने लगते हैं। कितनी रेन्ज है चेतना की! सब जुड़े हुए हैं। नामदेव इशारा करे तुकाराम को कि इसको आगे बढ़ाना और जगद्गुरु तुकाराम उसको आगे बढ़ा देते। तो शब्द और अमृत वचन तो आसमां में गुंज रहे हैं। विज्ञान कार्यरत है क्योंकि पांच हजार साल पहले बोले योगेश्वर कृष्ण के वाक्य को यदि किसी न किसी रूप में पकड़ लिया जाए तो आज हम कृष्ण की आवाज़ भी सुन सकते हैं। ये संभव है; सब संभव है। शताब्दियों के बाद शायद हो। क्या फ़र्क पड़ता है? हम भी तो किसी न किसी रूप में फिर गाएंगे ना? मोक्ष किसको चाहिए? धरती पर जितना जीना हो आनंद से, प्रसन्न चित्त और प्रशांत चित्त से जीओ वोही मुक्ति है। बाकी कौन जानता है मुक्ति कहां है?

तेरे आज़ाद बंदों की न ये दुनिया, न वो दुनिया,
यहां मरने की पाबंदी, वहां जीने की पाबंदी।

इकबाल का शे'र है। कितना बड़ा शायर! जो स्वतंत्रताप्रेमी साधक है, जिसको मुक्ति के बंधन में भी नहीं बांधना। मुक्ति के बंधन में रहे तो भी आप परतंत्र है। माया का बंधन भी बंधन। मुक्ति की किसको खबर! आये तो इस प्यारी पृथ्वी पर भगवान की कथा सुनो, शुभ सुनो, शुभ खाओ, शुभ पीओ, नाचो, गाओ, किसीको छलो ना, किसीके साथे फ़रेब ना करो। प्रभु का नाम जितनी बार ले सको, अपनी जो इबादत हो उसी भाषा में उसी अल्लाह-ईश्वर को भजो, और आनंद से जीओ। ये दुनिया जीने जैसी है। कई लोग तो बस में जगह नहीं मिलती तो कहते हैं, मर गए! जीओ, खूब जीओ और खूब पीओ! मैंने तो कथा सुनाई है। और कथा विवेक देती है। आप पर छोड़ देता हूं। मैं पाबंदी क्यों लगाऊं? पाबंदी लगानेवाला मैं कौन हूं? आनंद में जीओ लेकिन फ़रेबी न हो, किसीको छलो ना। आप थर्टी फर्स्ट को सायंकाल को शांति से बैठकर 'सुन्दरकांड' का पाठ करो या तो मध्यरात्रि को एक-दो परिवार बैठकर 'हनुमानचालीसा' का यज्ञ करो। अथवा तो भांगती राते मोरारीबापुनी केसेट सांभळो। तुम्हें पीना ही है तो मैं भी पीने की चीज हूं। पी लो, भरपूर पीओ, भरपूर पीओ! और ये बोटल खाली होनेवाली नहीं। महंगी से महंगी और दुनिया में मिलनेवाली नहीं। खूब पीओ, खुब जीओ, खुब गाओ, विवेक बरकरार रखकर। कोई पाबंदी नहीं।

तो इस जीर्ण-शीर्ण पत्तों में एक श्लोक मेरे हाथों मे आया आज वो किन्नरसमाज की ओर संकेत करनेवाला। शब्द है, 'किन्नराःशील संपन्नाः।' किन्नरों को कहा, वो शीलसंपन्न है। देशकाल की असर होती है ये बात ओर है। क्योंकि कई लोग मेरे पास आते हैं कि बापू, अच्छे प्रसंग में हमारे घर आते हैं, जीद बहुत करते हैं, मानते नहीं, दरवाजे से हटते नहीं! वहां थोड़ा शील का अभाव दिखता है। लेकिन मूल जो प्रतिष्ठा है उसमें तो 'किन्नरः शील संपन्नाः गुह्य देह देवीकृता।' उसका शरीर गुह्य है। लेकिन जगत ने नहीं बनाया। पराम्बा का बनाया हुआ है। आदि शक्ति का बनाया है। 'मनसा कर्मणा वाचा किन्नराः शिव किंकरः।' अब कितनी पुरानी बात आई आज तब मुझे अच्छा लगा कि नहीं, मैं किन्नरसमाज पर बोल रहा हूं और मेरा दादा मुझे मदद कर रहा है! आज सुबह की घटना है बाप! जब मैं यहां आने को तैयार था और मुझे लगा कि मुझे कोई रोक रहा है। और मैं एक बार दरवाजा खोलकर बाहर जाने को ही था फिर अंदर लौट आया। एक मिनट के लिए मेरे हनुमानजी के पास मैं बैठ गया और 'स्मृतिर्लब्धा,' हे पाघडी, तेरे प्रसाद से, गुरु के ऋण से दुनिया में कोई मुक्त नहीं हो सकता। कितने साल पहेले की मुझे स्मृति आई, उसमें मेरी गलती भी हो, लेकिन उसका भाव तो यही है 'गुह्य देह देवीकृता।' उसका देह गुह्य है। रहस्य कोई नहीं जानता। कोई कहता नहीं। ये किन्नर तो शिव के किंकर है। गुरु के पास, अपने इष्ट के पास जाकर किं करोमि? किं करोमि? किं करोमि? कहकर निरंतर खड़ा रहे उसको किंकर कहते हैं। मैं क्यां करूं? मैं क्या करूं? हुकम करो, मैं क्यां करूं? उसको कहते हैं किंकर।

मुझे मन होता है कि आपको कहूं। आप ध्यान दे कि 'मानस' में भी देव, सुर, गंधर्व, किन्नर, यक्ष, नर, सब जाति-उपजाति के रूप में हैं। ये प्रत्येक जाति-उपजाति जो हैं, सेमी गोड जिसको कहते हैं। उसकी कुछ विशेष स्वाभाविक विशेषता है। देव सदा स्वार्थी होते हैं। पुण्य करते हैं; अमर लोक पाते हैं, लेकिन होते हैं बड़े स्वार्थी। देव बड़े होशियार, बड़े नेटवर्कवाले हैं सब! बराबर अपनी योजना बनाते हैं। 'सुरस्वार्थी', मेरे गोस्वामीजी ने उसके उपर दस्तक कर दिए हैं कि सुरस्वार्थी। और 'श्रीमद्‌भागवतजी' में स्वकार्य कुशल देवताओं को बताया है शुक ने कि आप अपने कार्य में स्वार्थी हैं। आप बड़े चालाक है। देव ज्यादातर स्वार्थी है। और ये जो गंधर्व जाति है, बड़ी पुरुषार्थी जाति है। ये लोग बहुत पुरुषार्थ करते हैं। एक अच्छी ऊंचाई है गंधर्व की। एक समय था हमारे यहां। उसके नाम से एक विवाहपद्धति आई और जिसका नाम है गांधर्वविवाह, गांधर्वलग्न। बड़ा पवित्र माना गया गांधर्वलग्न। देव है स्वार्थी, गांधर्व है बहुत पुरुषार्थी। फिर नरः। नर में दोनों आधा-आधा है। हम जैसे लोग आधे स्वार्थी भी है और आधे हम पुरुषार्थी भी है। पुरुषार्थ भी करते हैं। स्वार्थी भी है। गंधर्व पुरुषार्थी। नर पुरुषार्थी और स्वार्थी दोनों का मिला हुआ संयुक्त रूप। देव है ज्यादा मात्रा में स्वार्थी। किन्नर है गुह्यार्थी। उसकी बहुत कुछ गुप्त बातें ये गुरु परंपरा में ही आती है। कोई किसीको नहीं कहता। और कोई पूछने की कोशिश भी मत करना। कुछ बातें, जिसको हमारे ग्रंथों में गुप्ती कहते हैं। गुप्ती माने गुह्य। कुछ बातें गुप्त है। किन्नरसमाज के लिए कुछ बातें गुप्त हैं। एक तो उसके देह की रचना गुप्ती है। जो जगदंबा ने रचा है। जो परमतत्त्व के द्वारा रचा हुआ है। एक बहुत बड़ी परम शक्ति द्वारा निर्मित है। तो कुछ बात गुप्त रखना, ये गुप्ती है। किन्नर गुह्यार्थ है। ये स्वार्थी नहीं है, गुह्यार्थी है। और मुझे कहने में कोई आपत्ति नहीं, शंकर के किंकर होने के नाते किन्नर परमार्थी है। ये स्वार्थी नहीं, परमार्थी है। हां, जिम्मेदारी बढ़ा रहा हूं। उसको पूरा करना सबका दायित्व है। लेकिन ज्यादातर एक अवलोकन में ये परमार्थी है। तो 'किन्नरः शिव किंकरः' जो किन्नर है वो शिव के किंकर है, ऐसा टूटा-फूटा एक श्लोक जो मुझे मिला आज सुबह गुरु के द्वारा। और कितना संयोग होता है कि जिस सब्जेक्ट पर मैं बोलूं उसके लिए कितने तैयार होते हैं! मुझे सावधान करते हैं कि ये बोलो, यो बोलो। तो किन्नरसमाज की जो कुछ बातें चल रही है। जो प्रतिष्ठित समाज है उसको हम पुनः इस रूप में देखना चाहते हैं। इसलिए हम उसकी चर्चा कर रहे हैं। अब मैं कथा का कुछ दौर आगे बढाऊं इससे पूर्व कुछ समय के लिए भगवन्नाम का आश्रय करें। उसके बाद कथा को क्रमशः आगे बढाऊं।

'मानस'कार कहते हैं, जनकराज राम-लक्ष्मण को विश्वामित्रादि मुनि गणों के साथ मिथिला के एक 'सुंदर सदन' में ठहराते हैं। सायंकाल का समय हुआ तो मिथिलानगर के राम की उम्र के जो लड़के हैं, जो कुमारगण है वो राम को मिलने के लिए, राम से बातें करने के लिए, जिस प्रासाद में, जिस महल में राम को ठहराया है उसीके दरवाजे पर खड़े हैं लेकिन अंदर कोई जाने नहीं दे रहा! लक्ष्मणजी जीवधर्म के आचार्य माने गए हैं; ये जीवाचार्य है, रामानुजाचार्य है। इन लड़कों के आंतरभाव को लक्ष्मणजी पहचान लेते हैं। लक्ष्मणजी ने सोचा कि ये लड़के अंदर आकर राम को मिल नहीं सकते तो किसी न किसी बहाने राम को बाहर जाना चाहिए। ये बात छोटी-सी है; विचार के रूप में उसकी बड़ी महिमा है। अक्सर व्यासपीठ कहती रहती है कि समाज का कुछ वर्ग ऐसा है जो दरवाजे पर त्राटक लगाए बैठे हैं और अंदर ऐसी-ऐसी महान विभूतियां है जो बाहर जा नहीं सकती! जो बाहर ताक रहे हैं, शायद अधिकारी भी नहीं है चलो, लेकिन उसका मूल अधिकार देकर उसको अंदर बुलाया जाय अथवा तो जो महान है वो अपनी महानता के अहंकार को छोड़कर उसको मिलने बाहर जाय। विनोबाजी कहते हैं कि हमारे देश में गौरीशंकर शिखर के समान ऐसी-ऐसी विभूतियां महामानव हुए जिसको वेद विश्व मानुष कहते हैं और कुछ लोग ऐसे दबे तलेटी में गिरे हुए हैं! ना वो उपर जा सके, ना उपरवाला नीचे आ सके! मज़बूरसाहब कहा करते थे कि मुलाकात और संयोग तो तभी बनेगा कि नीचेवाला कुछ उपर उठे और उपरवाले कुछ नीचे आये। और बीच में कहीं मिलन का संयोग बने। रामकथा मुझे और आपको यही सूचना देती है कि क्षमतावाले लोग बाहर आये और जो सक्षम नहीं है उसको गले लगाए। लेकिन कौन करेगा आचार्य के बिना? मुझे बड़ा प्यारा लगता है कि ये कार्य आचार्यो का है। लक्ष्मण रामानुज है। रामानुज माने राम से छोटा भाई। उसको रामानुजाचार्य कहते हैं; जीव के आचार्य कहे जाते हैं। ये कौन करेगा? ये आचार्यो का काम है। सबसे पहले आचार्यो को पहल करनी चाहिए कि इन महान व्यक्तियों को बाहर ले जाए कि आप इनको मिलो। अथवा तो बाहर जो नहीं मिल पा रहे है उसको अंदर सन्मान के साथ प्रवेश दिलवाया जाए। ये काम लक्ष्मणजी ने किया। मन में सोच रहे हैं कि क्या योजना बनाऊं कि राम और ये जनकपुर के लड़कों का मिलन हो।

भगवान अंतर्यामी है। लक्ष्मण के मन की गति को पहचान ली और विश्वामित्र के पास जाकर रामजी ने कहा, महाराज, ये लक्ष्मण नगर देखना चाहता है। तो विश्वामित्रजी ने कहा कि लक्ष्मण छोटा है, यदि उसको नगर देखने की ईच्छा हुई है तो जाए, हो आए। राम ने कहा महाराज, मैं उसके साथ जाकर उसको नगर दिखाकर ले आऊं। आप को जाने की क्या जरूरत? बोले, महाराज, ये लखन नगर में कहीं भूला न हो जाए क्योंकि लखन ने नगर देखा नहीं है। विश्वामित्र मुस्कुराये; राम को कहा, तो आपने देखा है? पहले जनकपुर आ चुके हैं क्या? महाराज, सब पर्दे क्यों खोलते हो? कुछ रहस्य रहस्य रहने दो! विश्वामित्र प्रसन्न हुए क्योंकि साधु हमेशां उसीके पक्ष में होते हैं, जो अधिकार से अंदर नहीं जा सकते उसका स्वीकार करने का साधु का पक्ष रहता चाहिए। विश्वमित्रजी यही तो भूमिका निभा रहे हैं। अहल्या के प्रसंग में भी उसने यही तो भूमिका निभाई है। लक्ष्मण को लेकर के राघव जनकपुर देखने के बहाने बाहर आये। जो समवयस्क लड़के थे, राम बाहर आये तो इतने प्रसन्न हुए! कोई निकट जाकर छूने लगता है; कोई बात करना चाहते हैं। तीन प्रकार के दर्शकों का यहां जिक्र है। रास्ते पर बड़े बुज़ुर्ग जो मिथिला के पुरुषवर्ग थे, वो सब खड़े रहकर भगवान के दर्शन कर रहे हैं। आकर्षण तो सब को हुआ लेकिन कोई जिज्ञासा नहीं कर रहा! बुज़ुर्ग लोग खड़े हैं; केवल देखते हैं। और तीसरा वर्ग दर्शकों का मिथिला की शालीन महिलाएं, वो अविवेक ना हो, मर्यादाभंग ना हो ऐसे अपने-अपने झरोखें से राम रास्ते पर चल रहे हैं उसको देख रही हैं।

दूसरे दिन धनुषयज्ञ का समय। भगवान राम-लक्ष्मण यज्ञ की भूमि पर आते हैं। एक के बाद एक राजा धनुषभंग के लिए विफल चेष्टा करने लगे! कोई धनुष्य तोड़ नहीं पाया। जनकजी अकुला उठे कि द्रीप-द्वीप और खंड-

शास्त्र कहता है कि किन्नर भी मेरी विभूति है। यक्ष तो है ही। देवों में से अमुक देव तो है ही। पांडवों में से अर्जुन है ही। पक्षियों में गरुड है ही। जो 'गीता' में है। अन्य ग्रंथों में विभूतियों का संकेत प्राप्त होता है इसमें किन्नरों को भगवान की विभूति कहकर परमात्मा ने सन्मानित किया है। मैं ये किन्नरसमाज की जो ये मूल प्रतिष्ठा है, उसको पुनः प्रतिष्ठित कर रहा हूं। मैं कोई नई प्रतिष्ठा नहीं कर रहा हूं। जैसे मंदिरों में देवों की प्रतिष्ठा होती है उसमें हर साल पाटोत्सव होता है। वैसे आपकी प्रतिष्ठा ओलरेडी थी, है, ये रहनी चाहिए। पुनः उसका पाटोत्सव हो रहा है ये नव दिवसीय कथा में।

खंड से आये राजे-महाराजे, आप धनुष को उठा तो नहीं पाए लेकिन तिल के दाने जितने अपनी जगह से धनुष को जरा हटा भी नहीं पाए! मुझे खबर होती कि धरती पर मेरी बेटी को ब्याहे ऐसा कोई वीर है ही नहीं तो ऐसी प्रतिज्ञा करके मैं उपहास के पात्र नहीं होता! लक्ष्मणजी ने सुना कि जनकजी ने कहा कि धरती पर कोई वीर नहीं है, और अकुला गए लक्ष्मण! तब विश्वामित्र ने समय जानकर कहा, राघव, उठो, और महाराज जनक का परिताप तोड़ने के लिए धनुष तोड़ो। गुरुआदेश, गुरुकृपा, गुरु का आशीर्वाद लेकर भगवान राम मंच पर से नीचे उतरे। सभी निगाहें रंगमंच पर से राम पर लगी हुई है। और राघव धनुष के पास जाते हैं। शिव का धनुष, परिकम्मा की है, विशेष स्थान पर बैठी जानकी को एक-एक पल युग के समान बीत रहा था। प्रभु ने सोचा, अब विलंब करने से फायदा नहीं। इतने में क्षणार्ध में, क्षण के आधे भाग में भगवान ने कैसे धनुष उठाया, कैसे चढ़ाया, कैसे तोड़ा, कोई माई का लाल समझ नहीं पाया! एक क्षण शुरू हुई और पूरी न हो क्षण उसके मध्य भाग में भगवान राम ने धनुष को तोड़ दिया! कोई देख नहीं पाया! केवल आवाज़ सुनी लोगों ने! प्रभु ने मध्य से धनुष तोड़ा है। जयजयकार हुआ है। और यहां सियाजू हाथ में जयमाला लेकर आई हैं। भगवान के कंठ में जब जानकी ने जयमाला पहनाई तब-

सुर किंनर नर नाग मुनीसा।
जय जय जय कहि देहिं असीसा।।

जानकी ने जयमाला प्रभु को पहना दी। आनंद से मिथिला भर गई है। इतने में परशुराम महाराज का प्रवेश हुआ। विश्वामित्र मिले। दोनों राजकुमार को पैर छुआया। लेकिन राम-लक्ष्मण प्रणाम करते हैं तो परशुराम भी राम को देखकर चुप हो गए! ये कौन हैं? यहां लक्ष्मणजी परशुरामजी के सामने देखकर सोचते हैं कि ये कौन हैं? फिर लक्ष्मण और परशुराम का बड़ा रोचक संवाद है। आख़िर में भगवान राम के अमृत वचन सुनकर परशुरामजी की बुद्धि के द्वार खुल जाते हैं। परशुरामजी जयजयकार करके चले गए।

दूत अयोध्या गए। महाराज दशरथ पूरी अवध को लेकर जनकपुर आये। बड़ा स्वागत हुआ। और ब्याह की तिथि निश्चित हुई। मागशर शुक्ल पंचमी, रामविवाह का दिन, गोरज बेला का समय, भगवान राम की दुल्हा की सवारी निकली। विवाह मंडप में प्रभु ने प्रवेश किया। ब्राह्मणों को प्रणाम किया। आचार्यों को प्रणाम किया। और मर्यादा पुरुषोत्तम राम स्वर्ण सिंहासन पर विराजमान हुए। एक ओर शतानंद, एक ओर महाराज वशिष्ठजी। यहां आठ सखियां जानकीजी को दुलहन के रूप में विवाह मंडप में लाई हैं। एक के बाद एक विधि संपन्न होती जा रही है। कन्यादान का प्रसंग हुआ। अचानक जनकराज को वशिष्ठजी ने कहा, मिथिलेश, सुना है, आप के भाई की दो कन्या और आपकी एक कन्या ओर है। तो हमारे तीन राजकुमार भी तो कुंआरे हैं। आपकी बेटी ऊर्मिला लखन से ब्याह करा दो। छोटे भाई कुशध्वज की बेटी मांडवी भरत को और श्रुतकीर्ति शत्रुघ्न को। यहीं पंडाल में, यही मंडप में चारों का ब्याह हो जाए। और चारों का एक विवाह मंडप में ब्याह हुआ है। ब्याह के बाद बहुत दिन बारात रुकी। अब कन्या विदाई का समय आया। पूरी मिथिला उदास हो चुकी है।

रास्ते में मुकाम करते-करते अवधपति और राम की पूरी बारात चार राजकन्याओं को लेकर अयोध्या पहुंचते हैं। चार सिंहासन पर चारों दंपती को बिठाकर माताएं आरती करती हैं। दिन बीतते गए। लोकरीतियां चलती गई। सब मेहमानगण भी विदा हो गए। 'बालकांड' के समापन में गोस्वामीजी लिखते हैं कि विश्वामित्रजी की बिदाई की बेला आई। एक संत, एक महापुरुष, राजा का कार्य पूरा हुआ और अब विदा मांगता है। राजपरिवार विश्वामित्र को विदा देने गए। सब के नेत्र ड़बड़बा गए थे। और गोस्वामीजी ने अवधपति के मुख से बड़ी प्यारी पंक्तियां बोल दी-

नाथ सकल संपदा तुम्हारी।
मैं सेवकु समेत सुत नारी।।
करब सदा लरिकन्ह पर छोहू।
दरसनु देत रहब मुनि मोहू।।

दशरथजी विश्वामित्र से कहते हैं, हे नाथ, आपके कारण हम सनाथ है। ये जो समृद्धि है, मेरी रानियां, मेरे पुत्र, मेरी पुत्रवधूएं और ये पूरी संपदा आपकी है। मैं तो मेरे पुत्र-परिवार के साथ आपका सेवक हूं। आप को भजन से, अपनी साधना से जब-जब अवकाश मिले, हमें दर्शन देते रहियो और हमारे बाल-बच्चों पर छोह करते रहियो। एक साधुपुरुष की विदा हो रही है। किसी संत से ओर क्या मांगना कि आप को जब भजन में हमारी याद आए तो दर्शन दीजिएगा। विश्वामित्रजी विदा हो गए।

किन्नरसमाज का पारिवारिक, सामाजिक, राजकीय और धार्मिक क्षेत्र में स्वीकार होना चाहिए

बाप! नव दिवसीय रामकथा के आज के विराम के दिन, आरंभ में पुनः एक बार किन्नर अखाड़ा के महामंडलेश्वर लक्ष्मी नारायण त्रिपाठी-लक्ष्मी और आपके साथ इर्द-गिर्द और जो दूर टी.वी. पर देखकर सुन रहे हैं किन्नर समाज उन सभी को व्यासपीठ से मेरा प्रणाम। कथा में उपस्थित विधविध क्षेत्र के आदरणीय महानुभाव, विद्या और कला के उपासक समाजसेवी और ये निमित्तमात्र यजमान परिवार, और सभी मेरे श्रोता भाई-बहन, व्यासपीठ से आप सब को मेरा प्रणाम। अभी-अभी प्रारंभ में जो हमारे परम स्नेही हरीशभाई ने निमंत्रित किया प्रवीण को और प्रवीण भी प्रवचन करता है, मुझे खबर नहीं! लेकिन प्रवचन थोड़ा कर रहा था, वो तो चौपाईओं का गान कर रहा था। और लक्ष्मी थोड़ी बोल रही थी? वो तो पूरे किन्नरसमाज का दिल खोल रही थी! आज वो बोल नहीं रही थी, अपने बाप की पीठ के सामने दिल खोल रही थी। मुझे कल ये माताजी और किन्नरसमाज के सभी मुझे कह रहे थे कि बापू, हम तलगाजरडा आएंगे कभी भी। मैंने कहा कि-

हंसकर बोला करो, हंसकर बुलाया करो।
ये बाप का घर है, आया-जाया करो।

सदैव मेरा दर खुला है, खुला ही रहेगा। तलगाजरडा खुला रहेगा, कायम खुला रहेगा। और कोई एक के लिए नहीं, सब के लिए। मेरी व्यासपीठ और मेरे आदर के कारण भी जब कह दिया कि सागर है तो सागर में तो सब समा सकता है। मैं आपके दिलों के भाव का स्वागत करता हूं और मेरे हृदय की आप सब के प्रति ममता प्रेषित करता हूं। बाप क्या दे सकता है ममता के सिवा? मेरी ममता आप सब के साथ है।

'मानस-किन्नर' जो इस कथा का मूल विषय है, 'मानस' के आधार पर उसकी कुछ उपसंहारक बातें आपके सामने पेश करके फिर संक्षेप में 'मानस' का गायन करके मैं आप से विदा लूंगा। बाप! मैं भूल जाऊं इससे पहले कह दूं मेरे समाज को और किन्नरसमाज दोनों को। मैंने कल कहा था कि चार-चार वस्तु दोनों ओर से हो, ऐसा मेरी व्यासपीठ का, मेरी तलगाजरडी दृष्टिकोण का थोड़ा विचार है। समाज की ओर से मुझे इतना ही कहना है कि इस किन्नरसमाज का सामाजिक लेवल पर भी स्वीकार हो, पारिवारिक लेवल पर भी स्वीकार हो, राजकीय लेवल पर भी स्वीकार हो और धार्मिक लेवल पर भी उसका स्वीकार हो। चारों जगह मात्राभेदे उपेक्षा है। सब से पहले तो पारिवारिक उपेक्षा है। जैसे लक्ष्मी और सब ने मेरे पास पीड़ा व्यक्त कि माँ-बाप ही उसको त्याग देते हैं। जो परम अव्यवस्था की ये कृति है, उसको माता-पिता त्याग देते हैं। ये हुई पारिवारिक उपेक्षा। किसी परिवार में यदि ऐसी परमात्मा की रचना उतर आये, परमात्मा की ऐसी अति विचित्र कृति आ जाए तो ये परमात्मा की कृति, परमात्मा की मूर्ति है। उसके कारण उसके माँ-बाप नहीं है, समाज नहीं है, कोई भी उसका कारण नहीं है। उसका कारण केवल परमात्मा है। इसलिए उसकी पारिवारिक उपेक्षा न हो। मैं रिक्वेस्ट करता हूं परिवारों को।

लक्ष्मी, मेरे दो-तीन श्रोताओं ने आज ऐसा पूछा है कि बापू, आप निरंतर सालों से कहते हैं कि अपनी आय का, अपनी ईन्कम का दसवां हिस्सा आप परमार्थ के लिए निकालो। ये मैं निरंतर समाज को कह रहा हूं। मुझे मेरे श्रोता पूछत हैं कि इस कथा को सुनकर हम एक साल के लिए हमारी आय का दशांश क्या किन्नरसमाज को दे सकते हैं? वो ही करो। कई लोग है, जो मेरी बात का अनुसरण करते हैं। विदेश में मैं जाता हूं तो छोटे-छोटे बच्चें कहते हैं कि बापू, हमने आपकी कथा सुनी है। हम पोकेट मनी से दसवां हिस्सा गरीब बच्चों की किताबों के लिए दे देते हैं। कौन कहता है कि कथा की असर नहीं होती? मैं मेरे समाज को, जिन्होंने पूछा है, जो न पूछ सके उनको कहूंगा कि आपका दशांश आप जब भी देना चाहे, किन्नरसमाज के, उसके पर कोई एहसान करने के लिए नहीं, प्रायश्चित्त करने के लिए दो।

तो ऐसा ये समाज जो है इसका सामाजिक स्तर पर स्वीकार होना चाहिए। और मैं चला जाऊंगा। लेकिन ये प्रवाह रुक न जाए। ये विचार बंधियार न हो जाए। मुझे यकीन है, मुझे आशा है कि ये और बढ़ेगा। और हर क्षेत्र को आगे बढ़ना पड़ेगा। यद्यपि मैं थकनेवाला नहीं हूं। मैं तो नये-नये कदम उठानेवाला व्यक्ति हूं। जिसकी प्रतिक्रिया कोई भी आए। अब सत्तर साल ओलरेडी हो चुके हैं। अब मैं बहुत नाच्यो गोपाल! कभी भी संदेशा आ जाए तो तैयार है। क्या फ़र्क पड़ता है? लेकिन मेरी व्यासपीठ मेरे दादा की करुणा से नये-नये कदम उठा रही है। तो पहले माँ-बाप का कर्तव्य है। मैं रिक्वेस्ट कर रहा हूं हाथ जोड़कर कि पहले तो परिवार ऐसे बच्चों का परित्याग न करें। उसको पढ़ाएं, उसको प्यार करें। और जब माँ-बाप बच्चे को त्यागते हैं तो ईश्वर का बहुत बड़ा परम कारण का अपमान करते हैं।

मुझे जो समाज की ओर से चार बात बोलनी है वो कि परिवार उसका त्याग न करे। दूसरा, सामाजिक स्तर पर उसका स्वीकार हो। तीसरा, राजकीय क्षेत्र में उसका स्वीकार होना चाहिए। मेरी मांग नहीं है। मैं तलगाजरडी विचार पेश कर रहा हूं। मैं मांगनेवाला आदमी नहीं हूं। मैं केवल हनुमान के चरणों मे कुछ कहना हो तो रोकर कह देता हूं। बाकी किसी की दाढ़ी में हाथ नहीं डालता! और तुम दे भी क्या सकते? तुम्हारे पास है क्या? राजकीय स्तर पर इस समाज का सन्मान होना चाहिए। कितनी संख्या होगी किन्नर समाज की भारत में! शायद कहीं विधानसभा के लिए, लोकसभा के लिए, वो उम्मीदवारी करे तो सपोर्ट मिल भी जाए लेकिन संख्या के आधार पर वो ना भी मिले! और आज की जो राजनीति है, उसमें खबर नहीं क्या-क्या होता है! छोड़ो, वो हमारा विषय नहीं। तो राजकीय स्वीकार के लिए मैं ये कहना चाहता हूं कि अच्छी पोस्ट पर, पढ़े-लिखे इन समाज के लोगों को मनोनित करो। चुनाव न लड़ पाए तो राज्यसभा में उसको भेज दो, जो पढ़े-लिखे हैं। राज्यसभा में है व्यवस्था। राजकीय स्वीकार हो, जहां अनामत सीटें होती है। ये तो मेरे विचार है। राजकीय क्षेत्र से भी उसका स्वीकार हो किसी न किसी रूप में। और सबसे बड़ी बात ये है कि धार्मिक जगत में उसका स्वीकार हो। और धर्म करता था स्वीकार पहले। और जो नहीं हुआ हो। लेकिन अब तो सवाल ही नहीं, स्वामीजी बैठे हैं। जगद्गुरु पधारे थे। अब तो अखाड़ा भी स्थापित हो गया। धर्मस्तर पर उसका स्वीकार; और ये हो रहा है। तो धर्मक्षेत्र की ओर से भी इसका स्वीकार हो; सामाजिक क्षेत्र से भी इसका स्वीकार हो और पारिवारिक लेवल पर उसका स्वीकार हो।

अब आपको (किन्नरसमाज को) भी चार वस्तु निभानी है। चार वस्तु आपकी ओर से कहनी है। एक, आप शिक्षण ले। आपको दीक्षा लेने की जरूरत नहीं। आप शंकर से दीक्षा लेकर ओलरेडी जन्मे हैं। आप अर्धनारीश्वर के प्रतीक हैं। दीक्षा तो दी है आपको गुरु परंपरा में। शिक्षा की बहुत जरूरत है। आप पढ़ें, आगे आएं। समाज चारों तरफ से आपके रोजगार की व्यवस्था करे। आपके लिए कुछ विशेष स्थान बनाए जहां आपको ये सब प्राप्त हो आदर के साथ। लेकिन आपकी ओर से मैं चाहूंगा, आप दीक्षित हैं ऐसे बालक, ऐसे जो है उसको त्यागा न जाए; उसको शिक्षित किया जाए। उसके लिए कुछ सेन्टर की भी जरूरत हो सकती है। सरकार मदद करे। स्थानीय संस्था मदद करे। समाज योगदान दे। तो शिक्षण ज्यादा से ज्यादा प्राप्त किया जाए। ताकि ये मांगने की बात बंद हो जाए। दूसरा, आप किसी के घर शुभ प्रसंग में बधाई लेने के लिए जाते हैं ये आपका उपकार है। आपको आना-जाना चाहिए और समाज को दरवाजा खुल्ला भी रखना चाहिए। ये भी शिकायत है कि हमको बधाई नहीं मिलती है! लेकिन आशीर्वाद बहुत बड़ी चीज है। वो आपको पांच हजार-दस हजार दे, उसमें कोई बड़ी उपलब्धि नहीं है। इसलिए ज्यादा जीद मत करना। यद्यपि आप जो दे रहे हैं वो बहुत मूल्यवान है। लेकिन सामने वाले की क्षमता भी देखियेगा। आपकी ओर से इतना योगदान। तीसरी मेरी मांग, आप में ओलरेडी जिन्स में कला और विद्या पड़ी है। आपका कोई भी ठुमका बेताल नहीं है। गायन, नर्तन, वादन ये जो आपके जिन्स में उतरा है; परमात्मा ने विशेषता आपको दी है। उसका भी विकास हो, रियाज हो ये तीसरी बात। शिक्षण हो, जो-जो आज का शिक्षण हो। दूसरा आप आशीर्वाद जैसी मूल्यवान वस्तु दें। समाज दरवाजा खुल्ला रखें; आप भी थोडी जीद कम करे। और किसीके घर बेटा, सामान्य स्तर का हो आप जाओ और बेचारा दो हजार न दे सके तो एक हजार ले लेना और नोट में लिख देना। बाकी का एक हजार तलगाजरडा आकर ले जाना, यस। शिक्षा, आशीर्वाद और ये तीसरी बात है, आपकी कला विकसे, बहुत विकसे क्योंकि आप कैसे गायक है! रावण जब सांयकाल अपने नृत्य अखाड़े में जाते हैं तों किन्नर आकाश से उतरे हैं, ऐसा 'रामायण' में लिखा है। रावण की महफ़िल में किन्नरों की प्रतीक्षा की जाती है।

चौथा, आपको मेरी विनती, आप जब इतना आदर दे रहे हैं व्यासपीठ को, मेरे बोल के प्रति आप इतनी श्रद्धा से दिल खोलकर आप वात कर रहे हैं तब मैं आपको चौथी बात कहूं कि आपके समाज की एकता और समता बनी रहे। क्योंकि पांच तत्त्व का शरीर जिसका हो उसमें राग-द्वेष आ ही जाते हैं। लक्ष्मी किन्नर अखाड़ा की महामंडलेश्वर बन जाए उसके कारण कई लोगों को तकलीफ़ होती होगी भी! तब एकता जरूरी है। छोटा सा छोटा किन्नर कोई फेमस ना हो, सबके प्रति समता हो और सबकी एक युनिटी और एक एकता हो ये बहुत जरूरी है। बड़ों-बड़ों के दिल में तेजोद्वेष होता है। आपके समाज की एकता और समता अकबंध रहे। आप अपनी कला को बहुत विकसित करे। आप शिक्षित हों और आप इतना देते हैं, उसके बदले में समाज ज्यादा दे मैं चाहूं लेकिन यदि कोई कम दे बेचारा तो उससे वो लेकर ज्यादा आशीर्वाद दे देना। ये चार चीज आपकी ओर से हैं।

सामाजिक स्वीकार, धार्मिक स्वीकार, राजनैतिक स्वीकार और पारिवारिक स्वीकार ये चार समाज की ओर से है। चार और चार आठ। ये दोनों में सेतु के रूप में मेरी व्यासपीठ बैठी है नववीं। दोनों का सेतु। जाते समय मुझे इतने ही विचार आपके सामने, जो मैंने कल भी बोला था, यही कहना है, परमात्मा की एक अति विचित्र कृति आपकी अद्भुत विशेषताएं है। मैं फिर 'मानस' की दृष्टि से कहूं, आप उपासक है, आप सेवक है, आप नर्तक है, आप गायक है, आप वादक है, आप आशीर्वादक है, आप प्रणम्य है। किन्नरों को राम ने प्रणाम किया। आपके यहां आपकी कथा आपको समर्पित करके कहने के लिए मेरी तो हर वक्त प्रसन्नता ही है। लेकिन कुछ विशेष प्रसन्नता है 'मानस-किन्नर' गाने के लिए। पूरा समाज इसके प्रति अपना दृष्टिकोण जब बदल रहा है तो उसका मैं स्वागत करता हूं। और ये गति रुके ना; बढ़ती रहे। हर एक क्षेत्र से उसमें गति हो।

कल अति संक्षेप में भगवान राम, जानकी और चारों भाई का विवाह, उसकी कथा गाई गई। दूसरा सोपान 'अयोध्याकांड' है। अयोध्या में वैसे सुख ही था, लेकिन जानकी जब से अवध आई रामजी ब्याहकर जब से अवध आए, तबसे समृद्धि इतनी बढ़ गई। अतिशय सुख की वर्षा अवध में होने लगी और जीवन का जो सत्य है, ये कथा के द्वारा प्रगट होता है कि अत्यंत सुख जब आता है तब थोड़े दु:ख की जरूरत होती है। अतिवृष्टि आदमी को परेशान कर देती है। थोड़ी धूप जरूरी है। इसीलिए 'अयोध्याकांड' के आरंभ में महाराज दशरथ राम को युवराज पद पर नियुक्त करने की घोषणा कर चुके हैं लेकिन कैकेयी के दो वचनों के कारण राम को चौदह साल का वनवास हुआ। राम, लक्ष्मण, जानकी वन का साज सजकर अपने भाई लक्ष्मण और जानकीजी के संग वनयात्रा के लिए समर्पण के लिए तैयार होते हैं। इस मंथन प्रक्रिया में विष भी निकला। अतिशय मंथन से हलाहल निकलता है ये नियम है। और आपके मंथन में कोई हलाहल निकले तो शंकर तो नहीं है! जलन मातरी का शे'र है-

हवे मित्रो बधा भेगा मळी वहेंचीने पी नाखो।
जगतना झेर पीवाने हवे शंकर नहीं आवे।

अब तो प्रत्येक व्यक्ति को अपने परिवार में शिव होना पड़ेगा; समाज में किसी न किसी सज्जन मुखिया को शंकर होना पड़ेगा। तमसा नदी के तट पर रघुनाथ ने पहली रात्रि मुकाम किया। दूसरे दिन शृंगबेरपुर पहुंचे। तीसरे दिन सुमंत को विदा दी और प्रभु ने केवट की नाव में बैठकर गंगा पार की। भरद्वाज ऋषि के आश्रम में प्रभु आए। स्वागत हुआ। दूसरे दिन भगवान ने भरद्वाजजी को कहा, प्रभु, अब हमें कौन रास्ते पर जाना चाहिए। हमें कोई मार्गदर्शन दो। प्रभु की ये लीला थी। प्रभु वाल्मीकि के आश्रम में आए। भगवान वाल्मीकिजी से पूछते हैं, हमें तो चौदह साल वन में रहना है। अब हमें कोई स्थान बताओ जहां रहने से किसीको कोई तकलीफ़ ना हो। कोई मुनि की साधना में भंग ना पड़े। वाल्मीकि मुस्कुराए कि महाराज, मैं आपको जगह तो दिखाऊं रहने की लेकिन पहले आपके बिना कोई खाली जगह तो दिखाओ! आप तो व्यापक हैं। भगवान चित्रकूट आये। और वहां किन्नर लोग, गंधर्व लोग राम के दर्शन के लिए आते हैं। और राम इस समाज को प्रणाम करते हैं और किन्नर, गंधर्व, नाग प्रभु का दर्शन करके नेत्र का फल प्राप्त करते हैं।

यहां सुमंत लौटे। दशरथजी ने प्राणत्याग किया। भरतजी आए। पितृक्रिया हुई। अयोध्या में सभा हुई। आख़िर भरत ने अपना फ़ैसला सुनाया कि मैं पद का आदमी

नहीं हूं, मैं पादुका का आदमी हूं। मैं सत्ता का आदमी नहीं, मैं सत् का आदमी हूं। मुझे चित्रकूट ले चलो। मेरे ठाकुर का दर्शन करूं। फिर प्रभु जो आज्ञा करे हम कुबूल करेंगे। बहुत-से विघ्नों को पार करते भरत चित्रकूट पहुंचते हैं। कुछ समय के बाद जनकराज भी आये। महाराज का शोक व्यक्त हुआ। फिर बड़ी-बड़ी सभाएं हुई कि राज्य का क्या करें। भरत राम पर छोड़ देते हैं। राम भरत पर डाल देते हैं कि जो आप कहो। प्रेम दबाव नहीं डालता; प्रेम समर्पण करता है। आख़िर में भरत ने कह दिया,

जेहि बिधि प्रभु प्रसन्न मन होई।
करुना सागर कीजिअ सोई।।

ये शरणागति की पंक्ति है। ये दृढ़ाश्रय की पंक्ति है। ये परम प्रपन्नता का लक्षण है कि जब आश्रित ऐसा कह दे कि हे प्रभु, जिसमें आपकी प्रसन्नता हो, ऐसा निर्णय हमारे सर आंखों पर। भगवान ने कहा, भरत, पिता ने जो आज्ञा दी है सो मैं निभाऊं और तू भी निभा। चौदह साल के बाद जो करना है हम कर लेंगे। भगवान राम को भरत कहते हैं प्रभु मुझे आधार चाहिए। और तब प्रभु ने कृपा करके अपनी चरणपादुका प्रदान की। भरत और जनक का समाज पादुका लेकर अवध आए। सिंहासन पर पादुका को रखकर पादुका को राज्य सोंप दिया। माँ और गुरु की आज्ञा लेकर भरत ने कहा कि मैं मेरा तमाम दायित्व पूरा करूंगा, लेकिन राम वन में रहे तो मैं भवन में नहीं रह सकता। मुझे इज़ाज़त मिले तो मैं नंदिग्राम में कुटिया बनाकर निवास करूं। भरत को दुःखी मन से सबने इज़ाज़त दी और भरत नंदिग्राम में रामव्रत लेकर बैठ जाते हैं।

'अरण्यकांड' तुलना में छोटा है। भगवान का चित्रकूटवास करीब तेरह साल का हो चुका। अब प्रभु स्थलांतर करते हैं। चित्रकूट छोड़कर राम-लक्ष्मण-जानकी अत्रि ऋषि के आश्रम में पहुंचे। अत्रिजी ने बड़ी प्यारी स्तुति की। जानकीजी अनसूया के चरण में प्रणाम करती हैं। अनसूया माँ ने जानकी को नारीधर्म की गीता सुनाई। उसके बाद तीनों आगे बढ़े। भगवान राम कुंभज से मंत्रविचार लेकर पंचवटी में निवास करने का निर्णय करते हैं। राघव आगे बढ़े। जटायु मिला। गिधराज से प्रभु ने मैत्री की। पक्षीओं को भी स्वीकारा। असुरों को स्वीकारा। केवटों को स्वीकारा। आदिवासीओं को स्वीकारा। अहल्या को स्वीकारा। सब स्वीकार की यात्रा है मेरे राघव की।

भगवान पंचवटी पहुंचते हैं। एक दिन लक्ष्मणजी ने पांच आध्यात्मिक प्रश्न पूछे और प्रभु ने उसका उत्तर दिया जिसको 'रामायणी'महापुरुष 'रामगीता' कहते हैं। उसके बाद शूर्पणखा की कथा आई। विकृति को दंड़ित किया। शूर्पणखा ने खर-दूषण को उकसाया। चौदह हजार राक्षसों को प्रभु ने निर्वाण किया। शूर्पणखा लंका गई। रावण को उकसाया। मारीच को लेकर सीता-अपहरण की योजना बनाकर रावण आता है। इससे पहले राम ने अपने ललित नरलीला की योजना बनाई। लक्ष्मणजी कंदमूल-फल लेने बाहर गये हैं। रामजी ने सीता को कहा, देवी! आप जब तक मेरे साथ इस दिव्य रूप में रहोगी, मैं नरलीला नहीं कर पाऊंगा इसलिए आप अग्नि में प्रविष्ट हो जाएं। जानकी अग्नि में समा गई। प्रतिबिंबित मायारूप राम के पास रखती है। यहां मारीच आता है। प्रभु उसके पीछे गये। लखन भी उसके पीछे गये। शून्यता देखकर रावण यति के वेश में आया। जानकी का अपहरण हुआ। गीधराज जटायु ने मुकाबला किया। अंत में जटायु शहीद हुए। रावण जानकी को लेकर भागा, प्रतिबिंब को लेकर भागा।

राम-लक्ष्मण मृगवध करके वापिस आए। बिना जानकी की कुटियां देखकर प्राकृत सामान्य मानस की तरह प्रभु रुदन करने लगे। ये नरलीला है ईश्वर की। सीता की खोज के लिए निकले। जटायु आख़िरी सांस ले रहे थे। प्रभु ने जटायु को गोद में लिया। सब कथा सुनी। जटायु परमात्मा की गोद में निर्वाण को प्राप्त कर गए। आगे चले प्रभु। कबंध को निर्वाण देकर शबरी के आश्रम में प्रभु पधारे। नव प्रकार की भक्ति प्रभु ने शबरी को सुनाई और प्रसन्नचित्त से शबरीजी ने योगाग्नि प्रगट किया और शबरीजी भगवान की विदाई से पहले वहां पहुंची जहां से कभी लौटना न पड़े। भगवान पंपासरोवर के तट पर पहुंचे। वहां नारदजी आये। प्रभु के गुणगान गाये। संतों के लक्षणों के बारे में पूछा। भगवान ने संतों का लक्षण गाते हुए कहा कि संत के लक्षण को शेष और श्रुति भी नहीं कर सकते।

'किष्किन्धाकांड' में राम और सुग्रीव का मिलन होता है हनुमान माध्यम से। हनुमानजी है शिव। शिव है त्रिभुवन गुरु। और कोई गुरु के माध्यम से ही हम जैसे संसारी और विषयी जीव परमतत्त्व से जुड़ सकते हैं। चाहिए कोई गुरु। हनुमानजी ने ये भूमिका निभाई। मित्र बनाया सुग्रीव को। प्रभु ने वालि को निर्वाण दिया। सुग्रीव को राज्य दिया। अंगद को युवराज पद दे दिया। चातुर्मास शुरू हुआ।

सुग्रीव अपने राजभोग में भगवान को दिया हुआ वचन भूल जाता है। राम को दिया हुआ वादा चुक गया। चार मास पूरे हुए। भगवान ने लक्ष्मण को भेजा कि उसको भय दिखाकर ले आओ। जब लक्ष्मण गए तब सुग्रीव सावधान हुआ और भयभीत होकर शरण में आता है। जानकी की खोज की योजना बनी। युवराज-अंगदवाली टुकड़ी, मार्गदर्शक जामवंतवाली टुकड़ी, जिसमें हनुमानजी भी हैं उसको सुग्रीव दक्षिण दिशा में भेजते हैं। श्री हनुमानजी ने सब से पीछे प्रणाम किया। प्रभु ने मुद्रिका दे दी। मुद्रिका लेकर चल पड़े। वन में भूले पड़े। तृषा लगी। सब परेशान। जान का खतरा पैदा हुआ तब हनुमानजी आगे आ गए। बोले, सामने पक्षी उड़ रहे हैं। शायद जल हो। हनुमानजी सब को ले गये। वहां एक स्वयंप्रभा नामक तपस्विनी बैठी थी। वहां जलपान किया। स्वयंप्रभा ने सब अपनी बात कही। आप सब नेत्र बंद करके बैठो। जानकी के पास पहुंच जाओगे। लेकिन बंदर चंचल होते हैं। आंखें बंद भी की लेकिन कुछ देर बाद खोल भी दी! चांचल्य ने यात्रा रोक दी। सागर के तट पर सब आ गए। संपाति नामक जो जटायु का बड़ा भाई था वो आया। संपाति ने कहा, मैं यहां बैठे-बैठे देखता हूं सीधा अशोकवन में। आपमें से जो लंका में जाएगा वो रामकार्य करेगा। सब बंदर सोचने लगे कि जाए कौन? हनुमान महाराज चुप बैठे हुए हैं। जामवंत ने कहा, हे हनुमान, हे पवनतनय, आप चुप क्यों हैं? रामकार्य के लिए अवतार आप का है। आप उठो। रामकार्य के लिए मेरा अवतार है, सुनते ही हनुमानजी पर्वताकार हो गए। जामवंतजी मुझे सूचना दो, लंका में जाकर मुझे क्या करना है। 'किष्किन्काकांड' का समापन होता है। हनुमानजी लंका जाने को तैयार हैं। और 'सुन्दरकांड' के आरंभ की पंक्तियां-

जामवंत के बचन सुहाए।
सुनि हनुमंत हृदय अति भाए।।

श्री हनुमानजी विरोधों को पार करते हुए लंका में प्रवेश करते हैं। रावण के मंदिर में गये लेकिन कहीं सीता को नहीं देखा। मंदिर में सीता न देखी तब हनुमानजी नगर में देखने लगे। रात का समय। एक भवन देखा जो विभीषण का है। विभीषण और हनुमान की भेंट होती है। विभीषण ने युक्ति बताई। हनुमानजी अशोकवाटिका में प्रवेश करते हैं। यहां रावण आता है। सीता को प्रलोभन देता है। जानकी ने तिनके की भांति उसके प्रस्ताव को ठुकरा दिया। रावण चला गया। हनुमानजी अशोकवृक्ष की घटा में छिपे ये सब

देख रहे हैं। हनुमानजी प्रगट होते हैं। माँ को ढ़ाढ़स मिलती है। फल-फूल खाए। राक्षसों को मारे। अक्षय का तो देहांत हो गया। हनुमानजी को पकड़कर मेघनाद ले गया लंका के दरबार में। आख़िर में हनुमानजी की पूंछ जलाने की रावण ने उद्घोषणा की। पूरी लंका इकठ्ठी हुई। हनुमानजी की पूंछ जलाई। लंका जल गई एक विभीषण के घर के सिवा। हनुमानजी ने समुंदर में स्नान किया। माँ ने चूड़ामणि दिया। माँ को ढ़ाढ़स देकर हनुमानजी निकल गए। हनुमंत आए। सुग्रीव सहित सब राम के पास आए। जामवंतजी ने राम को हनुमंतजी की कथा सुनाई। प्रभु हनुमानजी को गले से लगाकर कहने लगे कि हनुमंत, मेरा पूरा रघुवंश एक बंदर के ऋण से कभी मुक्त नहीं हो पाएगा। भगवान के चरणों में हनुमानजी गिरे और अभियान हुआ। सब समंदर के तट पर आ गए।

यहां रावण ने विभीषण को चरणप्रहार करके निकाल दिया। विभीषण राम की शरण में आया। प्रभु ने पूछा तब सलाह दी, तीन दिन आप समुद्र तट पर अनशन व्रत लें। तीन दिन में समुद्र यदि मार्गदर्शन दे तो समुद्र के सामने बल का प्रयोग न करें। तीन दिन बैठे। समुंदर ने कोई निर्णय नहीं दिया। तब प्रभु कहने लगे कि लक्ष्मण, धनुष-बाण ला। समुद्र भगवान की शरण में ब्राह्मण का रूप लेकर आता है, 'मुझे माफ़ करिये प्रभु, मैं आपको सुझाव दूं। आप सेतु बनाओ।' जोड़ने की बात प्रभु की विचारधारा है। अच्छी लगी।

'लंकाकांड' का आरंभ हुआ। सेतुबंध हुआ। प्रभु ने अपने मित्रों को सखाओं को कहा कि ये उत्तम धरणी है। मेरी इच्छा है कि यहां शिव की स्थापना की जाए। रामेश्वर भगवान की स्थापना हुई। वैष्णव और शैव का ऐक्य सिद्ध किया। सुबेल के शिखर पर प्रभु ने डेरा डाला। प्रभु के तरफ से अंगद को राजदूत के रूप में संधि का प्रस्ताव लेकर भेजा गया कि अभी भी रावण समझ जाए तो हमें युद्ध नहीं करना है। रावण माना नहीं। युद्ध अनिवार्य हुआ। घमासान युद्ध हुआ। आख़िर में भगवान राम और रावण का युद्ध शुरू हुआ। इकतीस बाण फ़ेंककर के प्रभु ने दस मस्तक, बीस भुजा, इकतीसवां बाण रावण की नाभि में मूल केन्द्र पर डाला और रावण का अमृत कुंभ टूटता है। और रावण जीवन में पहली बार और अंतिम बार बोला, 'राम कहां है?' और उसकी चेतना निकलकर प्रभु के चेहरे में समा गई तेज के रूप में। मंदोदरी आई। राम की स्तुति की। पुष्पक तैयार हुआ। सब सखाओं को साथ में लेते हैं और भगवान पुष्पक में बैठकर अवध की यात्रा का आरंभ करते हैं। जानकी को विमान से समरांगण दिखाते हैं। मुनिगणों के आश्रमों में धन्यता देते हुए राम का विमान अवध की ओर। हनुमानजी को अयोध्या भेज दिए गये। राम शृंगबेरपुर में उतरे हैं। भगवान ने केवट को कहा कि उस समय तूने मुझे नौका में बिठाया था, तूने उतराई नहीं ली थी, आज मैं तुम्हें उतराई देने आया हूं। बोल, क्या दूं? तब केवट लोग रो पड़े, प्रभु, ये तो दूसरी बार दर्शन करने की युक्ति थी। बाकी आपने हमको क्या नहीं दिया? केवट ने कहा, प्रभु, हमनें आपको नौका में बिठाया था। हो सके तो आप हमें विमान में बिठाकर अवध ले चलो। भगवान ने केवट को अपने विमान में बिठाया है और विमान उड़ान भरता है। 'लंकाकांड' पूरा होता है।

'उत्तरकांड' में आरंभ में भरत विरह में मरने की तैयारी में है इतने में हनुमानजी डूबे हुए को जैसे जहाज मिल जाए ऐसे भरत को थाम लेते हैं। पूरी अयोध्या में बात फैल गई, हरि पधार रहे हैं। विमान सरजू के तट पर उतरता है और पूरी अवध दौड़ी है। जैसे ही राघव विमान से बाहर आये उसके बाद बंदर, असुर, रींछ, केवट आदि वो सब जब विमान से नीचे उतरे तो सब मानवरूप में उतरे। सब मनुष्य हुए। मानव बनने की पूरी प्रक्रिया प्रभु ने सिद्ध कर दी चौदह साल में। गुरु वशिष्ठ और राघव मिले। संतगण मिले और भरत और राम जब गले मिले तो कोई निर्णय नहीं कर पाया कि दोनों में से वनवासी कौन था? प्रभु ने अवधवासीओं को देखा। परमात्मा ने अमित रूप धारण किया। जिसका जैसा योग ऐसे सब को मिले। भगवान अयोध्या में प्रवेश करते हैं। प्रभु ने सोचा कि इस मानस-मंथन से जो हलाहल विष निकला बदनामी का वो मेरी माँ कैकेयी शंकर बनकर पी गई। मैं पहले वहां जाऊं। प्रभु पहले वहां गये। कैकेयी रो पड़ी! सब माँ कौशल्या के पास गये। माताओं ने अपनी पुत्रवधू को स्नान करवाया। वनवासी लिबास उतरवाए और राजपोशाक पहनवाए। भगवान राम ने अपने भाईओं को स्नान करवाया और खुद ने स्नान किया। वशिष्ठ ब्राह्मणों से पूछते हैं कि आज ही राजतिलक कर दें? ब्राह्मणों ने कहा कि महाराज, अब कल की मुद्दत न डाले। एक ममता की रात बीच में आ गई तो कैकेयी की ममता ने बाजी बिगाड़ दी और चौदह साल रामराज्य दूर हो गया! अभी ही तिलक कर दिया जाए। दिव्य सिंहासन लाया गया। राम सत्ता के पास नहीं गए। सत्ता सत् के पास आई।

भगवान राम दिव्य सिंहासन पर गुरुदेव की आज्ञा प्राप्त करके बैठने के लिए पृथ्वी को प्रणाम करते हैं, अपनी जनेता को प्रणाम करते हैं, दिशाओं को प्रणाम करते हैं। अपना जो कुल है सूर्यकुल, भगवान भास्कर को प्रणाम करते हैं। सब को प्रणाम करके प्रजाजनों को प्रणाम करके भगवान विनम्रता से अयोध्या के राजसिंहासन पर विराजित। जानकीजी वामांग में विराजित हुई। और त्रिभुवन को रामराज्य यानी प्रेमराज्य देते हुए भगवान वशिष्ठजी ने राम के भाल में तिलक किया। त्रिभुवन में जयजयकार हुआ है। चारों वेद बंदीननों के रूप में दरबार में आये। ब्रह्मभवन वेद चले गए और उसके बाद राज्य में तो जैसे त्यागी, वैरागी, फ़कीर को ही रस होता है इसलिए महादेव कैलास से सीधे रामदरबार में उतर आये। प्रभु की स्तुति की। बार-बार सत्संग और भक्ति का वरदान मांगकर शिव कैलास गए। रामराज्य हुआ। भगवान ने अपने मित्रों को निवास दिया। समय मर्यादा पूरी हुई है। जानकी ने दो पुत्रों को जनम दिया। जिसका नाम लव-कुश। तुलसीदासजी संवाद के महात्मा है इसलिए सीता का सगर्भा स्थिति में पुनःत्याग वो विवाद और दुर्वादवाली कथा तुलसी नहीं लिखते। रघुवंश के वारिस की बात कहकर तुलसी ने रामकथा को विराम दे दिया। कागभुशुंडिजी और गरुड का संवाद बाद में आता है। सात प्रश्न गरुड पूछते हैं और भुशुंडि उसका जवाब देते हैं।

भुशुंडि ने गरुड के सामने कथा को विराम दिया। याज्ञवल्क्य ने ये कथा विराम की कि नहीं, ये स्पष्ट नहीं है। तीसरी पीठ थी कैलास, जहां पार्वती को कथा सुनाई जा रही थी। पार्वती के सामने मेरे महादेव ने कथा पूरी की। कलिपावनावतार पूज्यपाद गोस्वामीजी ने अपने मन को और साधुसमाज को कथा सुनाते हुए रामकथा को विराम दिया। इन चारों परम आचार्यो की आशीर्वादक छाया में बैठकर ठाणे की इस भूमि पर मेरी तलगाजरडी व्यासपीठ आपके साथ नौ दिन रामकथा गा रही थी। आज तुम्हारा मोरारिबापू भी इस कथा को विराम देने की ओर है तब मैंने बहुत कहा नव दिन। मेरे बुद्धपुरुष, मेरे त्रिभुवन की कृपा से मैं आपके सामने रामकथा गा रहा था। जो किन्नरसमाज का आयोजन था और मेरे किन्नरसमाज को समर्पित हो रहा है तब इस कथा को विराम देते समय और क्या कहूं साहब? आशीर्वाद तो मैं क्या दूं? लेकिन जब तक व्यासपीठ पर बैठा हूं तब तक व्यासपीठ की तपस्या से और 'मानस' के निकट बैठा हूं तब मैं हनुमानजी के चरणों मे प्रार्थना करता हूं आप सब के लिए कि हे प्रभु, मेरे इस समाज को कायम खुश रखना, प्रसन्न रखना, आबाद रखना।

पूरे कथा के आयोजन से किन्नरसमाज के इस आयोजन से निमित्त बन गये ये परिवार, रामकथा का सपना लेकर एक युवक चला गया हमारा, लेकिन उसका परिवार, उसका बेटा, उसकी बेटी, उसकी धर्मपत्नी, उसके परिवारजन इसमें लग गए। ये प्रवीण, महेश और उनके सब साथी जो इसमें जुड़ गए, केवल निमित्तमात्र। उनके साथ कितने लोग जुड़ गए! मोरारिबापू आपके प्रति धन्यवाद व्यक्त करता है। और ऐसे ही करते रहना। तो नव दिवस में यहां से जो गाते हुए, संवाद हुआ उसमें से कुछ गांठ बांधोगे तो आपका व्यक्तिगत जीवन भी विकसित होगा, विश्राम पायेगा। तो बाप! इन एक बहुत सुकृत, एक बहुत शुभ इकठ्ठा हो गया है नव दिन में। तो आओ, इस 'मानस-किन्नर' इस पूरी रामकथा के शुभ तत्त्व को आज पचीस डिसेम्बर को दोपहर को हम मेरे अनगिनत श्रोताओं को जो दुनिया में जो जहां बैठे-बैठे एक विज्ञान का सदुपयोग कर रहे हैं, टी.वी. पर देख रहे हैं, इन सभी को साथ लेकर हम सब आओ मिलकर के ये नव दिवस की रामकथा किन्नरसमाज के चरणों में समर्पित कर दें, 'तेरा तुझको अर्पण।' मैं किन्नरसमाज को ये कथा समर्पित कर देता हूं।

किन्नरसमाज का सामाजिक लेवल पर भी स्वीकार हो, पारिवारिक लेवल पर भी स्वीकार हो, राजकीय लेवल पर भी स्वीकार हो और धार्मिक लेवल पर भी उसका स्वीकार हो। चारों जगह मात्राभेदे उपेक्षा है। सब से पहले तो पारिवारिक उपेक्षा है। मैं रिक्वेस्ट कर रहा हूं हाथ जोड़कर कि पहले तो परिवार ऐसे बच्चों का परित्याग न करें। उसको पढ़ाएं, उसको प्यार करें। दूसरा, सामाजिक स्तर पर उसका स्वीकार हो। तीसरा, राजकीय क्षेत्र में उसका स्वीकार होना चाहिए। राजकीय स्तर पर इस समाज का सन्मान होना चाहिए। और सबसे बड़ी बात ये है कि धार्मिक जगत में उसका स्वीकार हो। धर्मस्तर पर उसका स्वीकार; और ये हो रहा है।

मानस-मुशायरा

तेरे आज़ाद बंदों की न ये दुनिया, न वो दुनिया,
यहां मरने की पाबंदी, वहां जीने की पाबंदी।
-इकबाल

कहनेवालों का कुछ नहीं जाता,
सहनेवाले कमाल करते हैं।
कौन ढूंढे जवाब दर्दों के?
लोग तो बस सवाल करते हैं।
-गुलज़ार

तुझे रुसवाई का डर है तो चलो यूंही सही,
कि तेरा हो के रहूं, पर तेरा ना लगूं।

•

वो जो मेरे करीब से हंसकर गुजर गए।
कुछ खास दोस्तों के चेहरे भी उतर गए!
-राजेश रेड्डी

या तो कुबूल कर मेरी कमज़ोरियों के साथ।
या छोड़ दे मुझे मेरी तन्हाइयों के साथ।
-दीक्षित दनकौरी

ना मैं मीरां, ना कबीरा, ना मैं तुलसीदास हूं।
उसको खोजके रहूंगी, मैं अटल विश्वास हूं।
-दीप्ति मिश्र

ना हारना जरूरी है, ना जीतना जरूरी है।
जगत एक खेल है, यहां खेलना जरूरी है।
-राज कौशिक

ना कोई गुरु, ना कोई चेला।
मेले में अकेला, अकेले में मेला।
-मज़बूरसाहब

कलिप्रभाव से एकमात्र हनुमानरूपी नाम मुझे और आपको मुक्त कर सकता है

महुवा में अखंड रामधून के कार्यक्रम में मोरारिबापू का मननीय प्रवचन

सबसे पहले 'बंदउ नाम राम रघुबर को।' परमात्मा के नाम को ही पहले प्रणाम जिस तरह से गोस्वामी करते हैं। उसके बाद प्रेमभिक्षुजी बापा जिनको अपना सद्गुरु मानते हैं ऐसे ब्रह्मलीन परमपूज्य काश्मीरी बाबा की परम चेतना को मेरा प्रणाम। परमपूज्य प्रेमभिक्षुजी महाराज, उनकी नाम परायण चेतना को मेरा प्रमाण। और नाम महिमा में जिन्होंने जीवन समर्पित किया हो ऐसे जो हो गये हैं, जो वर्तमान में हैं उन सबको और भविष्य में जो होनेवाले हैं उन सबको भी मेरा प्रणाम। श्री हनुमानजी महाराज का जन्म महोत्सव मनाया जा रहा है तब, इक्कीस वर्ष पहले महुवा में अखंड रामनाम संकीर्तन का दीप प्रज्वलित हुआ था। अभी महानुभावों का नाम स्मरण किया गया। आप सभी नामप्रेमी भाई-बहनों, भाई हरेश, उनके माता-पिता, उनका परिवार जो इसमें तनुजा और वित्तजा सेवा दे रहा है और मानसी सद्भाव यानी मानसी सेवा भी, उनके समस्त परिवार को भी साधुवाद। पचीस में वर्ष के उत्सव के लिए आपका जो मनोरथ है उसे श्यामसुंदर यमुने महाराणी पूरा करे।

महुवा में आप किसी का नाम जानते हो, उसके नाम से आप परिचित हो, कोई आपको बस स्टेशन पर मिल जाये, रेलवे स्टेशन पर मिल जाये अथवा तो किसी होटल में अथवा किसी भी गन्ने के रस की लारी पर मिल जाये और कोई परिचित नाम बोले कि महुवा में सर्वोदय सोसायटी या इस सोसायटी में इस भाई को आप पहचानते हैं? इसमें पहले अपने सामने उसका रूप आता है, ये तो फलाना भाई पेन्ट पहनते हैं, ऊपर टी-शर्ट पहनते हैं, सप्ताह में दो-चार लहंगा भी पहनते हैं, ऊपर छोटा बुशर्ट पहनते हैं! ये सब ही उसके बाने सहित कृष्णदर्शन अपने सामने आता है। अर्थात् नाम से परिचित हो तो रूप अपने सामने आता है। और दूसरा अपने मानस-पटल पर टकराता है वो ये काम क्या करता है, वो भाई क्या करता है? उसकी कपड़ें की दुकान है, हीरा का कारखाना हैं, रीटेल में कुछ

करता है, क्या करता है? उसका काम भी अपनी स्मृति में आता है। और वो परिचित जिसका नाम हमें कोई याद दिलाता है, मतलब महुवा में किस गली में, हवेली मुहल्ले किस जगह वो रहता है, उसका ठिकाना भी हमारे मगज में आता है। एक नाम यदि अपने पास हो तो व्यक्ति का रूप, व्यक्ति क्या करता है और उसके रहने की जगह सबकुछ उत्तरोत्तर अपने समक्ष आता है। उसी तरह से परमात्मा का नाम फिर रामनाम, कृष्णनाम, शिवनाम, अल्लाह नाम, माताजी का नाम जो कोई नाम हो। तुलसीदासजी ने नाम की महिमा गायी है। उन्हें कोई आग्रह नहीं कि ये नाम राम ही होना जरूरी है।

नाम प्रभाउ जान सिव नीको।

कविता में, नियम में शायद कोई मुश्किली न पड़ी होती, यदि नाम की जगह तुलसी ऐसा लिखते-

नाम प्रभाउ जान सिव नीको।
कालकूट फलु दीन्ह अमी को।।

परंतु वे 'राम' शब्द नहीं लिखते 'नाम प्रभाउ जान सिव नीको।' लिखा। अर्थात् नाम को बहुत ही विस्तारपूर्वक रखा है कि कोई भी नाम। संकीर्णता से बाहर आ गये। तो परमात्मा का नाम लेने से सगुण उपासकों को उसके रूप की झांकी होने लगती है। श्रीनाथजी भगवान का नाम ले यानी 'वांके अंबोडे श्रीनाजथी', ये अपने समक्ष उनकी छबि आयेगी ही। बांके बिहारी का नाम लो यानी वो बांकेबिहारी की छवि अपने समक्ष आती है। और फिर उसका कर्म; परमतत्त्व के कर्म को हम लीला कहते हैं। मतलब उसकी पूरी लीला। उसने क्या-क्या किया ये सब अपनी आंखों के सामने आता है। और फिर उसका धाम। फिर वृंदावन हो, अयोध्या हो, चित्रकूट हो, कैलास हो, मुझे कोई अड़चन नहीं। मक्का-मदीना हो, जेरुसलाम हो, दुनिया में कोई भी। ये सब अपने सामने आते हैं। फिर आपको मेहनत करनी हो, आप मेहनती हो तो आप दूसरी साधना अवश्य करें। परंतु नाम के सिवाय दूसरा कुछ जरूरी नहीं है इतना याद रखना।

तुलसीदासजी ने ऐसा कहा कि ये कलियुग है ये कालनेमि राक्षस है। और कालनेमि नामक राक्षस को कोई मार नहीं सकता था। इस आदमी को मारनेवाला एक ही व्यक्ति निकला और वो है हनुमान। आज हनुमान जन्ममहोत्सव है इसलिए इस पंक्ति की बात आपको कहना चाहता हूं। कालनेमि को हनुमानजी ने निर्वाण दिया। तुलसी कहते हैं, ये रामकाल की घटना है। अभी क्या? अभी तुलसी कहते हैं, ये कलियुग है। कलियुग स्वयं ही कालनेमि राक्षस है। जिस काल में हम सब जी रहे हैं। और अभी अपने कर्मकांड के पूजनीय भूदेव जब संकल्प कराते हैं तब ऐसा ही कहते हैं, 'कलि प्रथम चरणे।' अभी तो ये पहला चरण है। जो थक गये हैं, अब गये हैं वो तो सब घबरा गये हैं कि पहले चरण में ऐसा है तो दूसरे, तीसरे, चौथे चरण में क्या होगा? पर ऐसा नेगेटिव विचार करने की जरूरत नहीं है। पहले होगा? वरराजा का और कन्याओं पहले फैरा में आनंद शुरू होता है। धीरे-धीरे वरराजा आगे चलता जाता है, कन्या पीछे-पीछे चलती है। पहला फेरा, फिर दूसरे में उससे विशेष और चौथा फेरा होता है तब तो अनहद आनंद होता है। यह काल ऐसा है कि पहले चरण में महुवा जैसे छोटे से गांव में इतनी सब महिमा इक्कीस वर्षतक ये कलि प्रथम चरणे! और उसमें मैं सबको देखता हूं तो लगभग युवा ही बैठे हैं। कितनी युवानी नाम के लिए उत्साहित है!

तो ये कलियुग के लिए यह पहला फैरा है। दूसरे चरण में तो मुझे लगता है कि शायद हम रूप तक पहुंच जायेंगे। तीसरे चरण में तो हम आंखें बंद करे तब उसकी लीलाएं दिखने लगेगी। भगवान गौरांग चैतन्य महाप्रभु प्रेमावतार ऐसा कहते हैं, जब कृष्णस्मरण में लीन हुए 'हरि बोल हरि बोल' करते तब उन्हें ये संकेत हुआ कि तुम हमारे सनातन स्वामी, जीव गोसांई ये उनके जो दो-तीन मुख्य शिष्य थे उन्हें वृंदावन भेजो और उन्हें कहो कि वृंदावन में घूमें और उन्हें कृष्णकृपा सी लीला किस जगह की है उसका उन्हें साक्षात्कार होगा। और सनातन और जीव ने दोनों वृंदावन आये। और कृष्ण ने माखन चौरी कहां की, कृष्ण घोडा कहां बने, श्रीदामा घोडा कहां बने, नागदमन की लीला कहां की, रासलीला कहां हुई, निकुंज की लीला कहां हुई, ऐसी कितनी लीलाएं कृष्ण की ये चैतन्य महाप्रभु, ये महापुरुषों ने अनुभव किया। और उसके मूल में केवल नाम था।

चैतन्य का समूह था कि वृंदावन के एक वृक्ष के नीचे एक रात से अधिक न रुकना गोसाई। 'भगवन्, क्यों?' तो कहे कि पेडों में ममता हो जायेगी। फिर आप कृष्णलीला के दर्शन में आगे नहीं जा सकेंगे। आपको वृंदावन का एक वृक्ष पकड़ रखेगा। आप पहले अवतारकार्य पूर्ण कीजिए और फिर किसी वृक्ष के नीचे बैठकर

नामस्मरण कीजिएगा। दो-तीन व्रत दिये थे साहब! एक वृक्ष के नीचे एक रात से अधिक न रहना। दूसरा, व्रज के पांच घर की भिक्षा लेनी और हाथ में लेनी और यमुनाजी में उसे अंजलि सहित डबोरके वो स्वादमुक्त हो जाये फिर उस भिक्षा का आप आदर करना। भिक्षा न लेना हो वहां तक आप दिगंबर घूमना। परंतु भिक्षा देने के लिए अधिकतर औरते-लड़कियां ही आती हैं। पुरुष तो अपने-अपने काम में रहते हैं, तब लोकलज्जा निवारण के लिए आप अपने कटि भाग पर एकाद वस्त्र पहनना है। परंतु वह वस्त्र आपको किसी ने भेट दिया हो ऐसा न होना चाहिए। इस्तेमाल हो गया वस्त्र जहां-तहां पड़ा हो उसको इकट्ठा करके, उसके चिथड़े को सिलाकर के, यमुनाजी में उसे थोकर उसे भिक्षा के समय लोकलज्जा निवाण के लिए एक वस्त्र धारण करना। और अखंड नामस्मरण रखना।

मुझे कहना ये है कि प्रथम चरणे नाम है। दूसरे चरण पर उसका रूप है और तीसरे चरण के बाद लीला शुरू होती है। शुद्ध हृदयी महापुरुष को अनुभव होता रहता है कि इस जगह पर ये घटना घटी है। इतिहास तो बाद में उसकी गवाही भरता है। कार्बन टेस्ट ये सब बाद में आता है। और फिर अंत में धाममय जीवन बनना है। ये तो पहला चरण है साहब! और पहले चरण में इतनी युवानी नाममयी बनी है ये मुझे अच्छा लगता है। और बहुत ऐसा मोह भी न रखना चाहिए कि अधिक से अधिक लोग आये। अधिक लोग कितने करें ये अच्छा है पर भले न पांच ही करे, परंतु अधिक भाव से करे ऐसा आग्रह रखना चाहिए। अधिक लोग करे ये ठीक है। ये बहुत अच्छा है। मैं अभी दस-पंद्रह मिनट गया। वर्ष में एक-दो बाद जाता हूं। क्योंकि मैंने जिस दिन उद्घाटन किया तब कहा था। मेरे साथ जो थे वो एक ने भी नहीं पालन किया! मैंने पाला है। नहीं तो सबने मेरे साथ ही हार पहना था! पर फिर व्यस्त होते हैं! बाहर रहते हो स्वाभाविक है। तुम वहां बैठो न शांति हो; भले तुम कीर्तन न करो। तुम ध्यानमार्गी हो तो इतने सुंदर राम में धीरे-धीरे विलंबित नाम संकीर्तन चल रहा हो न तो ध्यान में भी मदद मिलती है साहब! तुम कीर्तन चाहे न करो, कम्पल्सरी नहीं है। मैं तो इतनी बिनती करूंगा कि आप ध्यानमार्ग में मानते हो, आप मौन रहे तो भी वहां बैठोगे तो वहां का अणु-परमाणु असर किये बिना रहेंगे ही नहीं। थोड़ी तो करेंगे ही। बहुत शोरगुल नहीं होना चाहिए। नगारा और झाल चौबीस घंटे नहीं होने चाहिए। हम भागे उससे पहले देव भाग जायेंगे! भाव बढ़े ये जरूरी है। संध्या बढ़े ये बहुत अच्छा है। अभी आप केवल ये नाम महिमा सुनने के लिए इतनी संख्या में आये हैं और ऐसा लगता है कि महुवा में मानो दूसरे दिन की कथा चल रही है। ये प्रथम चरण का प्रताप है। साहब! आवाज़ तो जिसे भाव होगा उसे सुनाई देगा। नहीं भाव होगा उसके कान में तो जायेगा ही। और तुलसी कहते हैं-

भायँ कुभायँ अनख आलसहूँ।
नाम जपत मंगल दिसि दसहूँ।।

तो कलियुग ये कालनेमि राक्षस है, ऐसा तुलसी कहते हैं। कालनेमि के पांच लक्षण 'रामायण' में हैं। और ये पांच लक्षणवाले कालनेमि को हनुमानजी ने वीरगति दी, निर्वाण दिया। तुलसी कहते हैं रामनाम की त्रेताकालीन घटना है। अभी कलियुग में, अभी वर्तमान में हम जी रहे हैं तब ये कलियुग पूरा का पूरा ये कालनेमि राक्षस है। और उस समय हनुमानजी ने उसे मारा। अभी कलियुगरूपी कालनेमि को मारने के लिए 'नाम सुमति समरथ हनुमान्।' नामरूपी हनुमान ही सफल होगा।

कलियुग कालनेमि, इसके चार-पांच लक्षण। वैसे तो काल बहुत अच्छा है। पर उसके थोड़े दोष तो हैं कलियुग के। पहला कलियुग का दोष गिनने में आता है वो कलियुग में कपट बहुत होता है। कलियुग का एक स्वभाव है कपट करना। हम सबका अनुभव है। अपने स्वार्थ के लिए हम कपट करते होते हैं। ये कलिप्रधान है। दूसरा कलियुग का एक प्रताप है मुखौटा बदलना। आज मैं आपके सामने ये चहेरे से होऊं, कल आपके सामने दूसरे चेहरे को होऊं, परसों तीसरे। और ऐसे मुखौटा बदलना आता हो वही रावण के पास रह सकता है। अमुक के सेक्रेटरी उसके जैसे होते हैं, वही उनका अनुकूल पड़ते हैं। ये आदमी वेशपरिवर्तन बहुत करता है कालनेमि। तीसरा कालनेमि का लक्षण है, ये मायावी है। ये कब कौन-सा खेल रचता है यह किसीको पता नहीं चलता। ऐसा मायावी है। और चौथा लक्षण है कालनेमि का, उसमें संकीर्णता बहुत है। वो कमंडल रखता है। इस आदमी के पास कमंडल है। कमंडल एक संकीर्णणा का प्रतीक है। विशालता नहीं है इस आदमी में। कलियुग का ये स्वभाव है संकीर्णता। और पांचवां, भविष्यवेत्ता नहीं है। फिर भी दूसरे को फंसाने के लिए ये मानो भविष्यवेत्ता हो ऐसी बातें करता है। ये कालनेमि के जीवन से निचोड़कर काटे हुए पांच मुद्दे है तलगाजरडा के द्वारा। बार-बार इसके लिए कहता रहता हूं कि आप दूसरे

ग्रंथों में न खोजे! नहीं तो आप खोजोगे कि किस ग्रंथ में लिखा है? उसमें दो-पांच वर्ष निकल आयेंगे! वहां फिर तलगाजरडा कुछ दूसरा ही कहेगा!

साहब! लक्ष्मणजी को मूर्छा आयी। मेघनाद ने शक्तिप्रहार किया। लक्ष्मण मूर्छित हुए। मैंने 'रामायण' में बहुत बार कहा है। लक्ष्मण बहुत ही जागृत आदमी है, सावधान आदमी है। चौदह वर्ष जगा है ऐसा कहायेगा। नींद और नारी का त्याग किया है। परंतु कूटस्थ-तटस्थ साधु के तौर पर मुझे कहना चाहिए कि लक्ष्मणजी ने नींद और नारी का त्याग किया था पर कभी उतावल में निंदा का त्याग नहीं किया था। हां, थोड़ी झोंका आ गया! नहीं तो भरत की निंदा लक्ष्मण नहीं करते। राघवेन्द्र, इस भरत को किसी ने नहीं कहा कि इन में राम अकेले नहीं है। उनके साथ सुमित्रा का लड़का भी गया है। और यदि भरत के मन में कुभाव न होता तो चतुरंगिणी सेना लेकर वहां आने की क्या जरूर थी? परंतु विष की वेल को ठाकुर, अमृत का फल नहीं आता। माँ कैकेयी विष की वेल है और उनकी संतान है। और आज उसको चित्रकूट के मैदान में यदि समाप्त न करूं तो रामानुज न कहलाऊंगा! जाने-अनजाने , राम तरफी अतिशय प्रीति के कारण भी ऐसा कहते हैं। अतिशय प्रीति अविवेक करने में देर नहीं लगती। अतिशय प्रीति का एक लक्षण है, वो अविवेक कराने में देर नहीं करती। ये अतिशय प्रीति जब कट्टरता में बदलती है तब हिंसा तक ले जाती है। थोड़ी-सी सम्यकता की बहुत जरूरत है। कभी-कभी वो बोल डालते हैं, नहीं तो लक्ष्मणजी बहुत ही जागृत आदमी है, सावधान आदमी है। आठों पहर होश में रहनेवाले आदमी हैं।

मुझसे बहुत से लोग पूछते हैं, चौबीस घंटे क्या लक्ष्मण जागते होंगे? ये तो घर पर बैठे हैं, अपना होमग्राउन्ड है इसलिए कहता हूं। लक्ष्मणजी रात को सो जाते हो तो मोरारिबापू को कोई तकलीफ नहीं! हां, सोने दो न कभी कभी! इसमें क्या अड़चन है? गलत क्या है? जिद्द किस लिए? यहां निद्रा को वश करके अपने यहां 'गीता' में अर्जुन के लिए प्रयुक्त शब्द हैं 'गुडाकेश', निद्राजित, साहब! निद्राजित की अपेक्षा भी निंदाजित अधिक उत्तम है। क्योंकि बहुत जागने के बाद सबको खूब समझने की इच्छा होती है और सबके विषय में बहुत जानने की इच्छा होती है! दिन में जागने के बाद इतना सब जानकर पूरी रात ये कचरा मगज में रखते हैं फिर रात को भी जगते होंगे तो तो खबर नहीं, दूसरे दिन की सुबह कैसी होगी? सम्यक् जागृति जमीरी है। मतलब लक्ष्मण तो जगे ही होंगे। उन्हें महापुरुष और शेषनाग रूप में झोंका नहीं खाना चाहिए। नहीं तो इस पृथ्वी के ऊपर प्रलय आ जाएगा। शेष के माथे पर अपनी जो पौराणिक धारणा है।

जो सहससीसु अहीसु महिधरु लखनु सचराचर धनी।
सुर काज धरि नरराज तनु चले दलन खल निसिचर अनी।।

पृथ्वी को मस्तक पर धारण करता हो वो शेष सो जाये तो पृथ्वी की स्थिति क्या होती? इसलिए ऐसा कहा जाता है कि अभी तक सर्प सोये नहीं हैं। हां, ऐसा कहते हैं। सर्पों के लिए दो वस्तु। उनको नींद नहीं और उसके कान नहीं हैं। 'श्रवन रंध्र अहि भवन समाना।।' मेरा तुलसी कहता है, जो रामगुणगान अथवा तो शुभवार्ता अपने कान में नहीं आने देता उसका कान कान नहीं है, सर्पों का बील है, अहिभवन है, सर्पभवन है।

पय पाने भुंजगानां केवलम् विष वर्धनम्।।

ऐसी सुभाषित भी अपने यहां है कि सांप को आप दूध पिलाओ तो विषवर्धन ही होगा। परंतु उपनिषद में सांप और चूहे की बहुत लघुवार्ता है, लघुकथा है। ये सर्प ऐसा है साहब, सर्प लगभग किसी को दंश देता है तो इसमें सर्प का विष बढ़ता है, उसको प्रमोशन मिलता है, ऐसा कुछ नहीं है। सर्प किसी को दंश देता है इससे उसकी स्पीड बढ़ती है ऐसा भी नहीं है। परंतु उसकी खलता ऐसी है कि कारण बिना का किसीको दंश देता है। और एक चूहा; आज सुबह में वीणा की बात कर रहा था। उपनिषदकार कहते हैं, वीणा का तंतुवाद्य है वो एक कोने में, संगीतज्ञ के घर में पड़ा होगा, वहां चूहा उसके तार को काटता है। वीणा का तार चूहे का खुराक नहीं है और वो तार काटने के बाद कुछ चूहे को फायदा होनेवाला नहीं है। परंतु खल मानव होगा वो कारण बिना दूसरे का उपकार करेगा। नहीं तो वीणा के तार को काटने की चूहे को क्या जरूरत है? कपडा काट डाले! कपड़े को चूहा क्यों काटता होगा? क्यों अपना कपड़ा काटे कारण बिना? और समाज में भी यार नगरपालिका का चुनाव हो, जिल्ला पंचायत का चुनाव हो, विधान सभा का चुनाव हो, कितना कितना हम सब काटने और कुतरने का काम करते हैं! अभी कोई आचारसंहिता नहीं है इसलिए मैं बोल सकता हूं!

अहि मूषक इव सुनु उरगारि।

तो सर्प सोता नहीं ऐसा कहा जाता है। और सर्प श्रवण नहीं करता ऐसा कहा जाता है। पर लक्ष्मणजी यदि दो-पांच घंटे सो जाते हो तो मुझे सचमुच तकलीफ़ नहीं है! क्योंकि वे मंदिरों में भी वैसे के वैसे खड़े हैं। उन्हें कभी तो बैठने दें! कभी करवट लें। आज कल्पना के लिए। ऐसा महापुरुष जागृत महापुरुष उसे इन्द्रजित ने प्रहार किया और मूर्छित हो गया साहब! 'मेटि जाइ नहिं राम रजाई।' राम रजाई नहीं मिट सकती। राम की ही इच्छा थी। मेरा भाई इतने वर्ष से जाग रहा है। मैं कह-कह के थक जाऊंगा तो भी वो नहीं सोयेगा। कुछ ऐसी लीला करूं कि इन्द्रजित कुछ ऐसा प्रहार करे कि कम से कम मेरा अनुज एक रात के लिए ही सो जाये। नहीं तो इन्द्रजित की क्या औकात कि लक्ष्मण को शक्तिप्रहार करे? परंतु 'विनयपत्रिका' में इसका अद्भुत खुलासा कि इन्द्रजित काम है, साक्षात् काम; हमें प्रेरणा देने के लिए कहा है बाप! काम की इतनी ताकत है कि अतिशय जागृत मानव को मार तो नहीं सकता, पतन तो नहीं कर सकता, परंतु उसे थोड़ा झोंका तो खिला ही देता है। काम थोड़ा तो स्खलन करा देगा। लक्ष्मण जैसे आदमी को काम की शक्ति प्रहार करे और वो आदमी मूर्छित हो जाये इसका अर्थ यही करना चाहिए कि हमें जागृति का अहंकर न करना चाहिए साहब! ये बताने के लिए लक्ष्मण मूर्छित हैं। भगवान राम कहते हैं-

लछिमन कहाँ बूझ करुणाकर।।

भगवान ने पूछा कि सभी सैनिक सांझ पड़े शिबिर में वापस आ गये हैं पर अभी मेरा लक्ष्मण क्यों नहीं आया? भगवान ऐसे बैचैन हुए हैं! अभी लखन क्यों नहीं आया? लक्ष्मण कहां है? लक्ष्मण कहा है? और कोई जवाब नहीं दे सकता उसी समय हनुमानजी अपने दोनों हाथ में मूर्छित लक्ष्मण को राम के चरणों में रखते हैं। महाराज, इन्द्रजित की शक्ति ने लक्ष्मण के मूर्छित किया है! तुरंत जामवंत, मंत्रीमंडल, मार्गदर्शनमंडळ सब कुछ बगल में था। और जामवंत ने कहा, महाराज, लंका में सुषेण नाम का एक वैद्य हैं। उसे बुलाइये। कौन जाएगा? हनुमानजी मरीज को ले आये, वैद्य को ले आयेंगे। और हनुमानजी गये लंका में। रात्रि का समय था। हनुमानजी से लंका थोड़ी डरी हुई भी थी। हनुमानजी को हुआ, इसका दरवाजा खटखटाऊं और वैद्य जगे और मुझको देखकर भड़क जाये और शोर मचाने लगे उसकी पत्नी लड़के सब चीखपुकार करने लगे तो सभी सैनिक जग जायेंगे और रात्रि में कोई गुप्तचर आया है, मानकर कोई पकड़ लेगा! अभी मेरा बाप मूर्छा में है। गंभीर परिस्थिति है। इसलिए 'रामायण'कार ने कहा कि दरवाजा नहीं खटखटायाण पूरा मकान नींव से उठाकर हनुमानजी ले आये! 'भवन समेत।' और भवन यानी चार दीवाल और छत तक सीमित नहीं होता साहब! भवन उसे कहते हैं, जिसमें सद्गुणी स्त्री हो, आज्ञांकित बालक हो, आशीर्वादक माँ-बाप बैठे हों, सेवा होती हो; साधुसंत आये उन्हें आदर से भोजन दिया जाता हो और श्वान और गौग्रास निकलता हो उसे भवन कहेंगे। हनुमानजी पूरा भवन ले आये। इसलिए सुषेण ने कहा, महाराज, मुझे अकेले ही ले जाओ ये तो ठीक पर मेरी पत्नी-लड़कों को किस दिन दर्शन होंगे? मैं बहुत बार अपने दांत के डाक्टर को बुलाता हूं तो वे अपनी पत्नी-बच्चों को लेकर आते हैं! मैंने कहा, इनका क्या काम है? इन्हें तुम किस लिए ले आये? तो कहते हैं, इसी बहाने आपके पास आया जा सकता है इससे सबको लेकर आया हूं! दांत तो बहाना है!

शायरी तो फ़कत बहाना है।
अस्ल मक़सद तुझे रिझाना है।

इसलिए सुषेण ने कहा कि हम सब आये फिर वापस छोड़ जाना। रावण बहुत सबेरे जागता है उससे पहले छोड़ जाना। इन लड़कों को दर्शन हो जाये क्योंकि इस झपट में आने के बाद कोई बचनेवाला नहीं है! तुम फिर निकल जानेवाले हो सब पूरा होने के बाद। इसलिए पूरे घर को सपरिवार लाये हैं। ऐसा अर्थ होगा। भवन सहित आता है साहब! ठाकुर ने उसका सम्मान किया। हमारे अमुक संत तो ऐसा कहते हैं कि विभीषण की जरूरत ही नहीं थी। रामनाम पर्याप्त था लक्ष्मण की मूर्छा दूर करने में। और दूसरी बार लक्ष्मण मूर्छित हुए तब किसी वैद्य की जरूरत नहीं हुई। भगवान ने कहा-

तुम्ह कृतांत भच्छक सुर त्राता।।

भाई, तुम तो काल को खा जानेवाले हो। खड़े हो जाओ। और राम बोले, मूर्छा गायब हो गई। ये औषधि और ये वैद्य ये सब बहाने थे। बड़े आदमी दूसरे की विद्या का सदुपयोग करते हैं। राम को लगा, ये वैद्य लंका का सर्वश्रेष्ठ वैद्य, धन्वन्तरि को पछाड़ दे ऐसा वैद्य! ये वैद्य उसकी प्रेक्टिस ही नहीं चलती थी लंका में! क्योंकि कोई कुबूल ही नहीं करता कि हम रोगी हैं! इसलिए वो बेचारा बिलकुल प्रेक्टिकल बिना का बैठा हुआ था! भगवान को हुआ, इसकी विद्या का सदुपयोग होना चाहिए। और ये डोक्टर मेरे घर आकर मेरे ही भाई का इलाज करेगा तो उसकी प्रतिष्ठा बढ़ेगी। अब देखो, जामवंत ने कहा, लंका में सुषेण वैद्य है। हनुमानजी, आप ले आओ। सीधे हनुमानजी का ही नाम

लिया। ये काम आप करो। हनुमानजी उसको ले आये। लक्ष्मणजी की नाड़ीबाड़ी देखी और फिर तुरंत वैद्य ने भी कहा-

कहा नाम गिरि औषधी जाहु पवनसुत लेन।

ये गिरि, ये पहाड़, ये औषधि, औषधि का नाम; हनुमानजी तुम ही जाओ। सब के केन्द्र में हनमंततत्त्व पड़ा है। और कहा, सूर्योदय से पहले औषधि आ जानी चाहिए, नहीं तो मेरी बिधि सफल नहीं होगी। इतने योजन दूर द्रोणगिरि पर संजीवनी है तुम जाओ। फिर हनुमानजी जाते हैं। रावण को खबर पड़ी कि वैरी का भाई मूर्छित है मेरे पुत्र द्वारा। और मेरे ही गांव का डोक्टर उसका इलाज कर रहा है और उसने हनुमानजी को औषधि के लिए भेजा है। और सुबह होने से पहले यदि आ जाये तो वो जीवित हो जाएगा। ऐसा विघ्न डालूं कि सूर्योदय से पूर्व आ ही न सके। षडयंत्र रचा। उस समय 'रावनु कालनेमि गृह आवा।' रावण कालनेमि के घर गया। बोला, हनुमान औषधि लेने जा रहा है उसका मार्ग रोको। और कालनेमि ने पांच प्रकार का कपट शुरू किया।

एक तो वो कपटी है, कपट मुनि है। दूसरे बहुरूपिया है। अनेक मुखौटा रखता है। और तीसरे उसके पास कमंडल है, विशालता नहीं है। चौथे भविष्यकथन में खुद पारंगत हो ऐसी बातें करता है और स्वयं मायावी है। बालनेमि रावण का काम करने के लिए निकलता है। हनुमानजी यहां से निकलते हैं रणमैदान में से और कालनेमि रास्ते में आश्रम बनाकर मुनि का रूप लेकर बैठ गया। अब कथा ऐसी है कि हनुमानजी को प्यास लगी। हनुमानजी को प्यास लगे ऐसा मैं नहीं मानता। क्योंकि पूर्व प्रसंग ऐसा है कि सीताजी की खोज करने गये तब दक्षिण की यात्रा करने ये सभी रींछो और वानरों को भूख और प्यास लगी। हनुमानजी को नहीं लगी। वो तो पानी का निर्देश करने के लिए आगे बढ़ते हैं कि आओ, यहां पानी होना चाहिए। पक्षी उड़ रहे हैं अर्थात् पानी का संकेत है। हनुमानजी को प्यास न लगे पर परमात्मा की लीला है कि हनुमानजी को प्यास लगी। और हनुमानजी को पानी पीने की इच्छा हुई और उपर से जा रहे थे और आश्रम जानकर उतरे। कालनेमि बापू बैठे थे! बाबा शब्द मैं कम प्रयुक्त करता हूं! हनुमानजी उतरे और हनुमानजी ने आकर प्रणाम किया। और वो बहुत सिद्ध हो वैसे कहा-

होत महा रन रावन रामहिं।

'बच्चा, आओ, बैठो, अच्छी जगह तू आ गया! अपनी योगदृष्टि से मैं कह सकता हूं, अभी राम-रावण युद्ध चल रहा है। और हनुमानजी को प्रभावित करने के लिए उसने कहा, अंत में राम की ही विजय होगी। बच्चा, मेरी योगदृष्टि से मैं कह रहा हूं। आ, तुम योग्य जगह आ गया है। बैठ, मैं तुझे योग्य ज्ञान दूं।' 'बापू, मैं ज्ञान के लिए नहीं आया, पानी पीने आया हूं।' और प्यास लगी हो उसे पानी ही देना चाहिए। उसको ज्ञान का थोथा नहीं खोला जाना चाहिए साहब! 'मुझे प्यास लगी है, मुझको पानी पिलाओ।' एक तो मायावी है मायावी। उसने आश्रम रचा है। भविष्यवेत्ता का ढोंग करके ऐसा कहता है! युद्ध चल रहा है और भविष्य में ऐसा होगा ये नाटक किया। राक्षस होने के बावजूद कपट करके मुनि का वेश लिया है और चौथे 'मागा जल तेहिं दीन्ह कमंडल।' कमंडल दिया, ले पी ले। हनुमानजी विचार करते हैं कि कहीं इतने पानी से मेरी प्यास न बूझेगी। तुम मुझे पानी अधिक दो। मैं थोड़े जल से तृप्त नहीं होऊंगा। और बाप! कपटमुनि होता है वो हमें कमंडल का पानी ही बताता है। इसमें सिद्धि है, पानी में फूंक मारकर बोतल दे देगा! इससे तुम्हारा वायु दूर होगा! इससे तुम्हारी कफ दूर होगी। इससे तुम्हारा पित्त दूर होगा! ये पानी पीने से तुम्हारा केन्सर दूर हो जाएगा। ऐसा कुछ नहीं जाता। जिस वस्तु के लिए जो चीज निर्मित हुई है उसी मार्ग से जाना चाहिए। रामनाम औषधि है इसका अर्थ यह है कि डोक्टर बताये वो औषधि तुम लो परंतु रामनाम के साथ लो तो तुम्हें औषधि पच जाएगी। तुमको विपरीत असर नहीं होगा। आत्मबल बढ़ेगा और जितने समय में औषधि असर करती है उससे पहले असर करेगी। इसलिए रामनाम जोड़ता हूं। विश्वास की बात अलग है।

हाल ही में मैंने आंख का नंबर दिखाया। मुझको समय मिलता नहीं अपने लिए आंख दिखाने का! ये तो आपके समक्ष दिल खोलकर बात करता हूं। मुझको कहा बापू, आंख को पानी लगने न देना। मैंने कहा, डोक्टर साहब, आपने जैसा कहा वैसा ही करना होगा न साहब! न पानी लगने देंगे। मैंने कहा, कथा कहते-कहते कोई प्रसंग ऐसा आये और आंसू आये तो? मुझसे कहा, कितना रोना होगा? इसमें कोई माप है कितना रोना कि मैं आधा घंटा रोऊंगा या पौना घंटा रोऊंगा! अब मुझको कैसे जवाब देना? बोला, पच्चीस मिनट रोवो तो तकलीफ़ नहीं है! तो क्या हमने रोने का प्रोग्राम किया है? मेरे साथ थे उन सब को पता है, उसने मुझे ड्रोप दिया कि ये दवा डालना। मैंने

पहले गंगाजल डाला। आप सभी ऐसा मत करना हां! मैं तो विश्वास का आदमी हूं। और विश्वास में जो परिणाम आये उसे नाचते-नाचते स्वीकार करनेवाला इन्सान हूं। पर आप ऐसा धंधा मत करना। ड्रोप ही डालना। फिर तो मैंने पलकों पर भी गंगाजल लगाया। ये विश्वास का क्षेत्र है। इसमें सब नहीं पड़ते।

मुझे आपको कहना है ये कि फूंक मारकर पानी दे उसे पी जाओ, तुम्हारा ये रोग चला जाये! युवान तो कोई माननेवाले हैं नहीं। और युवान माने ये मैं होते भी नहीं दूंगा, क्योंकि युवानों को मैं चढ़ा रहा हूं! क्योंकि गलत मान्यताओं से बाहर निकलना चाहिए। यदि इससे ही ये वस्तु हो जाती तो ईश्वर औषधि का सर्जन नहीं करता। परमात्मा ओलरेडी किसी औषधि देता है इसका अर्थ कि आप उसका सदुपयोग कीजिए जानकार के द्वारा। 'बस, बेटा, कमंडल का पानी पी ले, जनम-जनम की तृषा खत्म हो जायेगी बच्चा!' कालनेमि कहता है। हनुमानजी जैसा सीखना, कहना कि हमें थोड़ा जल में 'ना अल्पे सुखम् अस्ति।' छांदोग्य उपनिषद। हमें थोड़े में संतोष नहीं। मेरे देश का ऋषि कहता है, हम को पूरेपूरा चाहिए। कबीर कहते हैं, 'मैं पूरा पाया।' हमें अल्प न चलेगा, पूरा चाहिए। हम भारतीयों को, अपनी पूर्व की प्रज्ञा को अल्प नहीं चलता साहब! हनुमानजी ने कहा, मुझे कमंडल के पानी से संतोष नहीं होगा। हां, छोटा-मोटा कोई चमत्कार दिखाये तो कहना चाहिए कि हम इसमें फंसनेवाले नहीं हैं। हमको पूरा चाहिए। ये हनुमंतकर्म है। ये हनुमान नाम का रूप है। इसलिए मूलतः तो ये बात कहनी है। इसलिए उसने कहा कि ये सरोवर है। तो बोले हां, सरोवर का पानी पीऊंगा, कमंडल का नहीं। बहुत कमंडल का पानी मत पीना। सरोवर में हनुमानजी पानी पीने जाते हैं और मगर थी। पूर्व काल की अप्सरा थी। शापित थी और हनुमानजी पानी पीने गये और उनका पैर मगरी की पूंछ पर पड़ता है। मगरी अकुलाई और दिव्य स्वरूप धारण करके कहा कि महाराज, आज मेरा उद्धार हो रहा है पर आप से प्रार्थना, ये महात्मा सही महात्मा नहीं है। आप का मार्ग रोकने आया है। प्रभु, इसलिए आप उसे सही महात्मा मत समझना।

हनुमानजी ने पानी पीया, स्नान किया। मगरी को गति मिली और हनुमानजी डकार लेकर आये और कहा, बैठ जा, पद्मासन लगा और कमर को सीधा रखो, गरदन ठीक रखो! तेरी नाक पर तेरी दो आंखें होनी चाहिए। श्वास धीमे-धीमे ले फिर रोक, फिर तेजी से बाहर निकाल! फिर से धीमे-धीमे ले। उसको तो लंबा करवाना था किसी तरह से। ये जो भ्रामक आदमी हैं न उन्हें हमें देर करवाना है। उन्हें हमको संजीवनी तक पहुंचने नहीं देना है। और ये संजीवनी है हरिनाम। संजीवनी परमात्मा का नाम है। अब हनुमानजी से क्या कहा कि पानीबानी पी लिया? बैठो, ज्ञान दूं। मेरे पास जो ज्ञान है, उड़ेल दूं। अब हनुमानजी क्या बोले कि बापजी, आप मुझे ज्ञान दीजिए और मेरा स्वभाव कैसा है कि मुझे इस्टन्ट असर होती है ज्ञान की। मुझे ज्ञान से रोमरोम में तुरंत असर होती है। और आप ज्ञान दे तथा मेरे रोमरोम में ज्यादा हो जाये, मैं बुद्धपुरुष हो जाऊं। मुझको गुरु और शिष्य का भेद न रहे। ऐसा हो जाये तो मुझ पर एक बड़ा ऋण हो जाएगा गुरुदक्षिणा का। पहले मैं दक्षिणा दूं और फिर अनुकूल हो तो ज्ञान दीजिएगा। कोई बात नहीं। और कमंडलवाले को पहले ही दक्षिणा ले लेनी है! उसको तो पहले ही दक्षिणा चाहिए, फिर तुम्हारा जो होना हो हो! 'पाछें हमहि मंत्र तुम्ह देहू।' पहले गुरुदक्षिणा ले लो। बाद में मुझे महामंत्र का दान करना गुरुजी! और साहब! उसकी कमर से पूंछ लपेटी और ऐसा पछाड़ा है!

कलियुग कालनेमि है। कपट निधान है। हम सब कपट कर रहे हैं। हम सब मायावी हैं! कभी इस रूप में कभी उस रूप में। हम सब मानो सब कुछ जानते हैं ऐसा बेकार की कोशिश करते हैं। ऐसा होगा, ऐसा होगा, ऐसा उच्चारण करने लगे हैं। हम सब कमंडलवाले हैं, नभ मंडलवाले नहीं है। और नभमंडल की यात्रा तो सवाबापा कहता है कि खेलना है तो छोटे-से जे. पी. पारेख ग्राउंड में मत खेल। गेंद-दंडा खेलना हो तो गगनगढ़ में खेलने आओ।

बाप! मुझे कहना है इतना ही कि कलियुग जिसमें हम सब, मैं और आप जी रहे हैं वो कालनेमि है। ऐसे अनेक लक्षण लेकर कलियुग का प्रभाव मेरे और आप के उपर है, ऐसे समय में ऐसे कलियुगरूपी कालनेमि के प्रभाव से मुझे और आप को कोई बचाता हो तो 'नाम सुमति समरथ हनुमानू।' नाम हनुमान है। दो शब्द प्रयुक्त किया है, सुमति और स्मरण। हनुमानजी के लिए विशेषण गीने जा सकते हैं कि हनुमानजी कैसे होंगे। सुमति; हनुमानजी कैसे? समरथ। संसार में समरथ बहुत होते हैं बाप! परंतु सुमति नहीं होते। रावण बहुत समरथ है पर सुमति नहीं है। इसीलिए तो कहा गया है-

सुमति कुमति सब कें उर रहहीं।
नाथ पुरान निगम अस कहहीं।
जहाँ सुमति तहँ संपति नाना।
जहाँ कुमति तहँ बिपति निदाना।।

समर्थ बहुत होंगे पर सुमति नहीं है। हनुमानजी सुमति भी हैं और समर्थ भी है। 'बुद्धिमतां वरिष्ठम्।' हनुमानजी के स्वरूप का स्मरण करते हुए ऐसा बोलें-

प्रभु समरथ सर्बग्य सिव सकल कला गुन धाम।
जोग ग्यान बैराग्य निधि प्रनत कलपतरु नाम।।

तो हनुमानजी सुमति भी हैं।

विद्यावान गुनि अति चातुर।
कुमति निवार सुमति के संगी।

परमात्मा का नाम हनुमानजी ऐसा है। हनुमानजी सुमति भी है और समर्थ भी हैं। इसका अर्थ ये हुआ कि परमात्मा का नाम समर्थ भी है और सुमति भी है। नाम महाराज सुमति भी है। नाम महाराज समर्थ भी है। और कलि प्रभाव से एक मात्र नामरूपी हनुमान, हनुमानरूपी नाम मुझको और तुमको मुक्त कर सकता है। तो तुलसी ने जो नाममहिमा लिखा है 'बालकांड' में उसमें एक पंक्ति ये है-

कालनेमि कलि कपट निधानू।
नाम सुमति समरथ हनुमानू।।

तो नाम हनुमान है। मेरे युवा भाई-बहन, आप नाम स्मरण करते हो, नाम संकीर्तन करते हो तब आप की जीभ नहीं हिलती, आपकी जीभ पर हनुमान क्रीडा कर रहे होते हैं। क्योंकि नाम ये हनुमान है। मैं और आप संसारी मानव हैं साहब! हम सब को कलिप्रभाव स्पर्श करता ही है। परंतु यदि नाम का आश्रय होगा तो कलिप्रभाव कालनेमि हमें परेशान नहीं कर सकता। और हम अपनी यात्रा आगे बढ़ा सकते हैं। और ये यात्रा बढ़ाकर केवल यश नहीं लेंगे अपितु एक ऐसी संजीवनी बूटी लायेंगे जो दूसरे को वापस होश में लायेगी। दूसरे को सचेत करेगी। दूसरे को जागृत करेगी। तो नाम की महिमा हनुमान बराबर है साहब! यह एक भरोसा रखना चाहिए। ऐसे नाम की महिमा इक्कीस वर्ष से चल रही है।

नाम का सामर्थ्य सुमति द्वारा सधाना चाहिए, कुमति द्वारा नहीं। नाटक नहीं, दिखावा करके नहीं। ऐसे नाम की महिमा अद्भुत है। चैतन्य महाप्रभु ने नाम की महिमा गायी। सभी चतुर लोगों का एक ही मत रहा है। कलि में केवल नाम। इसलिए बहुतों को जो मेहनतकश आदमी होते हैं न उन्हें सब कुछ करना है। उसे ध्यान करना है। उसे योग करना है। उसे समाधि तक पहुंचना है। ये सब प्रणम्य है। अच्छा है वो करे पर यदि सुमति आ जाये तो कुछ करने की जरूरत नहीं है। 'कलि केवल नाम आधारा।' कलि में केवल नाम आधार है। इसलिए नाम आया तो रूप आया। रूप आया मतलब उसकी पूरी कर्मलीला आ गई। और सब आ गया अर्थात् उसके धाम तक हम पहुंच जायेंगे। ऐसा परमात्मा के नाम की मंगल महिमा है। और तुलसी ने तो एक ही वस्तु लिखी है, 'एहि महँ रघुपति नाम उदारा।' पुनरुक्ति होगी। परंतु मुझे बार-बार इच्छा होती है कि ये सोनी महाराज की बाड़ी है वाघेश्वरी माता। में कथा थी और उन्होंने आशीर्वचन कहे। उन्होंने इतना ही कहा कि 'रामचरित मानस' में दूसरा कुछ नहीं है।

एहि महँ रघुपति नाम उदारा।

इसमें राम का नाम ही है। अंत में मुझे इतना कहने दीजिए कि वेदों का निचोड़ उपनिषद है। वेदों का सार, वेदों को निचोड़ डाले तो जो ज्यूस निकलता है वो सार अंश, सारांश जो प्रकट होता है वो उपनिषद है। और बारह उपनिषद वेदांत जगत बारह उपनिषद को मानता है, बाकी तो एक सौ आठ और अधिक जो हो वो उसे आप मिक्स्चर में डालकर उसका सारांश निकालो तो सार निकलता है 'रामचरित मानस।' और 'रामचरित मानस' का सारांश निकालो तो सारांश है 'सुन्दरकांड' और 'सुन्दरकांड' मिक्स्चर में डालकर उसका सारांश निकालो तो उसका सार है 'हनुमानचालीसा' और 'हनुमानचालीसा' को मिक्स्चर में डालकर सारांश निकालो तो आपको विश्वास आये या न आये वो आप जाते पर मोरारिबापू कहते हैं, उसका सार है 'रामनाम।' रामनाम आया यानी वेद तक छलांग लगती है! ग्रंथ अवलोकन नहीं करना पड़ता। वेद सेवा देने के लिए हाज़िर होता है साहब, नाम के प्रताप से! नाम बीज है। नाम महामंत्र है। नाम बीजमंत्र है। राम कलियुग का प्रधानमंत्र है। इसलिए रामनाम बोलता हूं। इसलिए फिर एक बार कहूंगा, कमंडल का पानी नहीं है ये याद रखना। मेरा राम बहुत विशाल है। वह प्रेम से मुक्त है। मेरा राम आकाश में न समाये वो राम है। मेरा राम पानी में न डूब सके वो है। मेरा राम राम है।

(अखंड रामधून के कार्यक्रम में महुवा (गुजरात) में प्रस्तुत वक्तव्य)

सांध्य-प्रस्तुति

॥ जय सीयाराम ॥